इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास

भारत
तथा
समस्त विश्व
खतरे मे

स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य

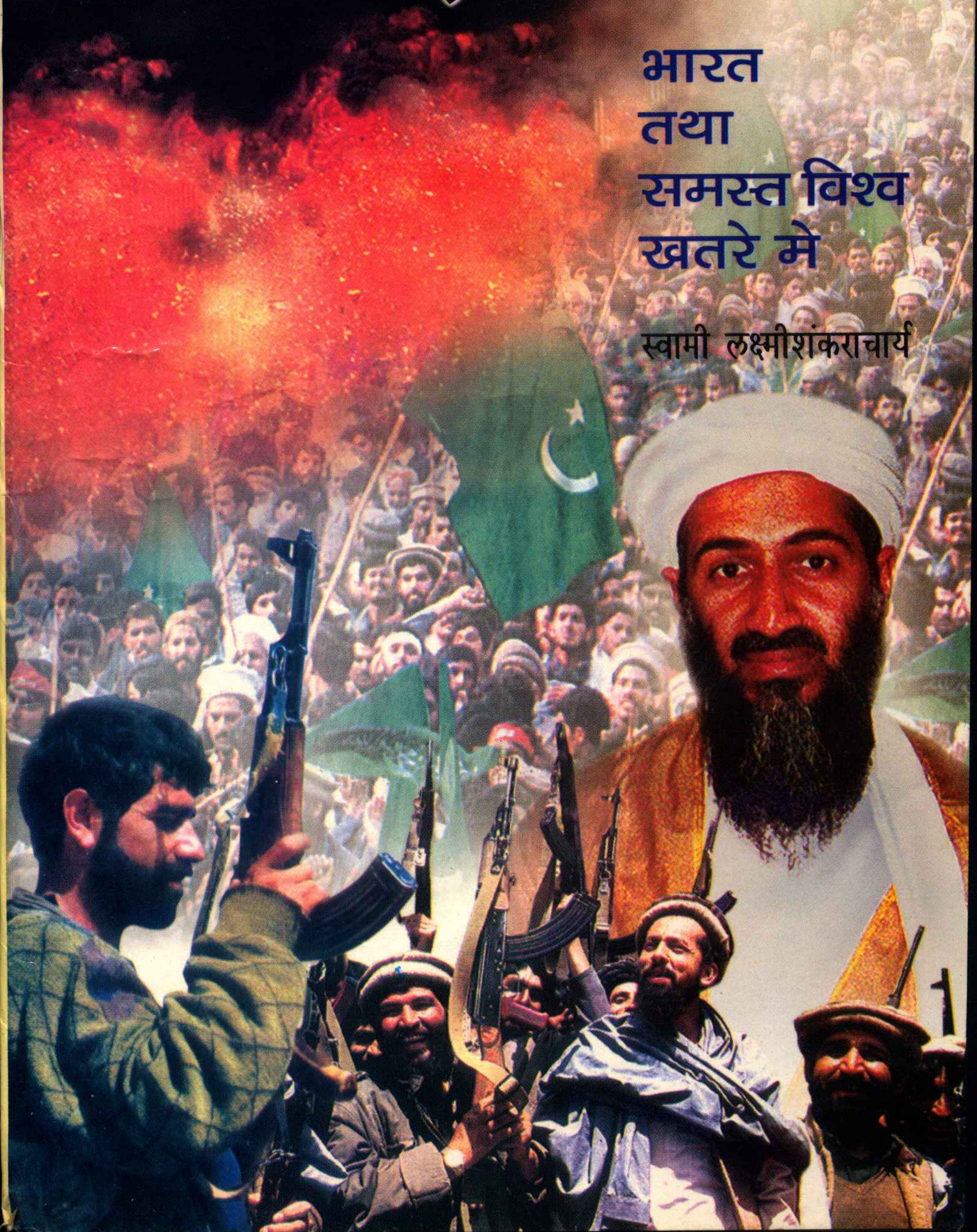

इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास

(भारत तथा समस्त विश्व खतरे में)

लेखक

स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य

अनुदान राशि : २०/- रुपये

विषयानुक्रमणिका

विषय		पेज सं०
१.	काफिर हिन्दुओं को अल्लाह की चेतावनी	५
२.	काफिर कौन हैं ?	६
३.	मक्का में स्थित काबा पहले मन्दिर था	६
४.	जिहाद किसे कहते हैं ?	६
५.	गाजी अथवा शहीद कौन ?	७
६.	मदरसों में काफिर हिन्दुओं के कातिल	७
७.	काफिर हिन्दू, मुसलमानों के खुले दुश्मन हैं	८
८.	काफिर हिन्दुओं के कत्ल का आदेश	९
९.	मुस्लिम आतंकवादी, इस्लाम के सच्चे सेवक हैं	९
१०.	कोई भी हिन्दू निर्दोष नहीं है	१०
११.	कुरआन का इतिहास में प्रभाव	११
१२.	क्या हैदर अली, टीपू सुल्तान आदि स्वतंत्रता सेनानी थे ?	१४
१३.	जब पाकिस्तान में हिन्दुओं के ऊपर प्रलय टूट पड़ी	१५
१४.	पाकिस्तान में बचे हिन्दू कहाँ गये ?	१६
१५.	भारतीय लोकतंत्र का अन्याय	१७
१६.	काफिर हिन्दुओं को लूटना पुण्य का कार्य	१८
१७.	धार्मिक उन्माद (अतिउत्साह) का मुकाबला केवल धार्मिक उन्माद से	२०
१८.	लूट के माल में हिन्दू औरतें भी	२०
१९.	क्या अकबर महान था ?	२३
२०.	मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ना धर्म का कार्य	२४
२१.	हिन्दू नौजवानों के साथ धोखा	२६
२२.	मुल्लावादी मुसलमानों का हिन्दुओं के साथ विश्वासघात	२७
२३.	पाकिस्तानी जासूसी संस्था आई०एस०आई० के कारनामे	२८
२४.	विश्वव्यापी मुस्लिम आतंकवाद	३१
२५.	माफिया सरगना दाऊद इब्राहीम द्वारा हिन्दुओं की लूट	३१
२६.	फिजी देश में हिन्दुओं की बर्बादी	३२
२७.	भारतीय तालिबान (स्टूडेन्ट्स इस्लामिक मूवमेन्ट ऑफ इंडिया)	३३
२८.	मुम्बई खतरे में	३५
२९.	जिहाद के लिये मुसलमानों को अल्लाह का आदेश	३६
३०.	हिन्दू-मुस्लिम दंगे क्यों होते हैं ?	३७
३१.	क्या भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश का महासंघ संभव है ?	३८
३२.	मीडिया का झूठा प्रचार	३९

३३.	भारत, मुस्लिम राष्ट्र बनने की ओर	४०
३४.	आश्चर्यजनक भविष्यवाणियाँ	४१
३५.	जिहाद करने वाले मुजाहिद को अल्लाह का इनाम	४५
३६.	अमेरिका, भारत के साथ कब तक ?	४५
३७.	हिन्दुओं का मूर्खतापूर्ण पलायनवाद	४६
३८.	जातिवादी हिन्दू आत्महत्या की ओर	४६
३९.	ऊँच-नीच और छुआ-छूत, वेद और गीता के विरुद्ध है	४७
४०.	इस्लाम में भाई-चारा केवल मुसलमानों के लिये	४८
४१.	जब हिन्दुओं के बचने के सभी रास्ते बन्द होंगे	४९
४२.	खतरे की जानकारी ही बचाव का प्रथम प्रयास है	५०
४३.	हिन्दू भ्रम में न पड़ें	५०
४४.	कब्र या मज़ार या दरगाह पूजा धर्म विरुद्ध है	५२
४५.	हिन्दुओं की मूर्खता	५३
४६.	हिन्दुओं की धार्मिक अनुशासनहीनता	५४
४७.	हिन्दू कायरता	५४
४८.	हिन्दू कायरता की जड़ कहाँ है ?	५६
४९.	संसार में हिन्दू, वीरता और साहस के सभी कीर्तिमान तोड़ सकते हैं	५७
५०.	हिन्दुओं की अदूरदर्शिता	५८
५१.	हिन्दुओं की आरक्षण की लड़ाई से कट्टर मुसलमान खुश	५९
५२.	जब हिन्दू कलेक्टर, एस० पी० निकाल बाहर किये जायेंगे	६०
५३.	इस देश में सारी खुराफात की जड़ नेहरू और उनकी कांग्रेस	६०
५४.	यदि डा० अम्बेडकर अथवा सरदार पटेल प्रधानमंत्री होते	६२
५५.	यदि अखण्ड भारत होता, तो भारत आज मुस्लिम राष्ट्र होता	६३
५६.	हिन्दुओं को जाति के नाम पर अल्लाह लड़ा रहा है	६४
५७.	दलित, महान् हिन्दू हैं	६५
५८.	हम, हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक हैं, लेकिन	६७
५९.	क्या दलित आर्य नहीं हैं ?	६७
६०.	राष्ट्रवादी मुसलमान क्या करें ?	६७
६१.	हिन्दू अपना बचाव क्यों न कर सके ?	६८
६२.	क्या सभी धर्मों का उद्देश्य एक ही है ?	६९
६३.	हिन्दुओं की विचित्र मानसिकता	७२
६४.	६० वर्ष का हिन्दू, असहाय बूढ़ा ?	७६
६५.	हिन्दू क्या करें ?	७६
६६.	हिन्दुओ ! उस खतरे से डरो, जिससे सब कुछ चला जायेगा	७९
६७.	विदेशों में बसे हिन्दुओं से अपील	८०

प्राक्कथन

आज विश्व में प्रतिवर्ष हिंसा, आतंकवाद, अत्याचार की लक्ष्मणरेखा टूटती जा रही है और मनुष्य हृदयहीन होता जा रहा है। इस हिंसा का उद्‌गम्‌स्थल कहाँ है ? इसकी खोज करते करते मेरा ध्यान कुछ हिंसक, कट्‌टरवादी इस्लामिक आतंकवादियों की गतिविधियों पर गया। अतः मैंने अनेक इतिहास की पुस्तकों जैसे काशी का इतिहास (लेखक-डॉ० मोतीचन्द्र), हिन्दू इतिहास : हारों की दास्तान (लेखक-डॉ० सुरेन्द्रकुमार शर्मा), द हिस्ट्री ऑफ इण्डिया एज टोल्ड बाई इट्‌स ओन हिस्टोरिअंस (लेखक-सर एच०एच० इलियट तथा जॉन डाउसन), भारत का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास (लेखक-त्रिनेत्र पाण्डेय), धार्मिक पुस्तकें जैसे-कुरआन मजीद, बुखारी शरीफ का अध्ययन कर उनसे आवश्यक जानकारी लेकर और हिन्दी तथा अंग्रेजी के विभिन्न दैनिक समाचार पत्रों व पत्रिकाओं तथा इण्डिया टुडे आदि की खबरों को एकत्रित कर इस विषय की जड़ में जाने का प्रयास किया। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि संसार में एक बड़ा भारी खतरा पनप रहा है। जिसकी चर्चा करना साम्प्रदायिक माना जाता है। अतः देश के अधिकांश समाचारपत्र और राजनीतिक दल उस खतरे पर पर्दा डाल रहे हैं और सत्य को छिपा रहे हैं अथवा तोड़ मरोड़ कर पेश कर रहे हैं। जिस कारण भविष्य में हिन्दुस्तान में गृह युद्ध पनप सकता है जिसमें करोड़ों निर्दोष लोग मारे जायेंगे। यह खतरा बड़ी तेजी से हिन्दुओं की तरफ चला आ रहा है। कुछ सालों बाद ही यह हिन्दुओं पर प्रलय की तरह टूट पड़ेगा। भविष्य में आ रहे इस खतरे से सब का बचाव तभी होगा, जब भारत में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्रान्ति हो। इस सम्पूर्ण क्रान्ति के लिये ही परमपिता परमेश्वर की प्रेरणा से मैंने यह पुस्तक लिखी है। पुस्तक को आरम्भ से लेकर अन्त तक धैर्य पूर्वक पढ़ो। पुस्तक का कोई भी अंश छोड़ो नहीं, और न ही जल्दबाजी में पढ़ो, नहीं तो मेरी बात तुम्हारी समझ में न आ पायेगी। मैंने इस पुस्तक में भारत के हजार वर्ष के इतिहास का विशेष हवाला दिया है। क्योंकि भारत की अपार सम्पत्ति को लूट कर ही विश्व में साम्राज्यवादी इस्लामिक आतंकवाद की शक्ति बढ़ी थी। आज भारत, अमेरिका तथा अन्य यूरोपीय देशों द्वारा मुस्लिम तुष्टीकरण के कारण ही विश्व में इतना इस्लामी आतंकवाद बढ़ा। जिसके कारण आज सारी दुनियाँ अशान्त है! इसके लिये भारत की विश्वबन्धुत्व व सर्वधर्मसम्भाव से उत्पन्न अतिसहनशीलता (अतिसहिष्णुता) भी काफी हद तक दोषी है। आज भारत में इस आतंकवाद की वृद्धि तथाकथित सेक्युलर (धर्मनिरपेक्ष) कहलाने वाले नेताओं के कारनामों से हुई है। इस पुस्तक का उद्‌देश्य विश्व को चेतावनी देना है कि समय रहते सब लोग चेत जायँ, ताकि करोड़ो निर्दोष लोग कत्लेआम से बच सकें।

स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य

गुरुवार, ९ नवम्बर, सन् २०००

आज इस देश में सत्य लिखने की और सत्य बोलने की हिम्मत समाप्त हो रही है। झूठा इतिहास लिखकर नयी पीढ़ी को धोखा दिया जा रहा है। नकली धर्मनिरपेक्षतावादी नेता मीठी मीठी और ऊँचे आदर्शों वाली झूठी बातें कहकर जनता को धोखे में डाल रहे हैं। इसीलिये ईश्वर ने मुझे प्रेरणा दी है कि मैं देश के सामने सच्चाई रखकर जनता की आखें खोल दूँ, क्योंकि अब केवल सत्य ही इस देश को बचा सकता है। अगर मैं यह सत्य आपके सामने न रखूँगा, तो आप सबके असावधान और अंधकार में रहने के कारण इस देश में गृहयुद्ध हो जायेगा। जिसमें करोड़ों लोगों की जानें चली जायेंगी। मैं जो लिख रहा हूँ, वह आप तथा आपकी संतानों की सुरक्षा व भलाई के लिये है। इस देश में शान्ति स्थापित करने के लिये है, इसलिये इसे सावधान होकर पढ़ें।

जिस तेजी से भारत में मुसलमानों की आबादी बढ़ रही है, उससे आज भारत दुनियाँ में मुसलमानों की सबसे अधिक आबादी वाला देश हो गया है। मुसलमानों की तेजी से बढ़ती आबादी के कारण शीघ्र ही देश में मुसलमानों की जनसंख्या हिन्दुओं के बराबर होगी। नवम्बर, १९९५ में भारत के प्रधानमंत्री नरसिंहा राव की ओर से टेलीवीजन पर समाचार प्रसारित हुआ कि भारत के जिन ४५ जिलों में मुसलमान बहुसंख्यक हैं, उन ४५ जिलों में मुसलमानों को फायदा पहुँचाने वाले काम शुरू किये जायेंगे। मुसलमान आज ४५ जिलों में हिन्दुओं से अधिक हो गये हैं। पर वह दिन भी दूर नहीं जब पूरे देश में उनकी संख्या हिन्दुओं के बराबर होगी। फिर वह अपनी एकता के बल पर तथा हिन्दुओं की जाति, भाषा, प्रान्त और अनेक धार्मिक मतों के नाम पर आपसी फूट के कारण चुनाव जीत कर इस देश में फिर से राज करने लगेंगे।

सारी दुनियाँ गवाह है कि मुसलमान जिस देश में राज पाते हैं, वहाँ सबसे पहले दूसरे धर्म को खत्म करने व मुसलमानी धर्म इस्लाम को फैलाने का काम कट्टरता से शुरू करते हैं। जिस दिन वह इस देश में राज पायेंगे, उसके बाद मुसलमानों के हाथों हिन्दू कुचल दिये जायेंगे। वैसे भी इस देश में सन् ७१२ से लेकर ११९२ तक लगभग ४८० वर्ष मुसलमानी हमलावरों तथा ११९२ में मुहम्मद गोरी द्वारा दिल्ली का बादशाह बनने के बाद से अठारहवीं शताब्दी तक लगभग ५५० साल मुसलमान बादशाहों के हाथों हिन्दू मारे, काटे, लूटे व अपमानित किये जाते रहे थे।

काफिर हिन्दुओं को अल्लाह की चेतावनी

मुसलमानों के धर्म इस्लाम का मानना है कि अल्लाह ने पैगम्बर मुहम्मद साहब के माध्यम से एक किताब आसमान से भेजी, जिसका नाम कुरआन है। कुरआन में अल्लाह ने मुसलमानों के लिये आदेश भेजे हैं कि उन्हें क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये तथा काफिरों के लिये चेतावनी भेजी है कि वह बहुदेववाद अथवा मूर्तिपूजा अर्थात बुतपरस्ती छोड़ कर मुसलमान बन जायें, नहीं तो उनको भयानक कष्टों और अपमानों को झेलना पड़ेगा। अल्लाह काफिरों को

यह कष्ट तथा अपमान पहले मुसलमानों को हाथों से दिलवायेगा। कुरआन में अल्लाह के आदेश हैं कि यह काफिर या तो मुसलमान बना लिये जायँ अथवा मार डाले जायँ। लेकिन जो किसी कारणवश जिन्दा बच जायँ, तो उनकी जान बचाने के बदले उनसे जिज़या कर वसूल किया जाय, उन्हें हर प्रकार से कुचलकर रखा जाय और अपमानित कर कष्ट दिये जायँ। कुरआन में अल्लाह के यह आदेश आयतों के रूप में समय-समय पर मुहम्मद साहब के माध्यम से उतरते रहे। मुसलमानों की एक ही धार्मिक पुस्तक कुरआन है, जिसमें उपदेश न होकर, अल्लाह के आदेश हैं। जिनकी मुसलमानों द्वारा अवहेलना नहीं की जा सकती। इस्लाम का अर्थ ही है 'अल्लाह के आदेशों के सामने आत्मसमर्पण'।

काफिर कौन हैं ?

इससे पहले कि हम यह बतायें कि कुरआन में अल्लाह के यह आदेश क्या हैं ? सबसे पहले जान लीजिये कि काफिर का मतलब क्या है? अल्लाह के अलावा किसी अन्य देवी, देवता की साकार या निराकार पूजा करने वाले, मनुष्य, गुरू अथवा ग्रन्थ पूजा करने वाले, अवतारों और पुनर्जन्म को मानने वाले लोग, काफिर हैं। इस प्रकार इस देश में सनातन धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म तथा पारसी धर्म को मानने वाले सभी लोग, काफिर हैं। इन्हें मुन्किर और मुश्रिक भी कहते हैं। ये खुदा के खिलाफ बागी हैं, खुदा के दुश्मन हैं। एक ही अल्लाह की भेजी हुई किताबें तौरात, इंजील और कुरआन को मानने वाले यहूदी, ईसाई और मुसलमान आपस में किताबिया भाई कहलाते हैं। लेकिन कुरआन में अल्लाह की आयतों पर विश्वास करने से इन्कार करने वाले ईसाई और यहूदी लोग, भी काफिरों की तरह मुन्किर (इन्कारी) कहलाते हैं। मुसलमानों के साथ कपट करने वाले को मुनाफ़िक (कपटाचारी) कहा जाता है।

मक्का में स्थित काबा पहले मन्दिर था

दुनियाँ भर के मुसलमानों के लिये सबसे पवित्र स्थान मक्का में स्थित काबा, जहाँ मुसलमान हज करने जाते हैं, पहले काफिरों का मन्दिर था। जिसमें ३६० बुतों अर्थात मूर्तियों की पूजा होती थी। अल्लाह के आदेश से पैगम्बर मुहम्मद साहब के नेतृत्व में जिहाद करके काबा से उन मूर्तियों तथा मूर्तिपूजक काफिरों का सफाया कर दिया गया। वह मूर्तिपूजक काफिर या तो तौबा (प्रायश्चित) करके मुसलमान बन गये अथवा कत्ल कर दिये गये।

जिहाद किसे कहते हैं ?

काफिरों का राज (शासन) समाप्त करके, मुसलमानों का राज (शासन) स्थापित करने अर्थात् अल्लाह की हुकूमत कायम करने के लिये, काफिरों का कत्ल करने अथवा उनको जबरजस्ती मुसलमान बनाने के लिये अर्थात् काफिर और काफिरों की संस्कृति (कुफ्र या शिर्क) को समाप्त करने के लिये हथियार उठा कर मुसलमानों का सामूहिक रूप से निकल पड़ना, जिहाद अर्थात अल्लाह के लिये युद्ध है। जैसे कश्मीर में आजकल जिहाद चल रहा है। जो मुसलमान इसमें शामिल

होता है वह मुजाहिद कहलाता है। कुरआन में अल्लाह के आदेशानुसार मुसलमानों के धर्म इस्लाम का अन्तिम उद्देश्य दुनियाँ से काफिरों को खत्म करना है और जहाँ भी काफिरों का राज्य (दारूलहरब) हो, वहाँ पर मुसलमानों का राज्य (दारूलइस्लाम) स्थापित करना है। यह अल्लाह अर्थात ईश्वर के लिये किया गया कार्य है।

गाजी अथवा शहीद कौन ?

जिहाद में शामिल होने वाला मुजाहिद यदि कम से कम एक काफिर को मार डाले, तो वह गाजी बन जाता है। लेकिन यदि जिहाद करने वाला मुजाहिद खुद काफिरों के हाथों मारा जाय, तो वह शहीद कहलाता है। ऐसे मुसलमान सभी मुसलमानों में श्रेष्ठ हैं। अल्लाह ऐसे मुसलमानों से अन्य मुसलमानों की अपेक्षा अधिक प्रेम करता है।

मदरसों में काफिर हिन्दुओं के कातिल

मुसलमानों के समाज में बच्चों को सबसे पहले धार्मिक स्कूल मदरसा में भेजा जाता है, जहाँ उन्हें कुरआन पढ़ाई जाती है। इस तरह उनके बच्चों को मरदसों में ही सिखला दिया जाता है कि कुरआन में अल्लाह के आदेश हैं कि काफिर लोग, मुसलमानों के खुले दुश्मन हैं। इन नापाक (अपवित्र) काफिरों के विरुद्ध लड़ना ही अल्लाह के लिये लड़ना (जिहाद) है। जो हर मुसलमान का धार्मिक कर्त्तव्य है और यह सबसे बड़ा पुण्य का कार्य है। शिर्क करने वाले (अर्थात् अलग-अलग कई ईश्वर को मानने वाले) इन काफिरों को अपमानित करना, उनका कत्ल कर देना अथवा उनको दहशत में डाल कर मुसलमान बना लेना, इस्लाम की सेवा है। इन्हीं आदेशों में से कुछ आदेश जिन्हें आयत कहते हैं, मैं आगे दे रहा हूँ। मैंने इन आयतों को महमूद एण्ड कम्पनी, मरोल पाइप लाइन, मुम्बई ५९ तथा फरीद बुक डिपो प्रा० लि०, ४२२, मटियामहल, उर्दू मार्केट, जामा मस्जिद, दिल्ली-६ द्वारा अलग-अलग प्रकाशित कुरआन मजीद से लिया है। जिसका अरबी से हिन्दी अनुवाद क्रमशः हज़रत मौलाना फतेह मोहम्मद खाँ साहिब जालन्धरी व हज़रत मौलाना अब्दुल करीम पारेख साहब ने किया है।

कुरआन मजीद के यह दोनों अनुवाद देवनागरी लिपि में है। लेकिन अधिकांश शब्द कठिन उर्दू के होने के कारण समझने में कठिनाई हो सकती है। इसलिये कुरआन मजीद की आयतों के इन दोनों अनुवादों में, जो अधिक समझने लायक है। मैंने उसी अनुवाद को लेकर उसके आगे अनुवादक का नाम तथा पेज नं० दे दिया है। जैसे कुरआन मजीद, अनुवादक-मौलाना फतेह मोहम्मद खाँ साहिब जालन्धरी, प्रकाशक-महमूद एण्ड कम्पनी मरोल पाइप लाइन मुम्बई ५९ के लिये संक्षेप में -(अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०) तथा कुरआन मजीद, अनुवादक-हजरत मौलाना अब्दुल करीम पारेख साहब, प्रकाशक-फरीद बुक डिपो प्रा० लि०, दिल्ली-६ के लिये संक्षेप में (अनुवादक-ह० मौ० अ० क० पा० सा०) लिखा है।

ध्यान रहे कि कुरआन मजीद के यह हिन्दी अनुवाद कोई आलोचनात्मक पुस्तकें नहीं हैं। यह हिन्दी जानने वालों, किन्तु अरबी का ज्ञान न रखने वालों के लिये प्रसिद्ध इस्लामी विद्वान हज़रत मौलाना फतेह मोहम्मद खाँ साहब जालन्धरी व हजरत मौलाना अब्दुल करीम पारेख साहब का अन्य प्रसिद्ध मौलानाओं के सहयोग से पवित्र कुरआन का केवल हिन्दी अनुवाद है। मुसलमान कुरआन के आदेशों को खुलकर कह देगा, चाहे वह दूसरे धर्म वालों के खिलाफ ही क्यों न हों अथवा उन्हें बुरे ही क्यों न लगें। कुरआन में अल्लाह का ऐसा ही आदेश है।

काफिर हिन्दू, मुसलमानों के खुले दुश्मन हैं

कुरआन मजीद में पारः५, सूरः४ की १०१वीं आयत में मुसलमानों के लिये अल्लाह का आदेश है कि बेशक काफिर तुम्हारे खुले दुश्मन हैं। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-१४७) पारः५, सूरः४ की १४४वीं आयत में है कि ऐ अह्लेईमान ! मोमिनों (मुसलमानों) के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाओ, क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर खुदा का खुला इल्ज़ाम लो ? (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-१५७)।

पारः १०, सूरः ९ की २३वीं आयत में आदेश है कि ऐ ईमानवालो ! अगर तुम्हारे (माँ) बाप और (बहन) भाई, ईमान के मुकाबले में कुफ़्र को पसन्द करें तो उनसे दोस्ती न रखो और जो उनसे दोस्ती रखेंगे, वे ज़ालिम हैं। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-२९९) अर्थात् ऐ मुसलमानों ! अगर तुम्हारे (माँ) बाप और (बहन) भाई मुसलमान बनने की जगह काफिर बने रहना पसन्द करें, तो तुम उनसे दोस्ती न रखो और जो मुसलमान अपने ऐसे (माँ) बाप और (बहन) भाई से दोस्ती रखेंगे, वे ज़ालिम (अत्याचारी) हैं। पारः११, सूरः९ की १२३वीं आयत में मुसलमानों के लिये अल्लाह का आदेश है कि अपने नज़दीक के रहने वाले काफिरों से लड़ो और चाहिये कि वह तुम में सख़्ती मालूम करें (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-३२५)

ऊपर की आयतें मुसलमानो को आदेश दे रहीं हैं कि वे अपने दुश्मन काफिर हिन्दुओं से दोस्ती न रखें। मुसलमान इस देश में बारह सौ सालों से रह रहे हैं। कुरआन मजीद के इन्हीं आदेशों के कारण इस देश के मुल्लावादी मुसलमानों ने हिन्दुओं से कभी प्रेम नहीं रखा। वे मौका पाते ही हिन्दुओं को मारते-काटते लूटते रहे तथा हिन्दुओं से सदैव दुश्मन जैसा व्यवहार करते रहे। इस देश के नेता जिस हिन्दू-मुस्लिम एकता की बातें करते हैं, वह हिन्दू-मुस्लिम एकता इस देश में न कभी रही है और न कभी होगी। जहाँ मुसलमानों की संख्या हिन्दुओं से काफी कम है, वहाँ हिन्दुओं के साथ शान्ति बनाये रखने के लिये मुल्लावादी मुसलमान मजबूर हैं। लेकिन जिन स्थानों पर मुसलमान २० से ३० प्रतिशत होकर शक्तिशाली हो जाते हैं, वहाँ पर वह हिन्दुओं पर रोब डालना वा गुर्राना शुरू कर देते हैं।

काफिर हिन्दुओं के कत्ल का आदेश

कुरआन मजीद में पारः ४, सूरः ३ की १५२वीं आयत में है कि- और खुदा ने अपना वायदा सच्चा कर दिया (यानी) उस वक़्त जब कि तुम काफिरों को उसके हुक्म से कत्ल कर रहे थे (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-१०७)

पारः ९, सूरः ८ की १२वीं आयत में मुसलमानों के लिये अल्लाह का आदेश है कि- मैं काफिरों के दिल में दहशत डाल दूँगा, फिर तुम उनकी गरदने मारकर सर उड़ा दो और उनके बदन के एक एक जोड़ को चोट लगाकर उनके शरीर को तोड़ फोड़ कर डालो। (अनुवादक-ह० मौ० अ० क० पा० सा०, पेज नं०-१७९)

पारः १०, सूरः ९ की ५वीं आयत में है कि- जब इज़्ज़त के महीने गुजर जायें, तो मुश्रिकों को जहाँ पाओ, कत्ल कर दो और पकड़ लो और घेर लो और हर घात की जगह पर उनकी ताक में बैठे रहो, फिर अगर वे तौबा कर लें और नमाज़ पढ़ने ज़कात देने लगें, तो उनकी राह छोड़ दो। बेशक खुदा बख़्सने वाला मेहरबान है। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-२९५)

अर्थात् जब इज़्ज़त के चार महीने निकल जायें, तो बाकी आठ महीनों में काफिरों को जहाँ कहीं पा जाओ उनका कत्ल कर दो। उनको पकड़ लो और घेर लो और हर, ऐसी जगह घात लगाकर बैठो, जहाँ उनके मिलने की सम्भावना हो। लेकिन यदि वे देवी-देवताओं की साकार या निराकार पूजा, गुरूओं के आदेश मानना छोड़कर अपने पापों का प्रायश्चित कर लें और नमाज़ पढ़ने तथा ज़कात देने लगें अर्थात् मुसलमान बन जायें, तो उन्हें छोड़ दो, निःसंदेह खुदा क्षमा करने वाला और दयालु है।

नोट : इज़्ज़त के महीने वर्ष में चार होते हैं, वे हैं-जीक़ादा, ज़िलहिज्जा, मोहर्रम और रजब। इन महीनों में मुसलमानों को आदेश है कि लड़ाई तब तक नहीं करो जब तक कि कोई तुम्हें न छेड़े, बाकी रमजान सहित आठ महीने जिहाद (युद्ध) के महीने हैं।

मुस्लिम आतंकवादी, इस्लाम के सच्चे सेवक हैं

ध्यान रहे रमजान के महीने में ही मुस्लिम माफ़िया सरगना दाऊद इब्राहीम गिरोह द्वारा मुम्बई में बम विस्फोट करा कर सैकड़ों काफिर हिन्दुओं को मार डाला गया। क्योंकि यह जिहाद अर्थात् काफिरों के विरुद्ध हल्ला बोलने का महीना है। जबकि कुरआन की जानकारी न होने के कारण सभी अखबारों में सम्पादकीय लिखा जा रहा था कि इस पवित्र महीने में मुसलमान ऐसा नहीं कर सकते। जब मुस्लिम आतंकवादी काठमांडू नेपाल से भारतीय हवाई जहाज का अपहरण कर कान्धार (अफगानिस्तान) ले गये थे, तब भारतीय वार्ताकार दल के श्री विवेक काटजू और श्री अनिल डोभाल, अपहरणकर्त्ता मुस्लिम आतंकवादियों को समझा रहे थे कि ''निर्दोष यात्रियों को बन्धक बनाना इस्लाम के विरुद्ध है।'' जिस पर मुस्लिम आतंकवादियों ने जवाब दिया था कि ''तुम हमें इस्लाम न पढ़ाओ।'' (देखें इंडिया टुडे १९ जनवरी २०००) १ अगस्त, २००० को जब अमरनाथ यात्रा में शामिल

लगभग १०० से अधिक निर्दोष यात्रियों को मुस्लिम आतंकवादियों ने गोलियों से भून दिया। उस समय समाचार पत्रों में कई लोगों के लेख छपे कि हत्यारों ने इस्लाम और हज़रत मुहम्मद की शिक्षाओं को बदनाम किया।

लेकिन वास्तविकता यह है कि भारतीय वार्ताकारों द्वारा बताया गया इस्लाम अथवा समाचार पत्रों का इस्लाम वास्तविक इस्लाम नहीं है। शायद वह इस्लाम को जानते नहीं अथवा जानबूझकर गलत ढंग से उसकी व्याख्या करते हैं। शुद्ध इस्लाम वही है, जो आतंकवादी कर रहे हैं। क्योंकि काफिर और कुफ्र का सफाया करना ही इस्लाम का प्रथम और अंतिम उद्देश्य है। जिहाद ही इस्लाम की ऊर्जा है। आज के मुस्लिम आतंकवादी बचपन से ही मदरसों में कुरआन का गहन अध्ययन कर कुरआन के आदेशानुसार काफिर हिन्दुओं के सफाये के लिये जिस जिहाद को चला रहे हैं। वह कुरआन की परिभाषा के अनुसार अल्लाह के लिये किया गया पवित्रतम और विशुद्ध धार्मिक कार्य है और यही इस्लाम है। अर्थात् अल्लाह के आदेशों (जो कुरआन में हैं) के सामने आत्मसमर्पण।

निर्दोष हिन्दुओं (लेकिन इस्लाम के अनुसार शिर्क करने अर्थात् एक अल्लाह के स्थान पर अलग-अलग कई ईश्वरों को मानने के कारण काफिर हिन्दू संसार के सबसे बड़े दोषी हैं। जिन) की हत्या करने वाले मुसलमान आतंकवादी, इस्लाम के सिद्धान्तों के अनुसार आतंकवादी न होकर, इस्लाम के सबसे बड़े सेवक हैं। जो अल्लाह का ही कार्य कर रहे हैं। जिहाद में काफिरों का कत्ल करने वाले मुसलमानों से कुरआन के पारः९, सूरः८ की १७वीं आयत में अल्लाह ने कहा है कि तुम लोगों ने उन (कुफ्फार) का कत्ल नहीं किया, बल्कि खुदा ने उन्हें कत्ल किया (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-२८१) (और देखिये इसी पुस्तक में 'जिहाद के लिये मुसलमानों को अल्लाह का आदेश') लगभग प्रत्येक मुसलमान इस्लाम के इस उद्देश्य को जानता है। लेकिन कुछ हिन्दू लेखक उनके इस उद्देश्य की अपनी तरफ से अलग व्याख्या कर लीपापोती करते रहते हैं। उनकी इस प्रकार की गलत व्याख्या से केवल हिन्दू ही भ्रम में पड़ जाते हैं।

यह लोग मुस्लिम आतंकवादियों के लिये लिखते हैं कि ''इन आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता'' जबकि सच्चाई यह है कि काफिरों का सफाया करने वाले मुसलमान आतंकवादी, इस्लाम के अनुसार श्रेष्ठ और सच्चे मुसलमान हैं, गाजी हैं। जिनका फिरदौस (श्रेष्ठ स्वर्ग) में इन्तजार हो रहा है।

कोई भी हिन्दू निर्दोष नहीं हैं

इस्लाम की नजर में कोई भी हिन्दू निर्दोष नहीं है। उनका सबसे बड़ा दोष यही है कि वह काफिर हैं। काफिरों के लिये दो ही रास्ते हैं कि वह या तो मुसलमान बना लिये जायँ अथवा मार डाले जायँ। क्योंकि वे खुदा के खिलाफ बागी हैं और संसार के सबसे बड़े पापी तथा गुनहगार हैं। एक अल्लाह पर, कुरआन की आयतों पर तथा अन्तिम पैगम्बर मुहम्मद पर ईमान (विश्वास) न लाने के कारण ये संसार के सबसे बड़े अन्यायी और अत्याचारी (जालिम) हैं।

इसीलिये कुरआन मजीद में पारः २६, सूरः ४७ की चौथी आयत में मुसलमानों के लिये अल्लाह का आदेश है कि- जब तुम काफिरों से भिड़ जाओ, तो उन की गरदनें उड़ा दो, यहाँ तक कि जब उन को खूब कत्ल कर चुको तो (जो ज़िन्दा पकड़े जायें, उन को) मज़बूती से क़ैद कर लो, फिर इसके बाद या तो एहसान रख कर छोड़ देना चाहिये या कुछ माल लेकर (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-८०७)।

पारः १०, सूरः ९ की १४वीं आयत में है कि- उनसे (खूब) लड़ो। खुदा उन को तुम्हारे हाथों से अज़ाब में डालेगा और रुसवा करेगा और तुम को उन पर ग़लबा देगा (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-२९७) अर्थात् ऐ मुसलमानों ! काफिरों से (खूब) लड़ो खुदा उन (काफिरों) को तुम्हारे हाथों से नरक जैसे कष्ट देगा और अपमानित करेगा और तुम (मुसलमानों) को उन पर विजय देगा।

कुरआन का इतिहास में प्रभाव

कुरआन मजीद में अल्लाह के इन्हीं आदेशों को मानकर मोहम्मद बिन क़ासिम ने सन् ७१२ में सिंध के राजा दाहिर को हराने के बाद उसकी हत्या कर दी और पूरे सिंध में १७ साल के ऊपर के सभी हिन्दू काट डाले अथवा मुसलमान बना लिये। इन्हीं आदेशों से प्रेरित होकर महमूद गजनवी ने इस देश पर १७ बार हमला किया और लाखों हिन्दुओं को काटा। सोमनाथ मंदिर को लूटते और तोड़ते समय महमूद गजनवी ने ५००००० हिन्दुओं की हत्या की। सन् १०२६ में जब महमूद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर पर हमला किया तब का हाल इतिहासकार इब्नअसीर लिखता है कि ''जब महमूद के सैनिक मन्दिर का फाटक तोड़ कर अन्दर घुसे तो वहाँ पर सैकड़ों पुजारी मूर्ति के सामने रो रहे थे और अपनी तथा मन्दिर की रक्षा के लिये प्रार्थना कर रहे थे। वे सभी मूर्ति के सामने ही काट डाले गये। सोने और हीरा जवाहरातों से ढँके हुए शिवलिंग को तोड़ दिया गया। जब मन्दिर के टूटने की खबर सोमनाथ शहर में पहुँची, तो शहर के हिन्दू, समूहों में पति-पत्नी गाँठ जोड़कर रोते हुए आते तथा मन्दिर में महमूद के सैनिकों के हाथों काटे जाते रहे। इस भयानक मार काट से सारा शहर सोमनाथ वीरान हो गया।''

सन् ११९२ में मोहम्मद शहाबुद्दीन गोरी ने तराइन के मैदान में पृथ्वीराज चौहान को हरा कर, बाद में पृथ्वीराज की हत्या कर दी। मुसलमान सैनिकों ने दिल्ली में हिन्दुओं को खूब लूटा, मारा-काटा। बाद में कन्नौज का राजा जयचन्द्र जिसने मोहम्मद गोरी का साथ दिया था, वह भी गोरी से पराजित होकर मारा गया। मोहम्मद गोरी की अगुआई में मुसलमानों ने कन्नौज से लेकर बनारस तक को लूटा और साथ-साथ हिन्दुओं का कत्लेआम किया। राजा जयचन्द्र की एक पत्नी सुहागदेवी ने मोहम्मद गोरी का साथ दिया था, बदले में गोरी ने सुहागदेवी से वायदा किया था कि युद्ध जीतने के बाद वह उसके पुत्र को कन्नौज का राजा बना देगा। जब मोहम्मद गोरी, जयचन्द्र का राज्य कन्नौज जीतकर हिन्दुओं को मारता काटता लूटता बनारस पहुँचा, तो शहर के फाटक पर अपने पुत्र के साथ

सुहागदेवी ने मोहम्मद गोरी का स्वागत करते हुए अपना परिचय दिया। गोरी ने सुहागदेवी को कैद कर लिया और उसके पुत्र को राजा बनाने के स्थान पर मुसलमान बना लिया। मोहम्मद गोरी के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, बलबन, अलाउद्दीन खिलजी, फिरोज तुग़लक, सिकन्दर लोदी तथा बाबर से लेकर औरंगजेब, अहमदशाह अब्दाली आदि बादशाहों ने हिन्दुओं का भयानक कत्लेआम किया। सन् १३९८ में तैमूर लंग ने कैदी बनाये गये, लगभग एक लाख हिन्दुओं को कुछ घंटो में ही मौत के घाट उतार दिया तथा दिल्ली से लेकर हरिद्वार तक अपने घोड़े दौड़ाये, रास्ते में पड़ने वाली हिन्दू बस्तियाँ लूट ली गयीं और जला दी गयीं। सन् १७३९ में नादिरशाह ने दिल्ली में पाँच घंटे में लगभग डेढ़ लाख हिन्दू गाजर मूली की तरह कटवा कर फेंकवा दिया।

सन् १५५६ में पानीपत के मैदान में अकबर से जब हेमू (हेमचन्द्र) हार गया, तो बैराम खाँ, हेमू को पकड़ कर अकबर के सामने लाया और अकबर से कहा कि जहाँपनाह अपनी तलवार से इस काफिर हिन्दू का सिर धड़ से अलग कर आप ग़ाजी की उपाधि धारण करें। अकबर ने अपनी तलवार से हेमू का सिर काट कर ग़ाजी की उपाधि धारण की। औरंगजेब ने गोकुल जाट के सिर और धड़ के टुकड़े-टुकड़े करके चील, कौवों और कुत्तों को खाने के लिए आगरे की कोतवाली के चबूतरे पर फेंकवा दिया। गोकुल जाट के पूरे परिवार को तथा उसके हजारों साथियों को जबरजस्ती मुसलमान बना लिया गया। औरंगजेब ने शिवाजी के पुत्र शम्भा जी की आँखें निकलवा लीं और शम्भा जी के शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके कुत्तों को खिलवा दिया। औरंगजेब ने हिन्दुओं को बड़ी भयानक क्रूरता से कुचल दिया। हिन्दुओं की रक्षा करने वाले गुरु तेग बहादुर सिंह की हत्या करवा दी। गुरु गोविन्द सिंह के दो पुत्रों की हत्या करवा दी और दो को जिन्दा ही चुनवा दिया। बाद में गुरु गोविन्द सिंह की हत्या भी एक मुसलमान पठान ने कर दी। गुरु गोविन्द सिंह के शिष्य बंदा बैरागी को बादशाह फ़रूख़शियर ने गिरफ्तार करवा कर मुसलमान बन जाने को कहा। जब बंदा बैरागी ने मुसलमान बनना स्वीकार नहीं किया, तो बंदा बैरागी और उनके सैकड़ों साथियों का बड़ी बेरहमी से कत्ल कर दिया गया। मतीदास को आरे से चिरवाया गया कुछ को खौलते तेल में डालकर मारा गया तथा रूई के बंडल में लपेटकर जला दिया गया। सिख गुरूओं पर भयंकर जुल्म किये गये। वास्तव में यह सभी बादशाह केवल कुरआन मजीद के आदेशों का ही पालन कर रहे थे।

कुछ नकली धर्मनिरपेक्षतावादी बुद्धिजीवी और नेता बराबर कहते हैं कि "मुसलमान बादशाहों के अत्याचारों के लिये उस समय के मुसलमानों को दोषी नहीं ठहराया जा सकता।" ऐसी सोंच वाले बुद्धिजीवी और नेता सच्चाई के प्रति संवेदनशीलता खो बैठे हैं। आखिर यह नकली धर्मनिरपेक्षतावादी ऐसा झूठ क्यों बोलते हैं ? क्या उनके ऐसा कहने से मुसलमान उनसे प्रेरणा पाकर काफिर हिन्दुओं के प्रति दयालु हो जायेगा और कुरआन के आदेशों को मानना छोड़कर

स्वयं भी काफिर बन जायेगा? ऐसा सोचा ही नही जा सकता। हाँ नकली धर्मनिरपेक्षतावादियों की ये गोल-मोल बातें सुनकर, हिन्दू अवश्य भ्रम में पड़ जायेंगे।

यह लोग जान ले कि किसी भी समाज की मानसिकता उसके धर्म के अनुसार होती है। जैसे अहिंसा का धर्म मानने वाला जैन समाज अहिंसक होता है। कोई एक जैन अथवा कोई एक जैन सम्राट तो हिंसक हो सकता है। लेकिन जैन समाज हिंसक नहीं हो सकता। हिन्दुओं में कायरता उनके धर्म के वर्तमान स्वरूप के कारण ही है।

अल्लाह ने मुसलमानों को काफिरों का कत्ल करने के स्पष्ट आदेश दियें हैं। कुरआन में है कि काफिर और कुफ्र के सफाये के लिये किये गये जिहाद में शामिल होने के लिये अगर किसी मुसलमान से कहा जाय और वह इस जिहाद में शामिल न हो, तो वह मुसलमान कयामत के बाद जन्नत में प्रवेश न पा सकेगा। अल्लाह उसे बहुत कष्ट देने वाले दण्ड देगा। देखिये, कुरआन के पारः१० सूरः९ की ३८वीं और ३९वीं आयत में है कि मोमिनो! (मुसलमानों !) तुम्हें क्या हुआ है कि जब तुमसे कहा जाता है कि खुदा की राह में (जिहाद के लिये) निकलो, तो तुम (काहिली की वजह से) जमीन पर गिर जाते हो (यानी घरों से निकलना नहीं चाहते) ? क्या तुम आखिरत (की नेमतों) को छोड़कर दुनियाँ की जिन्दगी पर खुश हो बैठे हो ? दुनियाँ की जिन्दगी के फायदे तो आखिरत के मुकाबले बहुत ही कम हैं। (३८) अगर तुम न निकलोगे तो खुदा तुमको बड़ी तक्लीफ का अजाब (दण्ड) देगा और तुम्हारी जगह और लोग पैदा कर देगा (जो खुदा के पूरे फरमांबरदार अर्थात् आज्ञाकारी होंगे) और तुम उसको कुछ नुक्सान न पहुँचा सकोगे और खुदा हर चीज पर कुदरत रखता है। (३९) (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज ३०५)

जब काफिरों का सफाया करना ही इस्लाम का मुख्य उद्‌देश्य हो, तो मुसलिम समाज काफिर हिन्दुओं के प्रति कैसे नरम रह सकता है ? कैसे उनके प्रति अहिंसक हो सकता है ? यह तर्क कैसे दिया जा सकता है कि अधिकांश मुसलमान कुरआन के इन आदेशों पर आस्था नहीं रखते ? यह तर्क भी कैसे दिया जा सकता है कि इन बातों को सामने लाना ठीक नहीं, क्योंकि यह बातें तो उन लोगों के सामने उनके धर्म में मुख्य धार्मिक कर्त्तव्यों के रूप में मौजूद हैं। जिन्हें वह हमारे याद दिलाने से नहीं, बल्कि कुरआन व मुल्लाओं के माध्यम से सदैव से जानते आये हैं। एक कोई व्यक्ति विशेष या कोई मुस्लिम बादशाह हिन्दुओं के प्रति नरमी दिखा सकता है। लेकिन मुस्लिम समाज काफिर हिन्दुओं के प्रति नरम व अहिंसक नहीं हो सकता। इसी मानसिकता के कारण मुल्लावादी मुसलमान अकबर की अपेक्षा औरंगजेब को बहुत नेक इन्सान मानता है। वह मानता है कि औरंगजेब ने अल्लाह की जमीन पर अल्लाह की हुकूमत कायम कर रखी थी।

मैं यह स्पष्टीकरण इसलिये दे रहा हूँ कि लोग जाने कि खतरा किनसे हो सकता है, कब हो सकता है, क्यों हो सकता है और कितना बड़ा हो सकता है ?

क्योंकि अगर लोग यह न जानेंगे, तो वह खतरे से बच नहीं सकते। भूतकाल में हिन्दुओं ने यही नहीं जाना, इसीलिये वह उस धार्मिक हिंसा, जिसके श्रोत का उन्हें पता न था, के मुकाबले अहिंसक और उदासीन बने रहे। परिणामस्वरूप वह उस धार्मिक हिंसा के शिकार होते रहे, जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। कुछ लोग कहते हैं कि इन खतरों को अभी न बताया जाय। उनसे मेरा प्रश्न है कि कब बताया जाय ? जब खतरा सर पर आ जाय, जिससे कि बचाव के प्रयास का मौका भी न मिल पाये।

क्या हैदर अली, टीपू सुल्तान आदि स्वतंत्रता सेनानी थे ?

हैदर अली, टीपू सुल्तान या दिल्ली का बादशाह बहादुरशाह जफर, जिनको आज के नेता महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बताते हैं, वह देश की स्वतंत्रता के लिये नहीं, बल्कि अपने-अपने मुसलमानी राज्य को वापस पाने के लिये ही अंग्रेजों से लड़े। आखिर अंग्रेजों से पहले यही मुसलमान हमको गुलाम बनाये बैठे थे। यदि यह मुसलमान बादशाह अंग्रेजों को हराकर अपना राज्य वापस पा जाते, तो हिन्दू, अंग्रेजों की गुलामी से निकलकर, फिर से मुसलमानों के गुलाम हो जाते। मुसलमानों ने भारत की आजादी की इस लड़ाई की पूरी कीमत ब्याज सहित पाकिस्तान के रूप में अलग देश लेकर वसूल कर ली। फिर भी आजादी की लड़ाई में अपने योगदान की बात कर वह हिन्दुओं के कन्धों पर अभी भी सवार रहना चाहते हैं। इस देश के नेता 'बोल मेरे आका' की तर्ज पर मुल्लावादी कट्टर मुसलमानों की चमचागीरी करने के लिये सदैव तैयार रहते हैं। इन नेताओं और तथाकथित बुद्धिजीवियों ने इतिहास को मनमाने ढंग से तोड़ा-मरोड़ा और सच्चाई को छिपाकर झूठी बातें बताते रहे। जब गुलामी और अत्याचारों की बात आती है, तो यह नेता केवल अँग्रेजों का नाम लेते हैं कि अँग्रेजों ने हमें गुलाम रखा, हम पर अत्याचार किये।

अरे ! यह अँग्रेज ही थे, जिन्होंने मुसलमानो से राज छीनकर उनकी लूटपाट, मारकाट से हिन्दुओं को बचाया, उनकी बहन, बेटियों की इज्जत लुटने से बचाया। यह नेता जालियाँवाले बाग की घटना को (जिसमें लगभग ४०० लोग मारे गये थे) इतिहास की सबसे क्रूर घटना बताते हैं। मानो उस दिन धरती में प्रलय आ गयी थी। लेकिन मुल्लावादी मुसलमानों ने हिन्दुओं को एक हजार साल तक मारा-काटा व लगभग ५५० साल, गुलाम बनाये रखा। हिन्दुओं को कष्ट देकर रोने तक नहीं दिया, उसे हिन्दू-मुस्लिम एकता का नमूना बताते हैं। एक हजार साल जितने लम्बे समय अर्थात हिन्दुओं की चालीस पुस्तों तक चले मुसलमानो के यह अत्याचार, जो सौ रावण या कंस मिलकर भी नहीं कर सकते थे, उसको यह नेता पूरा का पूरा डकार गये हैं। उसे सदियों से चली आ रही गंगा-जमुनी संस्कृति बताते हैं। अँग्रेजों के समय में कांग्रेस के लोग सविनय अवज्ञा आन्दोलन करते थे, तो अँग्रेज लाठी चलवा देते थे, गिरफ्तारी करवाते थे। बाद में जेल के अन्दर जब नेता भूख हड़ताल कर देते थे, तो अंग्रेज भूख हड़ताल तोड़वाने के लिये बातचीत का रास्ता अपनाते थे। आज जब हम आजाद हैं, क्या सरकार आन्दोलनकारियों पर

लाठियाँ नहीं चलवाती अथवा उन्हें गिरफ्तार नहीं करती ? लेकिन मुल्लावादी मुसलमानों के राज में हिन्दू अगर इस तरह के आन्दोलन करते, तो सारे आन्दोलनकारियों के सिर धड़ से अलग कर दिये जाते। जिस इलाके में यह आन्दोलन होता, उस इलाके में ही नहीं, आसपास की सभी हिन्दू बस्तियों में कत्ले आम होता और वे जला डाली गयी होती तथा नेताओं की खाल खींचकर उसमें भूसा भरवा दिया जाता और मांस के टुकड़े टुकड़े करके चील, कौवों और कुत्तों को खिला दिया जाता। यही फर्क था अंग्रेजों और मुसलमानों की गुलामी में।

अंग्रेजों ने मानवता के साथ सभ्य कौम की तरह हमे गुलाम रखा, इसलिये इन धर्मनिरपेक्षतावादी नेताओं की नजर में वह विदेशी और अत्याचारी कहलाये। लेकिन जिन मुसलमानों ने हमसे ऐसी क्रूरता का व्यवहार किया, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी, वह देशी हो गये।

मेरे इस तर्क का मतलब यह नहीं है कि मैं अंग्रेजों की गुलामी का समर्थक हूँ। मैं तो यह बताना चाहता हूँ कि अधिक क्रूर कौन था ?

मुल्लावादी मुसलमानों के इस लूटपाट, मारकाट, छीना झपटी वाले भाई-चारे को, जो इन नेताओं की गंगा-जमुनी संस्कृति है, यह फिर से लाना चाहते हैं। मुसलमानों का वोट पाने के लिये यह नेता इस देश को फिर से इन मुल्लावादी मुसलमानों की गुलामी में जकड़ देना चाहते हैं। कुर्सी पाने के लिए इस देश के हिन्दुओं को आग में झोंक देना चाहते हैं। लेकिन यह नकली धर्मनिरपेक्षतावादी हिन्दू नेता याद रखें कि सत्ता पाते ही यह मुल्लावादी मुसलमान, अपने रास्ते का काँटा हटाने के लिये सबसे पहले उन्हें ही अपना शिकार बनायेंगे।

सन् १९४७ में भारत की आजादी के बाद श्री जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल में हैदराबाद की रियासत में मुसलमान रजाकारों की सेना ने निज़ाम और उसके वजीर (मंत्री) की शह पर हिन्दुओं के सामूहिक कत्लेआम का सिलसिला शुरू कर दिया, जो सरदार पटेल द्वारा श्री जवाहरलाल नेहरू की इच्छा के विरुद्ध हैदराबाद रियासत को भारत में मिला लेने के बाद ही बन्द हुआ।

जब पाकिस्तान में हिन्दुओं के ऊपर प्रलय टूट पड़ी

सन् १९४७ में भारत के बँटवारे के बाद पाकिस्तान बना और जैसे ही मुसलमानों को पाकिस्तान के रूप में राज मिला, तो राज पाते ही हिंसावादी मुसलमान, निर्दोष और निहत्थे हिन्दुओं पर भूखे शेर की तरह टूट पड़े। उनके द्वारा पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दुओं को बुरी तरह मारा, काटा, लूटा गया। तब पाकिस्तान से जो रेलगाड़ियाँ भारत पहुँचती थीं, उनमें हिन्दुओं की कटी हुई लाशें ही लाशें लदी होती थीं। जो हिन्दू जान बचाकर भारत भागे, उनमें ज्यादातर की सुन्दर पत्नियाँ, बहन, बेटियाँ मुसलमानो ने छीन ली थीं। हजारों नौजवान लड़कियों और महिलाओं ने दंगाई मुसलमानों से अपनी इज्जत बचाने के लिये उफनती नदियों और कुँओं में छलांग लगा दी। मुसलमान दंगाइयों द्वारा हिन्दू महिलाओं के साथ बलात्कार करने के बाद उनके स्तन काट लिये गये और उनके दुधमुहें बच्चे भालों की नोक पर टांग दिये गये। पानी के लिये रोते छोटे-छोटे

मासूम बच्चों को पानी की जगह दंगाई मुसलमानों ने अपनी पेशाब पिला दी। इन छोटे-छोटे मासूम बच्चों तक का कत्ल कर दिया गया अथवा उनको जिन्दा ही आग में झोंक दिया गया। कितना हृदय विदारक और वीभत्स दृश्य था, जिसके सामने सौ रावण और कंस के अत्याचार फीके पड़ जाते।

आज भी इस देश में कश्मीर से हिन्दू अपनी जान बचाकर भाग खड़े हुए हैं। कश्मीर में हिन्दुओं के सामूहिक नर-संहार हो रहे हैं। वहाँ हिन्दुओं की औरतों को जबरजस्ती मुसलमान बनाया जा रहा है। हिन्दू लड़कियों और औरतों के साथ सामूहिक बलात्कार हुए। इंडिया टुडे के अनुसार उनके स्तनों में अल्लाह की मोहर गर्म करके दागी गयी। इंडियन एक्सप्रेस २६–५–९० के अनुसार मुसलमान आतंकवादियों द्वारा कश्मीर में हिन्दुओं के हाथ-पैर काटे गये, उनकी आँखें निकाली गयीं। जम्मू की डोडा जिला की रामवन तहसील के सुम्भड़ गाँव में पाकिस्तान समर्थक मुसलमान आतंकवादियों ने ग्रामवासियों को इकट्ठा कर उनके हाथ-पैर बाँध कर पहले उन्हें बुरी तरह पीटा, फिर उनमें से कुछ युवकों को सब के सामने छूरे से बकरे की तरह हलाल कर उनका मांस उनके परिवार वालों के मुँह में ठूँसा। हिन्दुओं को जबरजस्ती गाय का खून पीने के लिये मजबूर किया। (पाञ्जन्य १९–६–९४) महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार कर उनके स्तन काट लिये गये। अनन्तनाग के सुप्रसिद्ध विद्वान सर्वदानन्द शास्त्री के मस्तक पर एक मोमबत्ती जलाकर उनको तड़पाया गया, फिर एक-एक अंग काट कर मौत के घाट उतार दिया गया। कश्मीर से खण्डीखास गाँव में महन्त बजना गोस्वामी को मुसलमान आतंकवादी २७ अप्रैल १९९० को आश्रम से पकड़ कर ले गये पहले उनका मुँह सिला गया, फिर पेड़ पर उलटा लटका कर फाँसी लगा दी गयी और शव को चार दिनों तक पेड़ में लटकते रहने दिया। चौथे दिन एक हिन्दू सिपाही ने उसे उतारा तो उस सिपाही को भी बाद में गोली मार दी गयी। (पाञ्जन्य ५–८–९०) कश्मीर में हिन्दुओं को पकड़ कर उनके शरीर का पूरा का पूरा खून निकाल लिया जाता है, जो मुसलमान आतंकवादियों के इलाज में काम आता है और पूरा खून निकाल लिये जाने से मर गये इन हिन्दुओं को सड़क के किनारे या झेलम नदी में फेंक दिया जाता है। इस तरह की सैकड़ों लाशें बरामद हो चुकी हैं। (टाइम्स ऑफ इन्डिया, मुम्बई २०–८–९०) यह नमूना मात्र है। कश्मीर में इस तरह की घटनाएँ रोज हो रही हैं। इसीलिये वहाँ से हिन्दुओं को अपनी अरबों की सम्पत्ति छोड़ कर भागना पड़ा। वे कश्मीरी हिन्दू, जो कल तक करोड़पति थे, आज भिखारी बन कर पूरे भारत में ठोकरें खाते फिर रहे हैं। भविष्य में ऐसी दुर्दशा पूरे देश के हिन्दुओं की होने वाली है।

पाकिस्तान में बचे हिन्दू कहाँ गये ?

१९४७ में भारत के बटवारे के बाद पश्चिमी पाकिस्तान में एक करोड़ हिन्दू बचे थे। जिनकी संख्या घटकर आज पाँच लाख रह गयी है, बाकी हिन्दू या तो जबरजस्ती मुसलमान बना लिये गये अथवा मार डाले गये। उनकी जमीन, मकान और जवान लड़कियों और औरतों को मुसलमानों द्वारा हड़प लिया गया। जो बचे

हैं वह अत्याचारों, अपमानों, भय और आतंक के बीच नरक जैसी जिन्दगी जी रहे हैं। वहाँ उनकी सुनने वाला कोई नहीं है। पाकिस्तान के पूरे मन्दिर तोड़ दिये गये, जो एक आध बचे हैं, वह मूर्ति विहीन ढाँचे मात्र हैं। जिनके अन्दर मुर्गियाँ और बकरियाँ पली हैं। चूँकि पाकिस्तान द्वारा सिक्खों को शेष हिन्दुओं के विरुद्ध उकसाया जाता है, इसी रणनीति के कारण पाकिस्तान में मुख्य गुरुद्वारे छोड़ दिये गये। ऐसा मुस्लिम हमलावरों की चिरपरिचित नीति के कारण किया जाता है कि पहले छोटे दुश्मन को मिलाकर बड़े दुश्मन को नष्ट करो। फिर छोटे का भी आसानी से सफाया कर दो। बंगला देश में हिन्दुओं की सम्पत्ति और लड़कियों को मुसलमान छीन रहे हैं। चकमा हिन्दुओं पर भयानक अत्याचार किये गये। आज बंगला देश में हिन्दुओं का जीना हराम हो गया है। वहाँ उनकी संख्या बड़ी तेजी से घट रही है।

भारतीय लोकतंत्र का अन्याय

हिन्दुओं पर हुए इन भयानक अन्यायों और अत्याचारों के विरुद्ध किसी भी धर्मनिरपेक्षतावादी, समाजवादी, गांधीवादी, सर्वोदयवादी, मानवतावादी और आध्यात्मवादी ने अपना मुँह नहीं खोला। इतना अत्याचार होने पर यदि हिन्दू उसकी चर्चा भी करते हैं, तो उन्हें साम्प्रदायिक, फासिस्टवादी और घृणा फैलाने वाला कहकर उन पर कानूनी कार्रवाई की जाती है। उनका चुनाव लड़ने और वोट देने का अधिकार तक छीन लिया जाता है। भारतीय लोकतंत्र में केवल हिन्दुओं का मुँह दबाया जाता है। लेकिन मुल्लावादी मुसलमान जब देश विरोधी, साम्प्रदायिक और आग उगलने वाले भड़काऊ भाषण देते हैं या घटिया और विकृत मानसिकता वाले कलाकार मकबूलफिदा हुसैन जब हिन्दुओं की देवियों की नंगी तस्वीरें बनाते हैं अथवा फिल्मी कलाकार हिन्दुओं के धर्म को विकृत कर उसका मज़ाक उड़ाते हैं, तो इस देश के नकली धर्मनिरपेक्षतावादी नेता, बुद्धिजीवी और कम्युनिष्ट अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर पक्ष लेकर उनका हौसला बढ़ाते हैं। आखिर यह कलाकार हिन्दुओं के धर्म के साथ ही ऐसा क्यों करते हैं ? मुसलमानों के धर्म इस्लाम के साथ ऐसा क्यों नहीं करते ? क्योंकि वहाँ इनको मज़ा चखाने वाले लोग बैठे हैं। हिन्दू जितनी अधिक सहिष्णुता और सज्जनता दिखाते हैं, उन पर उतना अधिक अन्याय और अत्याचार होता है। पर आम हिन्दू कायरों की तरह यह सब अन्धेर देखता रहता है। सोचने की बात तो यह है कि हिन्दुओं पर होने वाले इतने भयंकर जुल्मों का विरोध आज तक किसी भी पढ़े लिखे बुद्धिजीवी मुसलमान ने नहीं किया। उनके इस मौन से यह साबित होता है कि वे इन अत्याचारों को सही और धर्म का कार्य मानते हैं।

हैरानी की बात यह है कि धर्म के नाम पर काफिर हिन्दुओं पर इतना अत्याचार करने वाले, आज हिन्दुओं को धर्मनिरपेक्षता व अहिंसा का पाठ पढ़ाते रहते हैं। इतिहास गवाह है कि इन मुल्लावादी मुसलमानों ने ताकत या सत्ता पाते ही हिन्दुओं को क्रूरता से कुचलकर रख दिया। उनका सम्पूर्ण इतिहास ही क्रूरतापूर्ण मार-काट रूपी हिंसा से भरा है। लेकिन अधिकांश हिन्दू बुद्धिजीवी तथा

नकली धर्मनिरपेक्षतावादी हिन्दू नेता, उनको हिंसक मानने के लिये तैयार ही नहीं हैं, उलटा उन्हें प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष बताते हैं। यह दुनियाँ का सबसे बड़ा आश्चर्य या यों कहें कि दुनियाँ की सबसे बड़ी मूर्खता है। ऐसे लोग करोड़ों लोगों की जान खतरे में डालने जा रहे हैं। इस सत्य को आज के हिन्दू नौजवान समझें, क्योंकि भविष्य का यह खतरा उन्हें ही झेलना है।

काफिर हिन्दुओं को लूटना पुण्य का कार्य

कुरआन मजीद में पारः १०, सूरः ८ की ६९वीं आयत में मुसलमानों के लिये अल्लाह का आदेश है कि-बस, अब पाकीज़ा और हलाल समझकर खाओ जो माल तुमने गनीमत का हासिल किया, और अल्लाह का लिहाज रखो, बेशक अल्लाह तो बहुत गफूर है, रहीम है। (अनुवादक-ह० मौ० अ० क० पा० सा०, पेज नं० १८६)

अर्थात् ऐ मुसलमानो ! ग़नीमत (काफिरों को लूटने से मिली लूट) का जो माल तुमको मिला है, उसे खाओ वह तुम्हारे लिये पवित्र और खाने योग्य है और अल्लाह से डरते रहो। निश्चित रूप से अल्लाह क्षमा करने वाला और दयालु है।

पारः २६, सूरः ४८ की २०वीं आयत में है कि- अल्लाह का वादा है कि (बहुत सी फतह में) माले ग़नीमत के ढेर के ढेर तुमको मिलते रहेंगे (अनुवादक-ह० मौ० अ० क० पा० सा०, पेज नं० ५१४) अर्थात् अल्लाह का वादा है कि काफिरों पर बहुत बार मिली विजय में मुसलमान उन काफिरों को लूटने से मिले माल के ढेर के ढेर पाते रहेंगे।

मुसलमानो ने कुरआन मजीद के इन्हीं आदेशों का पालन करने के लिये भारत के हिन्दुओं को जी भरके लूटा। इस लूट की शुरूआत मोहम्मद बिन कासिम से होती है। सन् ७१२ में मोहम्मद बिन कासिम ने पूरे सिंध को लूटा और लूटने के बाद सिंध में मुसलमानी राज्य की स्थापना कर दी। शुद्ध धार्मिक भावना से प्रेरित होकर महमूद गजनवी हर साल कुछ हजार सैनिक लेकर अफगानिस्तान से भारत में आ धमकता और भारत को मनमाने ढंग से रौंद डालता। उसने १७ बार पूरे भारत में घूम-घूम कर हिन्दुओं को लूटा और भीषड़ मार-काट की। साथ ही साथ बड़े-बड़े मन्दिरों को लूटा और तोड़ा। इन लूटों में उसे माले ग़नीमत के ढेर के ढेर मिलते रहे। हर राजा दूसरे चौथे साल बारी-बारी से महमूद के हाथों लुटते-पिटते रहे। कितने ही राजा यह सुनते ही कि महमूद आ रहा है, अपने राज्य की निर्दोष हिन्दू जनता को लुटने-पिटने के लिये छोड़कर भाग खड़े होते थे। हिन्दुओं के साथ भविष्य में फिर से यही होने वाला है। राजाओं के स्थान पर आज के नकली धर्मनिरपेक्षतावादी नेता भविष्य में यही करने वाले हैं।

महमूद गजनवी ने सोमनाथ मन्दिर को लूटकर अथाह सम्पत्ति पाई। इतिहासकार अलबेरूनी लिखता है कि ''मन्दिर के अन्दर शीशे के बने हुये ५६ खम्भे थे। बड़े-बड़े झाड़ फानूस जो कि छतों से लटक रहे थे, उनमें बहुमूल्य हीरे माणिक्य जड़े थे, जो बड़ी तेज चमक पैदा कर रहे थे। शिवलिंग ३ हाथ की गोलाई में था तथा पाँच गज ऊँचा था, जो सोने, हीरे, जवाहरातों से लदा था। मन्दिर में रखे दीपक तक ठोस सोने के थे और रत्नजटित थे। मन्दिर के खजाने में अथाह

सोना, चाँदी, हीरा, जवाहरात का भंडार था। मन्दिर में दो सौ मन सोने की जंजीरें घंटों को बाँधने के लिये थीं। महमूद ने यह सारी सम्पत्ति लूट ली। यह सोना, चाँदी, हीरा, जवाहरात इतना था कि इसको ढ़ोकर ले जाने के लिये ५० हाथी, २०० ऊँट लगे।'' यह सारी सम्पत्ति महमूद के पुत्र सालार मसूद ग़ाजी की निगरानी में गजनी ले जायी गयी। इसी सालार मसूद गाजी की कब्र बहराइच (उ० प्र०) में गाजी मियाँ के नाम से कुछ मूर्ख हिन्दुओं द्वारा पूजी जाती है। महमूद ने २० मन सोने के गहने और ६०० मन चाँदी के बरतन नगर कोट (कोट काँगड़ा) के मन्दिर, जिसे महाभारत के भीम का दुर्ग भी कहते हैं, से लूटा था।

इतिहासकार अल उत्बी अपनी पुस्तक 'तारीख ए यमीनी' में लिखता है कि ''सन् १०१८ में महमूद ने मथुरा में श्रीकृष्ण जन्म भूमि पर बने मन्दिर को तोड़ने के उद्देश्य से हमला किया। मथुरा में श्रीकृष्ण मन्दिर इतना भव्य और विशाल था कि महमूद काफी देर तक चकित होकर देखता रहा। फिर बोला कि अगर मैं ग़जनी के तमाम अनुभवी कारीगरों को ऐसी इमारत बनाने में लगा दूँ, तो भी उन्हें ऐसी इमारत बनाने में २०० साल लगेंगे।'' ऐसे मन्दिर को महमूद ने कुछ ही घंटो में मिट्टी में मिला दिया। पूरा शहर मथुरा लूट लिया गया और हिन्दुओं को बुरी तरह काटा गया। उत्बी लिखता है कि ''दोजखी लोग (दोजखी शब्द हिन्दुओं के लिये प्रयोग किया, जिसका अर्थ है नरक में जाने वाले) मथुरा के इन बुतखानों (मन्दिरों) में शुद्ध सोने की ढली बड़ी-बड़ी आदमकद पाँच मूर्तियाँ रखे थे। जिसमें से हर एक बुत (मूर्ति) में एक बहुत ही कीमती नीलम जड़ा हुआ था, जिसकी चमक नीले आसमान की तरह थी। इसके अलावा चाँदी की बड़ी-बड़ी सैकड़ों मूर्तियां थीं, जो सब लूट कर हाथियों और ऊँटों पर लाद कर ग़जनी ले जायी गयीं। इस लूट के माल में लगभग ७० हजार सुन्दर हिन्दू औरतें भी थीं।'' महमूद गजनवी यह सारी खुराफात बिना किसी खास रोक टोक के पूरे भारत में करता रहा।

सन् ११९२ में मोहम्मद शहाबुद्दीन गोरी ने सोंचा कि लूट कर वापस जाने के बजाय यहीं काफिर हिन्दुओं की छाती पर चढ़ बैठो। एक होता है, ऐसा लुटेरा कि लूट कर चलता बने जैसे महमूद गजनवी था और एक लुटेरा ऐसा होता है कि लूटने आये और घर के अन्दर बैठ जाये। फिर रोज-रोज पुरुषों को कोड़े लगाये, विरोध करने वाले पुरूषों की हत्या कर दे, स्त्रियों से भोजन पकवाये, आराम से बैठ कर खाये और पेट भरने के बाद घर की औरतों की इज्जत लूटे तथा उन्हें रखैल बनाकर रख ले और उनके आदमियों को अपनी सेवा में लगा दे, फिर पूरी जिन्दगी आराम से उस घर में रहे। ऐसे ही लुटेरे थे मोहम्मद शहाबुद्दीन गोरी, कुतुबुद्दीन एबक, इल्तुतमिश, बलबन, अलाउद्दीन खिलजी, गयासुद्दीन, फिरोजतुगलक, सिकन्दर लोदी, बाबर, अकबर, औरंगजेब आदि, जो इस देश के बादशाह रहे। यह और इनके वारिस (उत्तराधिकारी) सन् ११९२ से अठारहवीं शताब्दी तक लगभग ५५० साल इस देश के हिन्दुओं की छाती पर सवार रहे। बादशाहों ने ही नहीं, बल्कि उनके दरबारियों ने, सैनिकों ने और अन्य मुसलमानो ने हिन्दुओं की लड़कियों और औरतों को मुसलमान बनाकर रख लिया। हिन्दू

कमाते रहे और मुसलमान तलवार और क्रूरता के बल पर आराम से गुलछर्रे उड़ाते रहे, हिन्दुओं पर कोड़े बरसाते रहे, उनकी गरदने काटते रहे तथा खालें निकालकर भूसा भरवाते रहे और हम बेशर्मी से, कायरता से यह सब देखते रहे, सहते रहे। उससे बड़ी बेशर्मी तो अब हो रही है, जब इस देश के नेता इसके बाद भी कहते हैं कि इस देश में हिन्दू-मुसलमान सदियों से प्रेम और भाई-चारे से रहते चले आये हैं।

धार्मिक उन्माद (अतिउत्साह) का मुकाबला केवल धार्मिक उन्माद से-

वास्तव में धार्मिक एकता व धार्मिक कट्टरता का मुकाबला केवल धार्मिक एकता व कट्टरता से ही हो सकता है। धार्मिक उन्माद (अतिउत्साह) को केवल धार्मिक उन्माद से ही दबाया जा सकता है। लेकिन इस देश में हिन्दू, श्रीमद्भगवद्गीता की इस नीति से हटकर अव्यवहारिक अहिंसा व अतिसहनशीलता (अतिसहिष्णुता) का पाठ पढ़ते रहे। सैकड़ों साल की मारकाट व नरक जैसे अपमानों को झेलने के बाद भी आज उन्हें यही पाठ पढ़ाया जा रहा है। जबकि इस देश में कट्टरवादी मुसलमान फिर से ताकतवर होकर धार्मिक एकता और कट्टरता से आगे बढ़ रहे हैं। मुल्लावादी मुसलमान और आई०एस०आई० मिलकर नौजवान मुसलमानों में धार्मिक उन्माद बड़ी तेजी से बढ़ा रहे हैं। दूसरी तरफ हिन्दू नौजवान, एकता के स्थान पर आपस में जाति की लड़ाई लड़ रहे हैं। कट्टरता की जगह कायरता को अपना रहे हैं तथा धार्मिक उन्माद की जगह धर्म के प्रति लापरवाह हैं और पालयनवादी हो रहे हैं। इन्हीं कमजोरियों से हिन्दू, इस्लामी खतरे की ओर अपने आप बढ़ते जा रहे हैं।

लूट के माल में हिन्दू औरतें भी

हिन्दुओं को अपमानित करने के लिये उनके धन के साथ उनकी औरतों को भी माले ग़नीमत के रूप में छीन लिया गया। सन् ७१२ में मोहम्मद बिन कासिम ने सिंध में राजा दाहिर को मार कर उसकी अत्यन्त सुन्दर पत्नी लादी देवी को मुसलमान बनाकर रख लिया और राजा की दो राजकुमारियों सूर्या देवी और परमल देवी के साथ चुनी हुई अत्यन्त सुन्दर लड़कियाँ खलीफा के पास बगदाद भेज दीं। पूरे सिंध में मोहम्मद बिन कासिम के सैनिकों ने ढूँढ-ढूँढ कर सुन्दर हिन्दू औरतें मुसलमान बनाकर रख लीं। महमूद गजनवी तो अपने १७ हमलों में भारत से लगभग चार लाख हिन्दू औरतें, जो एक से बढ़कर एक सुन्दर थीं, पकड़कर ग़जनी उठा ले गया। सन् १०१४ में थानेश्वर की लूट में महमूद दो लाख से अधिक अत्यन्त सुन्दर हिन्दू औरतें पकड़कर गजनी ले गया। मथुरा से लगभग ७० हजार सुन्दरतम हिन्दू औरतें पकड़ ली गयीं।

महमूद गजनवी जब इन हिन्दू औरतों को गजनी (अफगानिस्तान) ले जा रहा था, तो वे अपने पिता, भाई और पतियों को बुला-बुला कर बिलख-बिलख कर रो रही थीं और अपने को बचाने की गुहार लगा रही थीं। हे ईश्वर ! कैसा हृदय विदारक किन्तु क्रोध से पूरे शरीर में आग लगाने वाला दृश्य था। लेकिन करोड़ों हिन्दुओं के बीच से मुट्ठी भर मुसलमान सैनिकों द्वारा भेड़ बकरियों की तरह ले

जाई गयीं, रोती बिलखती इन लाखों हिन्दू नारियों को बचाने न उनके पिता आये, न पति आये, न भाई आये, और न ही इस विशाल भारत के करोड़ों हिन्दू। उनकी रक्षा के लिये न तो कोई अवतार हुआ और न ही कोई देवी-देवता आये। महमूद गजनवी ने इन हिन्दू लड़कियों और औरतों को ले जाकर गजनी के बाजार में सामान की तरह बेच डाला। पूर्वी दिल्ली से भूतपूर्व लोकसभा सदस्य श्री बैकुण्ठलाल शर्मा (जो अब सिक्ख हैं) ने हमें बताया कि ''मैंने बचपन में गजनी जाकर उस जगह को देखा, जहाँ इन हिन्दू औरतों की नीलामी हुई थी। उस स्थान पर मुसलमानों ने एक स्तम्भ बना रखा है, जिसमें लिखा है 'दुख्तरे हिन्दोस्तान, नीलामे दो दीनार'। अर्थात् इस जगह हिन्दुस्तानी औरतें दो-दो दीनार में नीलाम हुईं। उजबेकिस्तान के मुसलमान इन्हीं की सन्तान हैं।'' कुछ हजार मुसलमान सैनिक पूरे भारत में ढूँढ-ढूँढ कर हिन्दू औरतों को छाँटते बेराते रहे।

संसार की किसी भी कौम के साथ ऐसा अपमान नहीं हुआ, जैसा हिन्दू कौम के साथ हुआ। फिर भी हिन्दू नहीं सुधरे और आज फिर से वैसे ही अपमानों को झेलने के नजदीक पहुँच रहे हैं। लेकिन आँखें बन्द किये बैठे हैं।

मोहम्मद गोरी जब इस देश को लूटकर वापस जाने के बजाय सदा-सदा के लिये हिन्दुओं की छाती पर चढ़ कर बैठ गया, तो उसके बाद आने वाले सभी बादशाहों के शाहीहरम (रनिवास) सुन्दरतम हिन्दू औरतों से भर दिये गये। दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी, तो यह सुनते ही कि किसी राज्य में अतिसुन्दर हिन्दू औरत है, वह उसे पाने के लिये उस राज्य में हमला कर देता था। एक बार अलाउद्दीन खिलजी को पता चला कि गुजरात के राजा कर्णसिंह की बेटी देवलदेवी अत्यन्त सुन्दर है। बस फिर क्या था, देवलदेवी को पकड़ने के लिये गुजरात पर अलाउद्दीन का हमला हुआ। लेकिन कर्णसिंह अपनी पुत्री देवलदेवी के साथ दक्षिण भारत में देवगिरि राज्य में भाग गया। अलाउद्दीन की सेना ने देवलदेवी को न पाने की चिढ़ में पूरे गुजरात में हिन्दुओं को जी भर कर लूटा। जो हिन्दू सामने पड़ा उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। बाद में अलाउद्दीन खिलजी ने देवल देवी को किसी भी कीमत पर पाने के लिये देवगिरि में चढ़ाई कर दी। देवगिरि का राजा रामचन्द्र युद्ध हार गया और पकड़ा गया। वहाँ छिपा हुआ गुजरात का राजा कर्णसिंह मारा गया और देवलदेवी बचाई न जा सकी। वह अल्प ख़ाँ के हाथों पड़ी और दिल्ली के बादशाह सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के पास भेज दी गयी। अलाउद्दीन खिलजी ने बाद में उसका निकाह (विवाह) अपने बड़े पुत्र शहजादा ख़िज़्र ख़ाँ से कर दिया।

इसी बादशाह अलाउद्दीन खिलजी को पता चला कि मेवाड़ के राँणा रत्नसिंह की पत्नी पद्मिनी देवी अत्यन्त सुन्दर है। दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी इतिहास प्रसिद्ध सुन्दरतम पद्मिनी को पाने के लिये सन् १३०३ में खुद ही दिल्ली से चल पड़ा। मेवाड़ के चित्तौड़ किले का घेरा डाल दिया गया। घेरा काफी दिनों तक पड़ा रहा, तब अलाउद्दीन ने फौरन चाल चली। उसने किले के अन्दर सन्देश भिजवाया कि राँणा रत्नसिंह यदि अपनी पत्नी पद्मिनी देवी का मुँह शीशे

में ही दिखा दे, तो मैं वापस दिल्ली चला जाऊँगा। राँणा अपने कुछ सलाहकारों के कहने पर मार-काट से बचने के लिये पद्मिनी को दिखाने के लिये राजी हो गया, जो उचित नहीं था। सुल्तान, पद्मिनी को देख कर जब किले से वापस बाहर आने लगा, तो राँणा रत्नसिंह, सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी को बाहर तक भेजने आया। जैसे ही राँणा रत्नसिंह किले के बाहर आया, अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सैनिकों से उसे पकड़वा लिया और किले के अन्दर कहलवा भेजा कि पद्मिनी को दे जाओ और राँणा को ले जाओ। हिन्दू राजाओं ने जितनी कायरता का प्रदर्शन किया, हिन्दू नारियों ने उतनी ही वीरता का। पद्मिनी जितनी सुन्दर थी उतनी ही वीर और चतुर। उसने सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी की शर्त मान ली और कहलाया कि मैं अपनी ८०० दासियों के साथ आठ सौ पालकियों में आ रही हूँ। पद्मिनी अपने साथ ८०० नौजवान सैनिकों को जिनके अभी मूछें नहीं निकली थीं औरतों के भेष में तलवारें छिपाकर लाई। औरतों के भेष में यह आठ सौ सैनिक ८०० पालकियों में बैठे थे। प्रत्येक पालकी को चार सैनिक जिनके हथियार पालकी के अन्दर छिपाकर रखे थे उठाकर चल रहे थे। इस प्रकार पद्मिनी के साथ छिपकर लगभग चार हजार सैनिक बाहर आये। अलाउद्दीन पद्मिनी को पाने के सपने देखने में मगन था कि अचानक हमला करके पद्मिनी देवी राणा रत्नसिंह को छुड़ा कर किले के अन्दर ले गयी। फिर क्या था, दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी का क्रोध मेवाड़ पर प्रलय की तरह टूट पड़ा। चित्तौड़ के किले पर भीषण हमला हुआ। राँणा रत्नसिंह लड़ते हुये मारा गया। मेवाड़ लूट लिया गया। हिन्दू बस्तियों में आग लगा दी गयी। उधर किले के अन्दर महान् पद्मिनी ने मुसलमानों के हाथों पड़ने के स्थान पर अपने अत्यन्त सुन्दर शरीर को आग में जला कर भष्म कर दिया। पद्मिनी के पीछे किले की सभी राजपूतनियाँ भी जिन्दा ही आग में जल कर भस्म हो गयीं, जो जौहर के नाम से प्रसिद्ध है। अलाउद्दीन खिलजी भयानक नरंसहार करके जब किले के अन्दर पद्मिनी को पकड़ने के लिये घुसा, तो वहाँ उसे पद्मिनी नहीं, बल्कि चारो ओर जलती हुई चिताएँ देखने को मिली। सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने किले के अन्दर के चालीस मन्दिरों को तोड़वाकर मस्जिदें बनवा दी।

यह जो घटनाएँ हमने लिखी हैं, यह तो कुछ नमूने मात्र हैं। मुसलमानों के राज में ऐसी हजारों घटनाएँ हर साल होती रहीं। भारत के सभी मुसलमान बादशाह लूट के माल में हिन्दू औरतों को भी हथियाते रहे। उनकी शह पर साधारण मुसलमान नागरिक से लेकर बादशाह के दरबारी मुसलमान और साधारण मुसलमान सैनिक से लेकर मुसलमान सेनापति तक हिन्दुओं की पत्नियाँ और बेटियाँ छीनते रहे। हिन्दू राजाओं की कायरता से एक हजार साल तक हिन्दुओं के साथ यह सब होता रहा। आज राजाओं का स्थान लेने वाले नेताओं की कायरता से भारत के हिन्दू फिर से उसी खतरे की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन इस खतरे से घिर रहे हिन्दू, इस खतरे की अन्देखी कर जाति की लड़ाई में व्यस्त हैं। हिन्दुओं के साथ उनके ही देश में एक हजार साल तक हुये इन अपमानों को, इस मारकाट को इस देश

के नेता बताते हैं कि इस देश में सैकड़ों साल से हिन्दू-मुसलमान प्रेम से रहते चले आये हैं। यह नेता हिन्दुओं के साथ हुए इस अपमान और अत्याचार पर गर्व करते हैं तथा इसे ही गंगा जमुनी संस्कृति, अनेकता में एकता और धार्मिक सहिष्णुता बताते हैं। यह नेता दुनियाँ का सबसे बड़ा झूठ बोलते हैं और आश्चर्य है कि हिन्दू इस झूठ को मान भी लेते हैं। नेताओं द्वारा हिन्दुओं की जिस धार्मिक सहिष्णुता के गुणगान गाये जाते हैं, वह हिन्दुओं की विशेषता नहीं, बल्कि मूर्खतापूर्ण कायरता है। जिस पर हमें शर्म आनी चाहिये।

हिन्दू अगर टी० वी० में या सिनेमा में कोई हिन्दू-मुस्लिम एकता पर झूठी कहानी देख लें या किसी नेता के मुँह से अब्दुल हमीद जैसे एक-दो उदाहरण सुन लें, तो वह मुल्लावादी मुसलमानों द्वारा हुई अब तक की मारकाट को मानने से इन्कार कर देते हैं। इस प्रकार अपनी दुर्दशा की जिम्मेदार खुद हिन्दू जनता है, जो सच्चाई से आँखे बन्द किये बैठी रहती है। जबकि मुसलमानो को सिनेमा या टी० वी० की कहानी या कोई नेता के भाषण नहीं बहका सकते। वह वही मानेंगे और करेंगे, जो उनका धर्म कहता है। उसके खिलाफ अगर कोई उन्हें समझाता है, तो वह उसके दुश्मन हो जायेंगे और नेता इसको अच्छी तरह समझते हैं। हिन्दुओं के बीच कोई नेता उनके धर्म को या उनके देवी-देवताओं को गालियाँ भी दे दे, तो भी हिन्दू उसके भाषण पर मस्त होकर तालियाँ बजा देंगे। मुसलमान अपने नेताओं की बात तभी मानेंगे जब वह कुरआन के अनुसार होंगी व मुसलमानो के धर्म व समाज को मजबूत करने वाली होंगी, नहीं तो वह उनकी बात नहीं मानेंगे। वह चाहे मौलाना बुखारी हों या और कोई बड़े नेता। क्योंकि मुसलमानो का कोई नेता नहीं है, उनकी नेता कुरआन मजीद है। उसमें जैसे आदेश हैं, उसी के अनुसार उन्हें चलना है। मुसलमानो ने अगर किसी हिन्दू नेता को अपना समर्थन दिया है, तो वह भी कुरआन के अनुसार ही है। क्योंकि कुरआन मजीद में, पारः ३, सूरः ३ की २८वीं आयत में है कि-मोमिनों को चाहिये कि मोमिनों के सिवा काफ़िरों को दोस्त न बनाएं और जो ऐसा करेगा, उस से खुदा का कुछ (अह्द) नहीं। हाँ, अगर इस तरीके से तुम उन (की बुराई) से बचाव की शक्ल निकालो (तो हरज नहीं)....(अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-८१) स्पष्ट है कि जाति के नाम हिन्दुओं को बाँटकर कमजोर करने के लिये ही मुसलमानों ने मुसलमानपरस्त जातिवादी नेताओं को समर्थन दे रखा है।

क्या अकबर महान् था ?

अकबर जिसकी सहिष्णुता के गुणगान गाये जाते हैं, वह भी हिन्दुओं की राजकुमारियों से विवाह करता रहा। उसने जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर आदि राज्यों की हिन्दू राजकुमारियों से विवाह किया। लेकिन अपनी शहजादी किसी हिन्दू राजा को नहीं दी। अकबर का दीन इलाही धर्म, जिसे मानने वाले उसके विशालराज्य में केवल दस बीस लोग ही थे, हिन्दुओं खासकर राजपूतों को मूर्ख बनाने का स्वाँग था। अकबर जन्म से लेकर मृत्यु तक मोमिन (मुसलमान) रहा। उसकी इस चालाकी को मुसलमान समझते थे। लेकिन हिन्दू धर्म के रक्षक

कुछ तथाकथित राजा, उसके शिकारी कुत्ते की भूमिका निभाते रहे, अपनी बहन-बेटियों को अकबर की अय्यासी के लिये पेश करते रहे। अगर इसी को उदारता और सहिष्णुता कहते हैं, तो नीचा दिखाना, अपमानित करना और गुलाम बनाना किसे कहते हैं? मेवाड़ के राणा प्रताप ने जब अकबर के लिये यह सब करना स्वीकार नहीं किया, तो मेवाड़ पर अकबर का नंगा नाच हुआ। हाँ, यह अवश्य है कि अन्य की अपेक्षा वह कुछ कम कट्टर था।

किसी हिन्दू लड़की को मुसलमान बनाकर शादी करना मुसलमानों में बड़ा ही शुभ और धर्म का काम माना जाता है। इसके लिये मुसलमान नौजवान सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। मुसलमान लड़के सुन्दर हिन्दू लड़कियों को प्रभावित करने के लिये बड़ी नम्रता व प्रेम दिखाते हैं, इससे सीधी साधी हिन्दू लड़कियाँ प्रभावित होकर उनके चंगुल में फँस कर मुसलमान बना ली जाती हैं। मुसलमान लड़कों द्वारा यह कार्य विशुद्ध कट्टर धार्मिक भावना से, हिन्दू समाज व लड़की के हिन्दू माँ-बाप को नीचा दिखाने के लिये किया जाता है। मौका पड़ने पर मुसलमान सदैव कुरआन के आदेश पर ही चलते हैं। जब पाकिस्तान बना तब वहाँ के मुसलमानों ने अपने हिन्दू दोस्तों, पड़ोसियों और मालिकों को खतम कर उनका सब कुछ हड़प लिया (कुछ अपवादों को छोड़कर)। आज भी भारत में प्रतिवर्ष दो लाख हिन्दू लड़कियाँ व औरतें बहला फुसलाकर या धमकाकर मुसलमान बना जी जाती हैं। शेष भारत की अपेक्षा केरल, कश्मीर और लद्दाख में हिन्दू लड़कियों को बड़ी तेजी से मुसलमान बनाया जा रहा है। जम्मू कश्मीर सरकार तो, हिन्दू और बौद्ध लड़कियों को मुसलमान बनाकर उनसे शादी करने वाले कश्मीरी मुस्लिम नौजवानों के लिये धर्मनिरपेक्षता का उदाहरण पेश करने का बहाना बनाकर, उन्हें इनाम दे रही है। मुल्लावादी मुसलमान आज भी बदले नहीं हैं, जरा भी नहीं, फर्क इतना है कि उनकी सरकार नहीं है, जरा वह बनने दीजिये, फिर देखिये इतिहास का वही नज़ारा। वह युद्ध का नारा लगाते हैं कि ''ईमान बाकी है, मुसलमान बाकी है, अभी तो करबला का मैदान बाकी है।'' मुल्लावादी मुसलमान मौका पाते ही हिन्दुओं की जान माल व औरतों को छोड़ेंगे नहीं। जो हिन्दू सोचते हैं कि ऐसा नहीं होगा, वह अपने को धोखा दे रहे हैं। क्या इनके ऐसा सोच लेने भर से यह खतरा टल जायेगा? क्या हम हिन्दुओं के धर्मनिरपेक्ष हो जाने से या हिन्दू की बात न करने से भारत का मुसलमान कट्टरता छोड़कर, कुरआन मजीद के आदेशों को मानना छोड़कर धर्मनिरपेक्ष हो जायेगा ? ऐसा सोचना दिन को रात समझना है।

मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ना धर्म का कार्य

कुरआन मजीद में पारः १९, सूरः २६ की ९४वीं आयत में है कि- तो वे गुमराह (यानी बुत और बुतपरस्त) औंधे मुंह दोज़ख़ में डाल दिये जायेंगे। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-५८९)

अर्थात् वे पथभ्रष्ट (मूर्तियाँ और मूर्तियों को पूजने वाले) दोनों औंधे मुँह नरक में डाल दिये जायेंगे। कुरआन मजीद के इन्हीं आदेशों को मानकर मुसलमान बादशाह, हिन्दू मन्दिरों और मूर्तियों को इस तरह तोड़ते रहे, जिससे कि हिन्दू

अपमानित हों। अलबेरूनी ने अपनी किताब 'तहकीक-ए-हिन्द' में लिखा है कि "महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मन्दिर के शिवलिंग का एक टुकड़ा गजनी की जामा मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा दिया। जिससे कि मुसलमान नमाजी उस (शिवलिंग) में अपने पाँव घिस कर कीचड़ और गन्दगी साफ कर सकें।" महमूद गजनवी ने भारत के मन्दिरों को ढूँढ़-ढूँढ़ कर लूटा व तोड़ा। मुसलमान बादशाह मन्दिर तोड़ने से पहले मन्दिर के अन्दर गाय कटवाते थे, फिर मूर्तियों के टुकड़े-टुकड़े कर मन्दिर को तोड़ देते थे। उसके बाद वह मन्दिर या तो मस्जिद में बदल दिया जाता अथवा मूर्तियों को तोड़कर शेष मन्दिर में थोड़ा परिवर्तन कराकर कोई असरदार मुसलमान को मरने के बाद उसमें दफन कर, मकबरा बना दिया जाता था। मूर्तियों को अपमानित करने के लिये उनके टुकड़े करके मस्जिदों की सीढ़ियों पर डलवा दिया जाता था, जिससे कि मुसलमानों के पैरों से वे मूर्तियाँ रोज कुचली जायें। औरंगजेब ने विश्वनाथ मन्दिर को तोड़ने के बाद मन्दिर की आधी दीवालों के ऊपर ही मस्जिद बनवा दी। यह इसलिये किया गया कि हिन्दू देखें और अपमानित हों। भारत की तमाम मस्जिदें ऐसे ही बनीं। यह मन्दिर बीच में कभी-कभी उस समय पुनः बन जाते थे। जब वहाँ का राज किसी हिन्दू को मिल जाता। लेकिन जैसे ही वह हिन्दू राजा मुसलमानों से हारता अथवा उनके हाथों मारा जाता, तो पुनः बने यह मन्दिर फिर से तोड़ दिये जाते। फिरोज तुगलक ने जगन्नाथ जी की मूर्ति को दिल्ली लाकर उसे आम जनता के सामने तरह-तरह से बहुत दिनों तक अपमानित कराया। मुसलमान बादशाहों ने मूर्तियों को तोड़वा कर उससे तौलने वाले बाँट बनवा दिये और कसाइयों में यह कह कर बँटवा दिया कि वह मूर्तियों के इन बाँटों से गाय का मांस तौला करें। उन्होंने मन्दिरों को तोड़ कर और मूर्तियों को अपमानित कर अपने धर्म के आदेशों का पालन किया। औरंगजेब ने दिल्ली का बादशाह बनते ही फर्मान (आज्ञा) जारी कर दिया कि पूरे देश के सभी मन्दिरों को तोड़ दिया जाय और उनके स्थान पर मस्जिदें बनवा दी जायें। संस्कृत पढ़ाने वाले स्कूल बन्द करवा दिये जायें तथा संस्कृत पढ़ने व पढ़ाने वालों को सख्ती से कुचल दिया जाये अथवा उनका कत्ल कर दिया जाये।

शेख हमदानी ने अपनी पुस्तक 'जखीरातुल मुलुक' में लिखा है कि "मुसलमानों के राज में कोई बुतखाना (मन्दिर) नहीं बनाया जा सकता। जो मन्दिर तोड़ दिये गये, उन्हें पुनः नहीं बनाया जा सकता। पुराने बने मन्दिरों (अगर वह कहीं बच गये हैं) में मुसलमान यात्री बिना किसी रोक-टोक के ठहर सकते हैं। काफिर हिन्दू अपने परिवार में किसी के बीमार होने या मरने पर जोर से नहीं रो सकेंगे। वे शंख, घंटा आदि नहीं बजायेंगे। यह नियम काफिर हिन्दुओं के लिये बने हैं, जिनका कड़ाई से पालन कराया जाता है।"

जियाउद्दीन बरनी ने अपनी पुस्तक "तारीख़ ए फ़िरोजशाही' में लिखा है कि एक बार दिल्ली के बादशाह सुल्तान अलाउद्दीन ख़िलजी ने अपने धार्मिक सलाहकार दिल्ली के क़ाजी अलाउलमुस्क से पूछा "काफिर हिन्दुओं से कैसा

व्यवहार करना चाहिये ?'' (क़ाजी का मतलब होता है मुसलमानो के धार्मिक कानूनों का ज्ञाता व न्यायाधीश) काज़ी अलाउलमुस्क़ ने उत्तर दिया ''काफिर हिन्दुओं को नजराना व शुकराना भुगतान करने वाला समझना चाहिये। (यानी जब कोई हिन्दू, मुसलमान अधिकारी के सामने आये, तो कुछ धन दे, यह हुआ नजराना अर्थात् मुँह देखाई और जब वापस जाने लगे, तो भी कुछ धन दे, यह हुआ शुकराना अर्थात दर्शन देने के लिये धन्यवाद।) अगर कर वसूल करने वाला मुसलमान अधिकारी, हिन्दू से चाँदी का सिक्का माँगे, तो वह हिन्दू बिना कोई प्रश्न पूछे अत्यन्त विनम्रता से सोने का सिक्का दे। यदि मुसलमान थूँकना चाहे, तो पास बैठा हिन्दू अपना मुँह खोलकर अपने मुँह के अन्दर थुकवा ले। काफिर हिन्दुओं को अधिक से अधिक अपमानित करना हमारा धार्मिक कर्तव्य है। हमारे धर्म का आदेश है कि इन काफिर हिन्दुओं को मुसलमान बना दो या हलाक (क़त्ल) कर दो। हिन्दुओं के लिये दो ही रास्ते हैं-इस्लाम या मौत (अर्थात या तो मुसलमान बनें अथवा मार डाले जायें) एक रास्ता और बचता है कि गुलाम बनाकर उन पर हुकूमत (राज) करने के लिये यदि उनका कत्ल न किया जाये, तो उनकी जान बचाने के बदले उनसे जिज़या कर लिया जाये। यह मुसलमानो की मर्जी पर है कि वह इन हिन्दुओं को मार डालें अथवा उनको जिन्दा छोड़कर बदले में जिज़या वसूल करें। हिन्दुओं से इतना कर लिया जाना चाहिये कि कर चुकाने के बाद हिन्दू के पास इतना धन ही बच पाये कि वह उससे किसी तरह गुजारा कर सकें।'' आगे बरनी लिखता है कि क़ाजी का यह उत्तर सुनते ही बादशाह सुल्तान अलाउद्दीन ख़िलजी खुशी से चिल्ला पड़ा ''ओह क़ाजी ! तू तो बहुत बड़ा विद्वान है, तूने जो कुछ कहा है, वह एकदम हमारे शरियत (धार्मिक कानून) के अनुसार है कि इन काफिर हिन्दुओं को दबाकर रखा जाये और उनको कुचल दिया जाये। अतः मैंने पहले ही आदेश दे दिये हैं कि इन हिन्दुओं के पास केवल गुजारे भर के लिये अनाज, दूध और दही बचे और उनके मन्दिरों को नष्ट करने के हुक्म भी हमने जारी कर दिये हैं।''

हिन्दू नौजवानों के साथ धोखा

आजकल इतिहास की जो नयी किताबें छापी जा रही हैं, उनमें रोमिला थापर जैसी लेखकों ने मुसलमानों द्वारा धर्म के नाम पर काफिर हिन्दुओं के ऊपर किये गये इन भयानक अत्याचारों को गायब कर दिया है। नकली धर्मनिरपेक्षता वादी नेताओं की शह पर झूठा इतिहास लिखकर एक समुदाय की हिंसक मानसिकता पर जानबूझ कर पर्दा डाला जा रहा है। इन भयानक अत्याचारों को सदियों से चली आ रही गंगा जमुनी संस्कृति, अनेकता में एकता और धार्मिक सहिष्णुता बताकर नौजवान पीढ़ी को धोखा दिया जा रहा है, उन्हें अंधकार में रखा जा रहा है। भविष्य में इसका परिणाम बहुत खतरनाक होगा, क्योंकि नयी पीढ़ी ऐसे मुसलमानों की मानसिकता न जानने के कारण उनसे असावधान रहेगी और खतरे में फँस जायेगी।

मुल्लावादी मुसलमानों का हिन्दुओं के साथ विश्वासघात

काफिर हिन्दुओं को अपना धार्मिक दुश्मन मानने वाले कट्टर मुसलमानों पर जिस हिन्दू ने विश्वास किया उसे अन्त में धोखा ही मिला। जैसे मोहम्मद गोरी, पृथ्वीराज चौहान से संधि की बात कर रहा था और पीछे से अचानक हमले की तैयारी भी। पृथ्वीराज ने मोहम्मद गोरी पर विश्वास किया, जिसका परिणाम पृथ्वीराज को मौत के रूप में भुगतना पड़ा। मेवाड़ के रांणा रत्नसिंह ने अलाउद्दीन खिलजी पर विश्वास किया, जिसके परिणामस्वरूप रांणा रत्नसिंह को अपना सिर कटवाना पड़ा और उसकी इतिहास प्रसिद्ध परम सुन्दर पत्नी पद्मिनी देवी को अपनी इज्जत बचाने के लिये जिन्दा ही आग में जल कर जौहर करना पड़ा। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर में योग विद्या सीखने वाले एक फकीर फजल अब्बास ने सन् १५२८ में मुगल बादशाह बाबर को श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर तोड़ने को कहकर अपने गुरु और मन्दिर के प्रमुख महन्त योगिराज श्यामानन्द जी को विश्वासघात की बेमिसाल गुरुदक्षिणा दी। जिसमें लगभग पौने दो लाख हिन्दू मारे गये (लखनऊ गजेटियर पेज ३६१)। प्रमुख महन्त के एक दूसरे शिष्य जलालशाह ने हिन्दुओं के खून से गारा सान कर लखौरी ईंटों से बाबरी मस्जिद की नींव डाली (बाराबंकी गजेटियर)। विश्वासघात का इससे बड़ा उदाहरण दूसरा न मिलेगा। अफजल खाँ, शिवाजी से दोस्ती के लिये हाथ बढ़ा रहा था, तो दूसरे हाथ से शिवाजी की हत्या के लिये खंजर भी निकाल रहा था। शिवाजी ने अफजल खाँ पर विश्वास नहीं किया था, इसी सतर्कता के कारण बच गये। सवाई जयसिंह ने औरंगजेब पर विश्वास किया, जिसका बदला औरंगजेब ने अपने इस सेनापति जयसिंह को जहर दिलवाकर उसकी मौत के रूप में चुका दिया। इतिहास में ऐसी सैकड़ों घटनाएँ हैं, जिसमें मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ विश्वासघात किया। कश्मीर के महाराजा हरीसिंह की सेना में मुसलमान सैनिक अधिक थे। सन् १९४७ में कश्मीर पर पाकिस्तानी कबायली मुसलमानों के हमले के समय महाराजा हरीसिंह के विश्वासपात्र वह मुसलमान सैनिक अपने ही हिन्दू अफसरों को गोली मार कर पाकिस्तानी कबायली मुस्लिम सेना से जा मिले। सन् १९९९ में पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ इधर अटल बिहारी बाजपेयी को गले लगा रहे थे और उधर कश्मीर में कारगिल की पहाड़ियों में कट्टर मुसलमान आतंकवादियों की घुसपैठ करा रहे थे। बाजपेयी ने नवाज शरीफ पर विश्वास किया, परिणाम कारगिल का युद्ध आप सब ने देखा। जब सारा भारत कारगिल में लड़ रहे भारतीय सैनिकों की हिम्मत बढ़ा रहा था, तब इस देश के बड़े मुल्ला व कट्टर मुस्लिम नेता खामोश थे, ऐसा क्यों ? क्योंकि मुल्लावादी मुसलमानों को राष्ट्र की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। उनके लिये धर्म पहले है, राष्ट्र बाद में। आज कश्मीर के पुलिस प्रशासन में मुसलमानों की संख्या अधिक है, जो हिन्दुओं की हत्या करने वाले मुस्लिम आतंकवादियों की ओर से अपनी आँखें बन्द कर उनका मौन समर्थन करते हैं। इसीलिये कश्मीर में मुस्लिम आतंकवाद पर अंकुश नहीं लग रहा। हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई का नारा लगाकर मुसलमानों पर अतिविश्वास करने वाले कश्मीरी हिन्दू,

आज कश्मीर में या तो हिंसावादी मुसलमानों के हाथों मारे जा रहे हैं अथवा वहाँ से किसी तरह अपनी जान बचा कर भाग रहे हैं। सच्चाई की ओर से अपनी आँखें बन्द कर लेने वालों का यही हाल होगा। आज हिन्दू जिस तरह इस खतरे की ओर से आँखें बन्द कर, जाति के नाम पर आपस में लड़कर बँट रहे हैं, इससे निकट भविष्य में सम्पूर्ण भारत के हिन्दू इस खतरे की चपेट में आने वाले हैं।

पाकिस्तानी जासूसी संस्था आई०एस०आई० के कारनामे

पाकिस्तानी जासूसी संस्था आई० एस० आई० के इशारे पर काम करने वाले मुस्लिम आतंकवादियों के अड्डे जम्मू कश्मीर, पंजाब, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हैदराबाद, केरल, तमिलनाडु, बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, आसाम समेत पूरे देश तथा नेपाल में फैल चुके हैं। जहाँ अत्याधुनिक स्वचालित रायफलें व पिस्तौलें जमा की जा रहीं है। बम विस्फोट कराने वाला आर.डी.एक्स. लाया जा रहा है। (देखें इंडिया टुडे २५ अगस्त १९९९) साथ ही इन्हीं अड्डों के माध्यम से मुस्लिम माफिया सरगनाओं द्वारा नशीली दवाइयाँ भारत भेजी जा रही हैं। धनी हिन्दुओं के बच्चों को इन नशीली दवाओं का आदी बना कर उनसे धन निचोड़ कर और पाकिस्तान में छपे नकली नोटों को भारत में भेजकर तथा मुस्लिम माफिया सरगनाओं द्वारा जबरन धन वसूली, हवाला, सट्टा आदि से मिलने वाली अरबों रुपयों की कमाई, आई० एस० आई० द्वारा देश विरोधी कार्यों पर खर्च करने के लिये मुसलमान आतंकवादियों में बाँटी जा रही है।

भारत के हिन्दुओं से यह कमाई करने वाले मुस्लिम माफिया सरगनाओं को आई०एस०आई० खुला सहयोग और संरक्षण दे रही है। यहाँ तक कि इन मुस्लिम माफिया सरगनाओं के विरोधी उन हिन्दू माफिया सरगनाओं की, जो देशभक्ति की भावना से भर गये हैं, हत्यायें भी यह आई०एस०आई० करवा रही है। आई०एस०आई० उनकी जबरन धन वसूली और नशीली दवाओं की तस्करी में पूरी मदत कर रही है, जिससे हिन्दुओं के पैसे से ही भारत तथा भारत के हिन्दुओं को नष्ट किया जा सके। यह मुस्लिम माफिया सरगना आई०एस०आई० की सुरक्षा में भारत, पाकिस्तान, दुबई, मलेशिया, दक्षिण अफ्रीका, नेपाल और अफगानिस्तान आदि देशों में अराम से रहकर अपना काम पूरा कर रहे हैं। जबकि हिन्दू माफिया भागे-भागे फिर रहे हैं और आई०एस०आई० उनका पीछा कर रही है।

मस्जिदों, मुसलमानी मदरसों, मुल्ला-मौलवियों, मुस्लिम माफिया सरगनाओं और आई० एस० आई० का गठजोड़ पूरे देश में तैयार किया जा रहा है। आई० एस० आई० के मुल्ला इस देश के मुसलमानों को सिखाते हैं कि कुरआन के अनुसार अल्लाह का हुक्म है कि काफिर हिन्दुओं को तबाह व बर्बाद कर भारत को मुसलमानी देश दारूलइस्लाम बना डालो अन्दर ही अन्दर गुप्त रूप से तैयारियाँ चल रहीं हैं। भारत में की जाने वाली इन सारी आतंकवादी योजनाओं के मुख्य अड्डे, संसार का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल व मुम्बई बन चुके हैं। मुसलमानों द्वारा किये जा रहे ये सब कार्य विश्वव्यापी इस्लामी आन्दोलन का एक हिस्सा हैं, भविष्य में जिससे पूरी दुनियाँ प्रभावित होने वाली है।

इस प्रकार आई० एस० आई० भारत व भारत के काफिर हिन्दुओं को नेस्तनाबूद करने के लिये साम, दाम, दंड और भेद की नीति अपना रही है। लेकिन भारत के हिन्दू बुद्धिजीवी और नेता नैतिकता का ढोंग लिये बैठे हैं। यह जानते हुए भी कि मुल्लावादी मुसलमान आई०एस०आई० के हाथों खेल रहे हैं, फिर भी धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इस सच को कहने और उनके विरुद्ध कुछ करने को तैयार नहीं है। उल्टा उन्हें देश भक्त कह रहे हैं। ठीक यही स्थिति सन् १९४७ के पहले थी। जब कुछ देश भक्त चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे थे कि ''मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में मुसलमान अलग देश माँगने जा रहे हैं।'' उस समय भी धर्मनिरपेक्षतावादी कांग्रेसी हिन्दू नेता कह रहे थे कि ''ऐसा कहने वाले साम्प्रदायिक लोग हैं। जो हिन्दू-मुस्लिम एकता को तोड़कर आपस में घृणा फैलाना चाहते हैं। मुसलमानों की देश भक्ति पर सन्देह नहीं किया जा सकता। इस देश के सभी मुसलमान देश भक्त हैं।'' कांग्रेसी हिन्दू नेताओं की इस अनदेखी का परिणाम अलग देश पाकिस्तान के रूप में सामने आया। भले ही संयोग वश (इन नेताओं की दूरदर्शिता के कारण नहीं) मुस्लिम आबादी बट जाने के कारण वह आज हमारे अनुकूल है। सन् १९४७ की तरह आज भी आई०एस०आई० के मुल्लावादी मुसलमानों की देश भक्ति पर संदेह नहीं किया जा रहा। जिसका परिणाम बहुत ही खतरनाक हो सकता है। इस देश के हिन्दू नौजवान इसे समझें। क्योंकि इन नेताओं की करतूतों का परिणाम भविष्य में उन्हें ही झेलना पड़ेगा।

भारत के अन्दर आई०एस०आई० के संगठनात्मक स्वरूप और उसकी गतिविधियों का विश्लेषण करने के बाद स्पष्ट रूप से समझ में आता है कि जैसे १९७१ के युद्ध में पूर्वी पाकिस्तान में मुक्तिवाहिनी और भारतीय सेना के बीच पाकिस्तानी सेना फँस गयी थी। जिसके कारण पूर्वी पाकिस्तान (बंगला देश) पाकिस्तान के हाथों से निकल गया था। भविष्य में पाकिस्तान द्वारा पूर्ण युद्ध छेड़े जाने पर पाकिस्तान के कट्टर मुल्लावादी सैनिक शासक शायद उसी तर्ज पर इधर पूरे भारत में फैले आई०एस०आई० के लाखों एजेन्टों, तमाम आतंकवादी मुस्लिम संगठनों और आई०एस०आई० द्वारा तैयार किये जा रहे मुल्लावादी नौजवानों के गठजोड़ तथा उधर पाकिस्तानी सेना के बीच भारतीय सेना को फँसाने का कुचक्र रच रहे हैं। इस तरह वह बंगला देश के बनने का बदला लेने के साथ-साथ भारत को दारूलइस्लाम बनाने की मोहम्मद गोरी जैसी योजना पर गंभीरता' से कार्य कर रहे हैं। दूसरी तरफ भारत के सभी धर्मनिरपेक्षतावादी मुस्लिमपरस्त नेता इसकी जानबूझकर अनदेखी करते हुए, उनकी जबरजस्त चमचागीरी करते हुए उनके हौसले बुलन्द कर रहे हैं।

मुल्लावादी मुसलमानों को खुश करके, मुस्लिम वोट पाने की लालच में यह नेता इस देश में धर्मनिरपेक्षता के नाम पर तबाही और बर्बादी लाना चाहते हैं। लोकतंत्र में विश्वास रखने वाले अंग्रेजों ने हिन्दुओं के बहुसंख्यक होने के कारण भारत का राज हिन्दुओं को सौंपा था। लेकिन हिन्दू उस राज़ को थाली में परोस कर बड़ी धूमधाम के साथ मुल्लावादी मुसलमानों को सौंप कर झंझट से छुटकारा

पा लेना चाहते हैं।

नकली धर्मनिरपेक्षतावादी नेताओं की कायरता से करोड़ों बंगलादेशी मुसलमान भारत में घुस आये हैं। जो हत्या, लूट-पाट और आतंकवाद के साथ-साथ मुस्लिम वोट बैंक भी बढ़ा रहे हैं तथा इसी आई० एस० आई० के इशारे पर काम कर रहे हैं। आई० एस० आई० के सहयोग से यह बंगलादेशी मुसलमान, पैसे पर बिक जाने वाले भ्रष्ट अधिकारियों को घूस देकर भारत में सामूहिक रूप से घुस आते हैं। इन बंगलादेशी मुसलमानों की घुसपैठ से आसाम तथा बिहार और पश्चिम बंगाल के बहुत से लोकसभा क्षेत्रों में मुसलमान वोटर, हिन्दू वोटरों से अधिक हो चुके हैं। वह दिन दूर नहीं, जब यह बंगलादेशी मुसलमान पूरे आसाम, बिहार और पश्चिम बंगाल में वोटों का संतुलन पूरी तरह से मुसलमानों के पक्ष में कर, सत्ता की लगाम अपने हाथों में ले लेंगे। ये बंगलादेशी मुसलमान लाखों की संख्या में मुम्बई और दिल्ली में भी झोपड़िया डाल कर बस गये हैं। इनकी झोपड़ियाँ रेलवे के पुलों, पेट्रोल पाइपलाइन के पास, रेलवे लाइन के पास तथा सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण जगहों पर हैं। जो आई० एस० आई० के इशारे पर कभी भी पूरे देश में एक साथ भारी तोड़ फोड़ कर सकते हैं। विशेष कर युद्ध के समय सैनिकों तथा सैनिक साजो सामान के आने जाने में भारी बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेताओं की शह पर इनके हौसले इतने बढ़ गये हैं कि दिल्ली में लाल किले में बम विस्फोट के अभियुक्त मो० इसहाक को इनकी भीड़ ने २४ जून, सन् २००० को दिल्ली के एक थाने पर हमला करके छुड़ा लिया। जातिवादी, धर्मनिरपेक्षतावादी मुसलमानपरस्त कांग्रेसी और गैर कांग्रेसी नेता तथा कम्युनिष्ट इन बंगलादेशी मुसलमान घुसपैठियों के संरक्षक बन गये हैं। जो कहते हैं कि उन्हें भारत में रहने दो, वे हमारे भाई हैं। वोट के लिये देश के साथ इतनी बड़ी गद्दारी दुनियाँ में कहीं भी नहीं है। इन्हीं नेताओं के कारण हिन्दू वास्तव में इतिहास के सबसे बड़े संकट की ओर बढ़ रहे हैं। हिन्दू मेरी इस चेतावनी को बड़ी गंभीरता से लें। इन्हीं नेताओं की अनदेखी के कारण देश में प्रतिवर्ष आठ लाख हिन्दुओं को मुसलमान व ईसाई बनाया जा रहा है। एक लाख ईसाई धर्म प्रचारक सारे देश में हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन में लगे हुए हैं, इसके लिये हजारों करोड़ रुपये विदेशों से आ रहें हैं।

असम के राज्यपाल श्री एस० के० सिन्हा ने राष्ट्रपति श्री के० आर० नारायणन को एक रिपोर्ट पेश की है। रिपोर्ट (८ नवम्बर, १९९८) के अनुसार राज्यपाल ने आसाम में मुस्लिम वोटरों की संख्या अत्यधिक बढ़ जाने पर चिन्ता प्रकट की है। राज्यपाल की रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान की जासूसी संस्था आई० एस० आई० आसाम में बंगलादेशी मुस्लिम आतंकवादियों का आन्दोलन आगे बढ़ा रही है। इसके लिये आसाम के मुसलमान लड़के अफगानिस्तान में आतंकवाद की ट्रेनिंग लेने भेजे गये हैं। राष्ट्रपति का ध्यान इस ओर भी आकर्षित किया गया है कि आसाम में बंगलादेशी घुसपैठी मुसलमानों को तो वोट देने का अधिकार मिल गया है, पर पाकिस्तान से आये हुए एक लाख हिन्दू शरणार्थियों को जिनमें सिक्ख

भी हैं, अभी तक वोट देने का अधिकार नहीं मिल सका है। (आब्जरवर ३–१–९९) लेकिन इस देश का तथा हिन्दुओं का दुर्भाग्य है कि ऐसी रिपोर्ट (जिसमें मुसलमानों के विरुद्ध कुछ हो) इस देश में कूड़ेदान में फेंक दी जाती है। दुश्मन पाकिस्तान इन्हीं कमजोरियों और लापरवाहियों का फायदा उठा रहा है।

अमेरिकन कमेटी रिपोर्ट सन् १९९३ में कहा गया है कि ''पाकिस्तान की आई० एस० आई० का उद्देश्य हिन्दू समाज की जाति, भाषा और प्रान्त की फूट का लाभ उठा कर सारे भारत पर कब्जा करना है।''

अमेरिकन कांग्रेस के आतंकवाद पर विशेषज्ञ योसोफ बोडान इस्काई कहते हैं कि ''मुसलमानों का उद्देश्य अफगानिस्तान से इंडोनेशिया के बीच पड़ने वाले काफिरों के देश भारत, नेपाल, वर्मा और फिलिपीन्स, आदि को मुसलमानों का देश बनाना है। जिसकी जिम्मेदारी पाकिस्तान को दी गयी है, इसके लिये दुनिया के धनी मुस्लिम देश, पाकिस्तान को पैसा दे रहे हैं।''

यह सारी बातें हमने विभिन्न समाचार पत्रों से ली हैं जैसे टाइम्स आफ इंडिया दि० २३–७–९३, १–४–९४, ५–८–९४, १९–२–९६ आब्जर्वर दि० २०–११–९३, १५–९–९५ आर्गनाइजर दि० २७–८–९५।

विश्वव्यापी मुस्लिम आतंकवाद

आज पूरी दुनियां में मुसलमानों का आतंक बढ़ता जा रहा है। सोमालिया, सूडान, अल्जीरिया, तुर्की, फिलिपींस, अफ़गानिस्तान, ईरान, सरबिया, बोस्निया, अल्बानिया, लीबिया, चेचेन्या, दागिस्तान, कारगिस्तान, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान तथा कई अरब देश मुस्लिम उग्रवाद के आधुनिक अड्डे हैं, जिनका सरदार पाकिस्तान है। सऊदी अरब का खरबपति ओसामा बिन लादेन बन्दूकों और बमों के बल पर चारो ओर तबाही मचाकर मुसलमानी धर्म इस्लाम का झंडा सारी दुनियाँ में ऊँचा करने निकल पड़ा है। वह इसमें कितना सफल होता है, यह न देखकर, देखिये यह कि इस्लाम के लिये अपने को तथा अपनी खरबों की संपत्ति को कुरबान कर देने का वा मर मिट जाने का ओसामा बिन लादेन और उनके साथियों में कितना जूनून है, उनकी आक्रामकता व मानसिकता कैसी है? (देखें इंडिया टुडे ६ अक्टूबर १९९९) जिहाद जारी रखने के लिये ओसामा बिन लादेन को सऊदी अरब के मुसलमान करोड़ो डालर चन्दा दे रहे हैं। टाइम्स आफ इंडिया १२–४–१९९८ के अनुसार ''भारत के मुल्लावादी मुसलमान अफगानिस्तान की कट्टरवादी मुस्लिम तालिबान सरकार के पूर्ण समर्थक हैं, यह भारत की सुरक्षा के लिये बड़ी खतरनाक बात है।'' इस बात की पूरी सम्भावना है यदि इस तरह के मुसलमान आतंकवादी अफगानिस्तान में सफल हो गये तो, उसके बाद वह कश्मीर की ओर दौड़ पड़ेंगे, फिर शेष भारत उनका निशाना होगा। आश्चर्य यह है कि आम मुसलमानों को रोटी नहीं, इस्लाम चाहिये। इसीलिये उनको रोटी दिखाकर नहीं बदला जा सकता।

माफिया सरगना दाऊद इब्राहीम द्वारा हिन्दुओं की लूट

इसी पुस्तक में दिया जा चुका है कि काफिर हिन्दुओं का काम है कमा कर माल इकट्ठा करना और मुसलमानों का काम है उसे लूटकर खाना और खुदा से

डरते रहना। यह लूट का माल उनके लिये पवित्र प्रसाद की तरह है। इसीलिये आज करांची (पाकिस्तान) का माफिया सरगना दाऊद इब्राहीम हत्या की धमकी देकर, मुम्बई के धनी हिन्दुओं से सालाना सैकड़ों करोड़ रुपये की हफ्ता वसूली कर रहा है। (इंडिया टुडे) बड़े बड़े हिन्दू उद्योगपति, बिल्डर, व्यापारी, फिल्म निर्माता, निर्देशक व कलाकार दहशत के कारण चुपचाप उसे करोड़ो रूपये पहुँचा रहे हैं। समाचार पत्रों के अनुसार उसकी इस जबरन धन वसूली का जाल भारत के अन्य बड़े शहरों में भी फैल रहा है। उद्योगपतियों, व्यापारियों, फिल्म निर्माता व निर्देशकों और कलाकारों तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के आपसी विवादों पर दो टूक फैसला, करांची में बैठा यही दाऊद इब्राहीम करता है और बदले में भारी रकम वसूल करता है। उसके फैसले को बिना कोई प्रश्न किये अन्तिम रूप से तुरन्त मानना पड़ता है। भारत में यह दाऊद इब्राहीम कानून से ऊपर है, उसके मुँह से निकला हर वाक्य ही कानून है। दाऊद इब्राहीम अधिकांश फिल्म अभिनेता व अभिनेत्रियों में से जिसको चाहे, जहाँ चाहे, जब चाहे बुला सकता है। उनको मौत के डर से जाना ही पड़ता है।

इतना विशाल भारत देश तथा भारत में ८० करोड़ हिन्दू और हिन्दुओं की तथाकथित धर्मनिरपेक्ष सरकारें, फिर भी करॉंची (पाकिस्तान) में बैठा दाऊद इब्राहीम पूरे भारत में बड़े धनी हिन्दुओं को डराये है और भारत की आर्थिक राजधानी मुम्बई को उंगलियों पर नचा रहा है। उसकी गिरफ्त में पूरा भारत इस हद तक आ चुका है कि उसके प्रतिद्वन्दी हिन्दू माफिया सरगना अपने ही देश भारत में रहना खतरनाक समझते हैं। पाकिस्तान का एक अकेला मुसलमान दाऊद इब्राहीम पूरे भारत पर छाया हुआ है। इस देश के धनी हिन्दुओं से हजारों करोड़ रुपये टैक्स वसूल कर अपना अलग कानून लागू किये है। इसके बाद भी इस देश के नेता शेखी बघारते रहते हैं। अभी यह हाल है, तो पच्चीस बाद क्या होगा ? इसे सोंचिये और बार-बार सोंचिये। भारत के हिन्दू नौजवानों के सर पर भविष्य का इतना बड़ा खतरा मँडरा रहा है, फिर भी उनको, विशेषकर अधिक पढ़े लिखे और धनी हिन्दुओं को यह खतरा दिखाई ही नहीं दे रहा। वह इस विषय पर चर्चा करना तो दूर, इसे सुनने तक से डरते हैं। इसका दुष्परिणाम उन्हें भुगतना पड़ेगा। हिन्दू 'आज' से डरते हैं। लेकिन 'भविष्य' से नहीं डरते। जबकि होना उल्टा चाहिये कि 'आज' तो सामने है, अतः उसका साहस से डटकर मुकाबला करना चाहिए और भविष्य से डरना चाहिए। क्योंकि भविष्य से डरने वाला व्यक्ति कभी कमजोर नहीं होता। वह अपने को हर प्रकार से मजबूत रखता है। अतः वह संकट में नहीं फँसता।

फिजी देश में हिन्दुओं की बर्बादी

हिन्दुओं की इन्हीं कमजोरियों के कारण उनकी बर्बादी के ताजा उदाहरण फिजीदेश और कश्मीर के हिन्दू हैं। फिजी देश में ४४ प्रतिशत भारतीय हिन्दू हैं। शेष फिजी के मूल निवासी ईसाई हैं। लेकिन सेना में भारतीय केवल १ प्रतिशत और ९९ प्रतिशत फिजी मूल के लोग हैं। अर्थात् बन्दूक की ताकत फिजी मूल के

ईसाईयों के पास है। फिजी मूल के निवासियों ने सेना की बन्दूकों के जोर पर सन् १९८७ में भारतीय मूल के लोगों के प्रभुत्व वाली सरकार पलट दी और भारतीयों के वोट देने के अधिकार छीन लिये। इसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय दबाव में भारतीय मूल के लोगों को १९९७ में पुनः वोट का अधिकार मिला। तब सन् १९९९ में हुये चुनावों में भारतीय मूल के लोग पुनः सत्ता में आये। लेकिन भारतीय मूल के प्रधानमंत्री श्री महेन्द्रपाल चौधरी ने खतरे की जड़ सेना में भारतीयों की भरती कर शक्ति सन्तुलन नहीं बनाया। हिन्दुओं की पुरानी आदत के अनुरूप प्रधानमंत्री श्री महेन्द्रपाल चौधरी खतरे की ओर से अपनी आँखें बन्द कर चुपचाप बैठे रहे। उनकी इस असावधानी से जब खतरा नाक के पास तक पहुँच गया, तो उन्होंने इस खतरे से निपटने की जिम्मेदारी उन्हीं फिजी मूल के लोगों को दे दी, जो इस षड़यन्त्र में शामिल थे।

इंडिया टुडे ६ सितम्बर सन् २००० के अंक में श्री महेन्द्रपाल चौधरी के शब्द हैं कि "हमने जोखिम आंकने और उचित कारवाई का काम गृह मंत्रालय को सौंप दिया था। लेकिन अब हमें पता चला है कि पुलिस आयुक्त और सेना के कुछ अधिकारी भी (इस तख्ता पलट में) शामिल थे। वे आश्वासन देते रहे कि ये बस अफवाह है और चिन्ता की कोई बात नहीं है। लिहाजा हम कुछ नहीं कर सके।"

इस तरह फिजी के मूल निवासी ईसाईयों ने पुनः केवल ९ बंदूकधारियों के बल पर फिजी में भारतीय मूल के लोगों की सरकार को उखाड़ फेंका। षड़यन्त्र में शामिल सारी सेना और पुलिस केवल तमाशा देखती रही। पूरे फिजी में भारतीय मूल के हिन्दू लूट लिये गये। वह जान बचाकर जंगलों और गन्ने के खेतों में जा छिपे। फिजी के हिन्दू यह देखकर भौचक्के थे कि उनके पड़ोसी फिजी के मूल निवासी जो कल तक उनके साथ बैठकर चाय पीते थे, वही उनको लूट रहे थे और पीट रहे थे।

ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि हिन्दू अपनी धार्मिक कायरता के कारण सोंचते हैं कि हम किसी के साथ हिंसा नहीं करेंगे, तो कोई हमारे साथ भी हिंसा नहीं करेगा। जबकि व्यवहार में, यथार्थ में ऐसा नहीं है। इस तरह की असावधानी और कमजोरी दुष्ट लोगों को हिंसा करने के लिये उकसाती है।

ठीक यही स्थिति कश्मीर की है। जहाँ का मुस्लिम प्रशासन आतंकवादियों के साथ है और धोखा देने के लिये कहता है कि सब कुछ ठीक है। इसी तरह आई० एस० आई० के सहयोग से शेष भारत का हिन्दू भी चारो ओर से मुल्लावादियों द्वारा घेरा जा रहा है। लेकिन मुस्लिम वोट के लालची नेता आँखें बन्द कर कह रहें हैं कि सब कुछ ठीक है, चिन्ता की कोई बात नहीं है। इसका परिणाम बहुत ही खतरनाक आने वाला है, जब यह नेता भी कहेंगे कि अफसोस हम कुछ न कर पाये।

भारतीय तालिबान (स्टूडेन्ट्स इस्लामिक मूवमेन्ट ऑफ इंडिया)

नवम्बर १९८० में मुम्बई के बान्द्रा स्थित कम्युनिटी हाल में भारत के मुसलमान विद्यार्थियों (तालिबानों) के एक खतरनाक संगठन स्टूडेन्ट्स इस्लामिक मूवमेन्ट ऑफ इन्डिया (एस० आई० एम० आई०) के मुसलमान छात्रों ने कसम

खायी कि ''अल्लाह ताला को सामने रख कर हम कसम खाते हैं कि हम हिन्दुस्तान में बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) को सहन नहीं करेंगे तथा भविष्य में हर मूर्ति के टुकड़े टुकड़े करके दिखा देंगे। हम भारत को इस्लामिस्तान में बदलकर रहेंगे।'' (पाञ्जन्य, १-४-८४)। अफगानिस्तान में पाकिस्तानी जासूसी संस्था आई०एस०आई० के सहयोग से अफगानी तालिबानों (मुसलमान विद्यार्थियों) ने भयानक लड़ाई लड़कर, अफगानी सेना को हराकर, वहाँ की राजसत्ता पर कब्जा कर कट्टरतम् इस्लामी शासन स्थापित कर दिया। अफगानी तालिबानों की इस बड़ी सफलता से, भारत में इस स्टूडेन्ट्स इस्लामिक मूवमेन्ट आफ इंडिया (सिमी) के तालिबान (अर्थात् मुसलमान विद्यार्थी) बड़े ही उत्साहित हैं, जो आई० एस० आई० के सहयोग से भारत में भी ऐसा ही कर डालने का सपना देखने लगे हैं। इसी कारण भविष्य में 'सिमी' भारत का यह सबसे खतरनाक संगठन होने वाला है।

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला २५.९.२००० के अनुसार २४.९.२००० को इलाहाबाद में स्टूडेन्ट्स इस्लामिक मूवमेन्ट ऑफ इंडिया (सिमी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा० शाहिद बद्र ने कहा कि ''सिमी अल्लाह की जमीन पर अल्लाह की हुकूमत कायम करना चाहती है।'' पढ़ने में यह कितना धार्मिक और न्यायोचित लग रहा है। लेकिन इसका वास्तविक अर्थ उतना ही खतरनाक और भयावह है। इस्लाम की जानकारी न रखने वाले यह समझ लें कि अल्लाह की हुकूमत कायम करने का अर्थ-अल्लाह द्वारा भेजी गयी कुरआन के आदेशों के अनुसार शासन करना है, दारूलहरब (काफिर हिन्दुओं के राज) को दारूल इस्लाम (मुसलमानों का राज) बनाना है। जिस शासन में काफिर हिन्दुओं को या तो मार डाला जाय अथवा मुसलमान बना लिया जाय। लेकिन अपनी गुलामी कराने के लिये जिन काफिरों को जिन्दा छोड़ दिया जाय, उनको हर प्रकार से कुचल कर रखा जाय और उन्हें अपमानित किया जाय। इस देश में मुसलमानों के शासनकाल में मुस्लिम बादशाहों ने अल्लाह की हुकूमत ही कायम कर रखी थी।

जो लोग सोचते हों कि यह पहले की बात है, अब दुनिया आगे है, सभ्य है अतः अब ऐसा नहीं होगा। ऐसे लोग जान ले कि मुस्लिम शासन (दारूलइस्लाम) में सत्ता की वास्तविक नकेल मुल्लावादी मुसलमानों के हाथों में रहती है। पाकिस्तान और अफगानिस्तान जैसे उदाहरण सामने हैं। सऊदी अरब, ईरान, ईराक, लीबिया, सूडान आदि सभी ५३ मुस्लिम देश मुल्लावादी मुसलमानों के पूर्ण प्रभाव में है। अफगानिस्तान में तालिबान (मुस्लिम छात्र) अल्लाह की हुकूमत ही कायम किये हुए हैं। भारतीय मुल्लावादी मुस्लिम छात्रों का संगठन स्टूडेन्ट्स इस्लामिक मूवमेन्ट ऑफ इंडिया भी आई०एस०आई० के सहयोग से भारत में यही करके भारतीय तालिबान बनना चाहता है।

वास्तव में सबसे बड़ा खतरा यह है कि मुल्लावादी मुसलमान, जो धार्मिक भाषा बोलते हैं, उसे हिन्दू समझ ही नहीं पाते। क्योंकि वह कुरआन और इस्लाम की जानकारी न तो रखते हैं और न ही रखना चाहते हैं। कितनी बेतुकी बात है कि किसी का धर्म, आप सबको समाप्त करने का आदेश देता है और आप उसे

जानते ही नहीं तथा जानना भी नहीं चाहते। अगर जानेंगे नहीं, तो सतर्क कैसे होंगे? अगर सतर्क नहीं होंगे, तो बचेंगे कैसे ?

इसी 'सिमी' ने पोस्टर निकाले हैं जिसमें उर्दू में लिखा है कि 'इलाही...! भेज दे महमूद को' और दूसरे पोस्टर में अंग्रेजी में लिखा है कि 'वेटिंग फार गजनवी' अर्थात् 'गजनवी के लिये प्रतीक्षा' अन्त में विराम चिन्ह की जगह तीन मिसाइलें खड़ी हैं। जिसकी फोटो ४ अक्टूबर, २००० की हिन्दी की इंडिया टुडे में भी पेज ३७ पर देखी जा सकती है। अंग्रेजी का यह पोस्टर दोहरे अर्थ वाला है। एक तो, इस देश में जिहाद करके काफिर हिन्दुओं को और उनके मन्दिरों को सत्रह बार नष्ट करने वाले तथा लाखों सुन्दर हिन्दू लड़कियों और औरतों को उठा ले जाने वाले महमूद गजनवी जैसे व्यक्ति की बेसब्री से प्रतीक्षा है, 'सिमी' को। खड़ी मिसाइलों के कारण दूसरा अर्थ निकलता है कि पाकिस्तान की नवनिर्मित लम्बी दूरी तक मार करने वाली गजनवी मिसाइलों के भारत में गिरने का बेसब्री से इन्तजार कर रहे हैं, 'सिमी' के आत्मघाती मुस्लिम छात्र। ध्यान रहे कि यह गजनवी और गोरी मिसाइलें परमाणु बम से लैस हैं, जिनको भारत के सभी बड़े शहरों की ओर लक्ष्य करके तैयार खड़ा रखा गया है। जिनके बारे में बड़बोले पाकिस्तानी परमाणु वैज्ञानिक अब्दुल कादिर खान का दावा है कि वह गजनवी और गोरी मिसाइलों से भारत के सभी बड़े शहरों को तीन-तीन बार पूरी तरह से नष्ट कर सकते हैं। अर्थात् 'सिमी' की इच्छा है कि भारत के सभी काफिर हिन्दू मारे जायँ साथ ही वह भी शहीद हो जायँ। (क्योंकि बम तो हिन्दू-मुसलमान पहचानता नहीं कि हिन्दुओं को मारे और मुसलमानों को छोड़ दे)

ऐसे खतरनाक विचारों को साक्षात् प्रदर्शित करने वाले 'सिमी' के भारतीय तालिबान, हिन्दुओं को धर्मनिरपेक्ष बने रहने का पाठ पढ़ाते हैं और जब उनके विरुद्ध कुछ जागरूक पुलिस अधिकारियों ने कार्रवाई की, तो वह अपने को निर्दोष बता रहे हैं। (इस्लाम की परिभाषा के अनुसार वह निर्दोष ही हैं) कांग्रेस और कम्युनिष्ट सहित सभी नकली धर्मनिरपेक्षतावादी और जातिवादी पार्टियाँ उनको निर्दोष करार देने के लिये मैदान में कूद पड़ी हैं। इसके लिये उनमें होड़ लग गयी है। यह पार्टियाँ इन मुल्लावादी मुस्लिम छात्रों को खुश करने का यह सुनहरा मौका खोना नहीं चाहतीं, चाहे देश तबाह व बर्बाद क्यों न हो जाये।

मुम्बई खतरे में

इन मुल्लावादी मुसलमानों, मुस्लिम माफिया सरगनाओं और आई०एस०आई० का प्रभाव मुम्बई और अन्य बड़े शहरों में बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। इसके लिये उन्हें अरब व भारत के धनी मुसलमानों से खूब दिल खोल कर पैसा मिल रहा है। मुम्बई के धनी हिन्दुओं से जबरन धन वसूली कर भारत और भारत के काफिर हिन्दुओं को नष्ट करने के लिये, वह भारत की आर्थिक राजधानी मुम्बई पर धीरे-धीरे योजनाबद्ध तरीके से कब्जा जमा कर उसे अपना मुख्य अड्डा बना लेना चाहते हैं। मुम्बई के हिन्दू उद्योगपतियों व व्यापारियों को मेरी चेतावनी है कि वह सावधान और सतर्क हो जायँ, नहीं तो उनके हाथों से कुछ दिन बाद सब कुछ

निकल जाने वाला है। मुम्बई बम विस्फोट को याद करें, जो दुबई में रहने वाले माफिया सरगना दाऊद इब्राहीम द्वारा शुक्रवार (जुम्मा) के दिन उस समय कराया गया था, जब मुसलमान नमाज पढ़ने के लिये घरों व मस्जिदों में हों, जिससे कि केवल हिन्दू मारे जायँ और मुसलमान बच जायँ। इस विस्फोट में लगभग ३५० हिन्दू मारे गये तथा सैकड़ों घायल हुए। फिर भी धर्मनिरपेक्षता की खाल ओढ़े बिकाऊ समाचार पत्रों ने जालियांवाला बाग नरसंहार के बराबर इतनी भीषण घटना को उस गम्भीरता से नहीं लिया, जितना कि लिया जाना चाहिये। अगर कहीं हिन्दुओं ने ऐसी साजिश की होती और दस मुसलमान या ईसाई भी मर जाते, तो यही समाचार पत्र और नकली धर्मनिरपेक्षतावादी नेता दुनियाँ सर पर उठा लेते। ऐसा करके यह लोग ऐसे कारनामों में सहयोग देते हैं। भारत की भावी पीढ़ी इनको कभी माफ नहीं करेगी।

जिहाद के लिये मुसलमानों को अल्लाह के आदेश

पारः १०, सूरः ८ की ६५वीं आयत में है कि - ऐ नबी ! मुसलमानो को जिहाद पर उभारो। अगर तुम में २० आदमी साबित क़दम रहने वाले होंगे, तो दो सौ काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे और अगर सौ (ऐसे) होंगे, तो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे, इसलिये कि काफिर ऐसे लोग हैं कि कुछ समझ नहीं रखते। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-२९१) अर्थात् पैगम्बर मुहम्मद साहब के लिये अल्लाह का आदेश है कि ऐ नबी (मुहम्मद) ! मुसलमानों को काफिरों के विरुद्ध धर्म युद्ध पर उभारो। अगर तुम में बीस आदमी सच्चे कट्टर मुसलमान होंगे तो अपने से दस गुना अर्थात् दो सौ काफिरों को जीत लेंगे। और अगर सौ ऐसे ही मुसलमान होंगे तो एक हज़ार काफिरों पर विजयी रहेंगे।

पारः १०, सूरः ९ की ७३वीं आयत में है कि ऐ नबी (मुहम्मद) आप काफिरों से और मुनाफिकों (कपटाचारियों) से जंग (युद्ध) कीजिये और उन पर सख़्ती कीजिये, उनका ठिकाना आग है और जो भी वहाँ पहुँचा, बहुत बुरी जगह पहुँच गया। (अनुवादक-ह० मौ० अ० क० पा० सा०, पेज-२००) पारः २८, सूरः ६६ की ९वीं आयत में अल्लाह का आदेश है कि ऐ पैगम्बर (मुहम्मद) जिहाद करो काफिरों से और मुनाफिकों से और अब इन पर सख़्ती करो, इनका ठिकाना जहन्नम (नरक) है और यह बहुत बुरी जगह है। (अनुवादक-ह० मौ० अ० क० पा० सा०, पेज-५६२) पारः २६, सूरः ४९ की १५वीं आयत में है कि मोमिन (मुसलमान) तो वे हैं जो खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाये, फिर शक में न पड़े और खुदा की राह (ज़िहाद) में जान और माल से लड़े। यही लोग (ईमान के) सच्चे हैं। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-८२३) अर्थात् मुसलमान तो वे हैं जो एक अल्लाह और अन्तिम पैगम्बर मुहम्मद पर विश्वास लाये, फिर उस विश्वास पर अडिग रहे और काफिरों के विरुद्ध जिहाद में तन मन और धन से लड़े। ऐसे लोग ही सच्चे मुसलमान हैं।

सऊदी अरब का खरबपति ओसामा बिन लादेन समेत कश्मीर में लड़ रहे विदेशी आतंकवादी ऐसे ही सच्चे मुसलमान हैं, जो भाड़े के सैनिक नहीं हैं जैसा

कि सरकार द्वारा (विदेश नीति के कारण) प्रचारित किया जाता है। बल्कि ये आतंकवादी जिहाद में तन, मन और धन से लड़ रहे हैं। पारः २८, सूरः ६१ की चौथी आयत में है कि अल्लाह उन लोगों से मुहब्बत फरमाता (प्रेम करता) है, जो अल्लाह की राह (जिहाद) में इस तरह जमकर लड़ते हैं जैसे कि वे सीसा पिलाई हुई मजबूत दीवार हों। (अनुवादक-ह० मौ० अ० क० पा० सा०, पेज-५५२)

हिन्दू-मुस्लिम दंगे क्यों होते हैं ?

कुरआन मजीद के इन्हीं आदेशों को मानकर मुसलमान छोटी-छोटी बात पर हिन्दुओं से भिड़ जाते हैं और हिन्दू-मुस्लिम दंगा शुरू हो जाता है। दंगे सदैव वहीं होते हैं, जहाँ मुसलमानों की संख्या काफी है। वहाँ हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच किसी भी प्रकार का विवाद होने पर जब मुल्लाओं द्वारा कुरआन की वह आयतें सुनायी जाती हैं, जिनके अनुसार काफिर हिन्दुओं को मारना और लूटना बड़े पुण्य का कार्य है, अल्लाह के लिये किया गया कार्य है। तो इस अतिउत्तेजक जोशीले भाषण को सुनने के बाद मुसलमान, हिन्दुओं पर टूट पड़ते हैं।

आज जो भी हिन्दू-मुसलमान दंगे होते हैं, वह काफिर हिन्दुओं के प्रति मुसलमानों की नफरत (घृणा) के कारण होते हैं, जो मौका पाते ही हिन्दुओं का कत्ल करने में नहीं चूकते। लेकिन हिन्दुओं को मारने, काटने और लूटने का काम बड़े पैमाने पर इसलिये नहीं हो पाता, क्योंकि ऐसा करने से पुलिस और आवश्यकता पड़ने पर सेना उन्हें रोक देती है। इसीलिये मुसलमान अब पुलिस आदि में अपनी आबादी के अनुपात में आरक्षण की माँग बड़े जोर से उठा रहे हैं।

मुसलमान हिन्दुओं से लड़ने का बहाना ढूँढ़ते रहते हैं। किसी मुसलमान की सायकिल भी हिन्दू से टकरा जाये कि मारपीट, छूरा चाकू चलने के बाद दंगा शुरू। जहाँ पर मुसलमानों की आबादी हिन्दुओं की आधी भी हो गयी है, वहाँ पर इस तरह के दंगे होते रहते हैं। लेकिन मुसलमान वहाँ चुप रहते हैं, जहाँ वह कम होते हैं। वहाँ शान्ति इसीलिये रहती है कि मुसलमानों की संख्या झगड़ा करने लायक नहीं है और बहुसंख्यक हिन्दू कभी झगड़ा शुरू नहीं करता। आज जैसे-जैसे इस देश में मुसलमानो की आबादी बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे बात की बात पर हिन्दू-मुसलमानो के बीचे दंगे भी बढ़ते जा रहे हैं। दंगे, आगजनी, लूटपाट और मारकाट की शुरूआत लगभग सभी जगह हिंसावादी मुसलमान ही करते हैं। उस समय यदि पुलिस प्रशासन न रोके तो शहर के सभी हिन्दू लूट लिये जायँ और हजारों जान से मार दिये जायँ। अभी यह हाल है तो आगे क्या होगा ? फिर भी इस देश के नेता कहते हैं कि मुसलमान असुरक्षित हैं, जबकि असुरक्षित हैं इस देश के हिन्दू। जब पुलिस उनकी हिंसा रोकने के लिये लाठी गोली चलाती है, तो पुलिस द्वारा उन हिंसावादी दोषी लोगों के मारे जाने पर उनके समर्थक नेता मानवाधिकारवादी खूब रोते चिल्लाते हैं, लेकिन दंगे में हिंसावादी मुसलमानों द्वारा मारे गये निर्दोष हिन्दुओं का कोई नाम तक नहीं लेता।

ये धर्मनिरपेक्षतावादी लोग, मुसलमानों की कट्टरता व हिंसक साम्प्रदायिकता को धर्मनिरपेक्षता बताते हैं। लेकिन मार खाकर रोने वाले हिन्दुओं को साम्प्रदायिक

कहते हैं। आखिर कैसी है इनकी धर्मनिरपेक्षता? यह मानवाधिकारवादी बतायें कि वे मानव के अधिकारों की लड़ाई लड़ रहे हैं या हिंसा के अधिकारों की ?

सबसे खतरनाक बात यह है कि भविष्य के भारत में जब मुल्लावादी मुसलमानों का राज होगा, तब हिन्दुओं को आज बचाने वाली यह पुलिस और सेना मुसलमानों की ही होगी। जिससे हिन्दू निकाल बाहर किये जायेंगे, तब मुल्लावादी मुसलमानों की हिंसकदंगाई भीड़ के आगे-आगे यही पुलिस और सेना उनका हौसला बढ़ाती चलेगी और हिन्दू जनता व हिन्दू संस्कृति 'नारे तकबीर, अल्लाहु अकबर' और 'लाइलाहा इल्लल्लाह....' के नारों के बीच कुचल दी जायेगी। आज मुसलमान खुद दंगा शुरू करते हैं। लेकिन लूटपाट, मारकाट करने से उनको रोकने के लिये जब पुलिस अपने बल का प्रयोग करती है, तो वह एस० पी० और कलक्टर के तबादले की माँग को लेकर अड़ जाते हैं। साथ ही उल्टा पुलिस पर साम्प्रदायिक होने का आरोप लगाते हैं।

बड़े ही अफसोस व चिन्ता की बात है कि नकली धर्मनिरपेक्षतावादी बुद्धिजीवियों व नेताओं की झूठी वाहवाही लूटने के लिये पुलिस व प्रशासन के कुछ उच्च अधिकारी भी दंगाइयों से निर्दोष हिन्दुओं की रक्षा के लिये बल प्रयोग करने वाली पुलिस के हिन्दू सिपाहियों पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगा रहे हैं। जबकि साधारण से तर्क की बात है कि पुलिस दंगाइयों को न मारेगी, तो क्या दंगाइयों द्वारा मारे जाने वाले निर्दोष हिन्दुओं को पीटेगी ? क्या फूल बरसाने से दंगाई अपनी हिंसा छोड़ देंगे ? अगर ऐसा है तो फिर पुलिस फोर्स को बन्दूक पिस्तौल की क्या आवश्यकता है ? समझा बुझाकर प्यार से हिंसक अपराधियों का हृदय परिवर्तन किया जा सकता है ? आखिर ऐसे नेता और अधिकारी क्या चाहते हैं कि मुस्लिम दंगाइयों को धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिंसा व लूटपाट की खुली छूट दे दी जाय ?

क्या भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश का महासंघ संभव है ?

एक नेता भारत, पाकिस्तान, और बंगला देश का महासंघ बनाकर तीनों में प्रेम की गंगा बहाने का प्रचार करते फिर रहे हैं। सन् १९७१ में भारत पाकिस्तान युद्ध में हजारों भारतीय सैनिकों ने अपनी जान देकर जिन बंगलादेशी मुसलमानों की रक्षा करके बंगला देश बनवाया, आज वही बंगलादेशी मुसलमान पाकिस्तान का साथ देते हैं और भारत का विरोध करते हैं। बंगलादेशी मुसलमानों की भारत के प्रति घृणा और विरोध क्या यह नहीं दिखाता कि मुसलमानो को (वह चाहे जिस देश के हों), काफिर हिन्दुओं का अस्तित्व ही बर्दाश्त नहीं है। हिन्दू, मुसलमानों के लिये चाहे जितना खून क्यों न बहा दें। लेकिन मुसलमान उनको अपना दोस्त नहीं बनायेंगे, क्योंकि कुरआन का ऐसा आदेश है। भारत के पाकिस्तान से चार युद्ध हुए पहला सन् १९४७ में, दूसरा १९६५ में, तीसरा १९७१ में और चौथा १९९९ में कारगिल का युद्ध। इन चारो युद्धों की शुरूआत पाकिस्तान ने ही की। आखिर क्या दुश्मनी है ? पाकिस्तान की भारत से। क्या यह हमले काफिर हिन्दुओं को समाप्त करने के लिये नहीं किये जाते? कश्मीर तो बहाना है। अगर कश्मीर पाकिस्तान

को दे दिया जाय, तो भी यह हमले जारी रहेंगे। पाकिस्तान के प्रभावशाली मुल्लावादी नेता कह चुके हैं कि ''कश्मीर पर कब्जे के बाद भी जिहाद जारी रहेगा, क्योंकि कश्मीर तो हमारे लिये शेष भारत में घुसने का दरवाजा है।''

मीडिया का झूठा प्रचार

इस देश के बुद्धिजीवी, अधिकांश समाचार पत्र व पत्रिकायें और नेता प्रचार करते हैं कि ''कश्मीर का मुसलमान शांति चाहता है। वहाँ पर आतंकवाद पाकिस्तान और विदेशी भाड़े के सैनिक चला रहे हैं।'' जबकि सच्चाई यह है कि भारत का रियायती दर पर उपलब्ध कराया गया अन्न खाकर तथा अन्य विशेष सुविधाओं का उपभोग करने के बाद भी वहाँ का अधिकांश मुसलमान भारत से व हिन्दुओं से घोर घृणा करता है तथा पाकिस्तान को अपना मित्र समझता है। इसीलिये कश्मीरी मुसलमानों को खुश करने के लिए शेख अब्दुल्ला से लेकर फारूख अब्दुल्ला तक, समय-समय पर भारत से अपनी अलग पहचान बनाने और अलग कानून बनाने का राग अलापते रहे। ऐसा करना इन नेताओं की मजबूरी है, अगर ऐसा न करें, तो कश्मीरी मुसलमान उनके विरोधी हो जायँ। सन् १९९९ में कारगिल युद्ध शुरू होते ही कारगिल के कई इलाकों के मुसलमान, बस्तियाँ खाली कर पाकिस्तान के कब्जे वाले आजाद कश्मीर में चले गये। क्योंकि वह संकट के समय में पाकिस्तान के साथ ही रहना चाहते हैं। लेकिन युद्ध समाप्त होने के बाद सुविधाओं का लाभ उठाने भारतीय कश्मीर में लौट आये। भारतीय टी० वी० ने उनके भारत लौटने का प्रचार, उनकी देशभक्ति, देश प्रेम के रूप में बड़े जोर शोर से किया। ऐसा करने से भारत व भारत से बाहर रहने वाले हिन्दुओं को सच्चाई का पता नहीं चलता। वह भ्रम में पड़ जाते हैं, जिसके कारण वह आने वाले खतरे को नहीं समझ पाते ।

इसी तरह यह प्रचार करते हैं कि ''पाकिस्तान के आम मुस्लिम भारत के हिन्दुओं से दोस्ती चाहते हैं। लेकिन वहाँ के शासक भारत विरोधी भावना भड़काकर राज करते हैं।'' जबकि सच्चाई यह है कि वहाँ का आम मुसलमान भारत के काफिर हिन्दुओं से घोर घृणा करता है। कुछ अपवादों को सच्चाई नहीं माना जा सकता। वह हिन्दुओं को नष्ट होते तथा भारत को मुसलमानों का गुलाम होते देखना चाहता है। पाकिस्तान के आम मुसलमानो की इसी मानसिकता का फायदा उठाने के लिये पाकिस्तानी शासक भारत व हिन्दू विरोध की बातें कर, आम जनता को खुश कर, उनका समर्थन प्राप्त करते हैं। भारत विरोध के बिना पाकिस्तानी नेताओं की राजनीति शून्य है। फिर कैसे होगी दोस्ती भारत की पाकिस्तान और बंगलादेश से ? यह महासंघ बनाने का सपना देखने वाले भारत के उक्त नेता ही बता सकते हैं। ऐसे नेता मुल्लावादी मुसलमानो का हौसला बढ़ाकर या यों कहें बोतल में बन्द जिन्न को बाहर निकालकर थोड़े समय के लिये फायदा पा सकते हैं। लेकिन जब वह जिन्न मजबूत हो जायेगा तो इनको ही दबोच लेगा, क्योंकि यह लोग या सभी जाति के हिन्दू , मुसलमानो के लिये काफिर ही हैं। मौलाना मोहम्मद अली कहा करता था कि ''कितना भी गिरा हुआ मुसलमान क्यों

न हो, वह मेरे लिये गांधी से ज्यादा श्रेष्ठ है, क्योंकि गांधी है तो नापाक काफिर हिन्दू ही।''

भारत मुस्लिम राष्ट्र बनने की ओर

भारत में आज २० प्रतिशत मुसलमान हो गये हैं। जिस तेसी से उनकी आबादी बढ़ रही है, उससे आने वाले २५ वर्षों में वह कम से कम ३५ प्रतिशत हो जायेंगे। ईसाई मिशनरियों को हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन के लिये मिली खुली आजादी के कारण ईसाई भी तेजी से बढ़कर ५ प्रतिशत हो जायेंगे। किसी भी चुनाव में अधिक से अधिक ६० प्रतिशत वोट ही पड़ता है। इस हिसाब से आज से २५ साल बाद लोकसभा का जो चुनाव होगा, उसमें पड़े ६० प्रतिशत वोटों में २७ प्रतिशत अकेले मुसलमानों का होगा, क्योंकि वह वोट देने जरूर जाते हैं। ३ प्रतिशत ईसाईयों का होगा, शेष ३० प्रतिशत हिन्दुओं का वोट जाति, भाषा, प्रान्त और धर्मनिरपेक्षता के नाम पर बटेगा, वैसे भी हिन्दू वोट देने जाता ही नहीं। हिन्दुओं की इन्हीं कमजोरियों के कारण अधिकतर लोकसभा क्षेत्रों से मुसलमान उम्मीदवार चुनाव जीत कर दिल्ली में मुल्लावादी मुसलमानों की सरकार बना देंगे। उसके बाद इस भारतीय संविधान की जगह कुरआन का कानून जिसे शरियत का कानून कहते हैं लागू होगा। तब हिन्दुओं की धन-दौलत, फैक्टरी, व्यापार, खेत और मकान तथा धनवान हिन्दुओं द्वारा बनवाये गये स्कूल, अस्पताल, धर्मशाला और मन्दिर आदि पर मुसलमानों का कब्जा होगा। फिर कुरआन के आदेशानुसार काफिर हिन्दुओं के कत्लेआम के साथ उनकी लड़कियों व औरतों को पकड़कर मुसलमान बनाने का सिलसिला शुरू होगा।

मार खाने के बाद हिन्दू एकता कर, चुनाव जीत कर वापस सत्ता में न आ जायें, इसलिये काफिर हिन्दुओं को राजसत्ता से दूर रखने के लिये शरियत के नाम पर लोकतंत्र का गला घोंटकर हिन्दुओं के सभी नागरिक अधिकार छीन लिये जायेंगे। पहले तो कुछ हजार मुसलमानो ने करोड़ों हिन्दुओं पर तलवार के बल पर अवैध तरीके से शासन किया, लेकिन अब वही मुसलमान अगर वोट के बल पर शासन में आ गये तो वह वैध तरीके से भारत की सत्ता पर सदैव के लिये कब्जा जमा लेंगे। सत्ता पाते ही मुल्लावादी मुसलमानों द्वारा जातिवादी नेताओं के सहयोग से तथा बन्दूकों के जोर से २५ प्रतिशत हिन्दुओं (कुल आबादी के १५ प्रतिशत) को पाँच साल के अन्दर ही मुसलमान बना लिया जायेगा। इस तरह अगला चुनाव आते आते भारत की मुस्लिम आबादी ५० प्रतिशत से ऊपर हो जायेगी, जो क्रमशः बढ़ती ही जायेगी।

दुनियाँ के ५३ मुस्लिम देशों में अधिकांश में या तो चुनाव होता नहीं, अगर होता है तो चुनाव का नाटक होता है। सत्ता की शक्ति सेना या मुल्लाओं के हाथ में रहती है, जो आज भी सातवीं शताब्दी में ही जी रहे हैं। वह कुरआन से बँधे होने के कारण कभी बदल नहीं सकते। मुल्लाओं द्वारा चुनाव का यही नाटक भारत में भी खेला जाता रहेगा। इसलिये पहले से अब का खतरा ज्यादा बड़ा है, जिसमें फंसकर हिन्दू कभी निकल नहीं पायेंगे।

हिंसावादी कट्टर मुसलमानों के हाथों में जब-जब भारत का राज आया तब तब उन्होंने हिन्दुओं को मारा काटा लूटा और अपमानित किया तथा उनकी लड़कियों और औरतों को छीना। तलवार के जोर पर आतंक फैला कर अपने धर्म का विस्तार किया। हिन्दुओं को नरक से भी ज्यादा कष्टप्रद जीवन जीने को मजबूर कर दिया। लेकिन जब आज हिन्दुओं के हाथों में राजसत्ता है तब इस देश में मुसलमानों को हर प्रकार की स्वतंत्रता सुविधा और सुरक्षा मिली है। प्रसिद्ध विद्वान केन्टवेल स्मिथ कहते हैं कि ''दुनियाँ के किसी भी इस्लामिक देश में मुसलमान इतना स्वतंत्र नहीं है जितना भारत में है।'' लेकिन दुर्भाग्य है कि हिन्दुओं की इस उदारता को मुसलमान खुदा की गैबी (छिपी) मदद मानते हैं।

लेकिन अपने ही देश भारत में यदि हिन्दू अपनी धार्मिक एकता की बात करते हैं तो मुसलमान तथा उनके हमदर्द हिन्दू नेता तुरन्त चिल्लाते हैं कि हिन्दू साम्प्रदायिकता फैलाई जा रही है। जबकि इस देश में कभी भी हिन्दू साम्प्रदायिकता नहीं रही। यह देश सैकड़ों साल से केवल मुस्लिम साम्प्रदायिकता से जलता रहा आज भी कश्मीर जल रहा है। भविष्य में पूरे भारत को मुस्लिम साम्प्रदायिकता में जलाने की तैयारियाँ गुप्त रूप से चलाई जा रही हैं। फिर यह हिन्दू साम्प्रदायिकता बीच में कहाँ से आ गयी। आखिर सच्चाई में पर्दा डालने के लिए भ्रम क्यों फैलाया जा रहा है ? जिस देश और समाज में सत्य पर पर्दा डाला जाता है। उसका विनाश होता है। भारतवर्ष और हिन्दू समाज में धर्मनिरपेक्षता के नाम पर यही हो रहा है। हम सत्य से इसी पर्दे को हटाना चाहते हैं।

भारत के ऊपर मँडराते हुए इस भयानक खतरे को धर्मनिरपेक्षता के नाम पर छिपाया जा रहा है और सत्य बोलने वालों को तथा इन खतरों से सावधान करने वालों को साम्प्रदायिक कह कर उन पर मुकदमा चलाया जा रहा है। इससे इस देश की सुरक्षा व शांति खतरे में पड़ रही है और हिंसावादियों के हौसले बुलन्द हो रहे हैं।

आश्चर्यजनक भविष्यवाणियाँ

उर्दू में एक किताब छपी हैं 'अजीम पेशीनगोइयां' अर्थात् आश्चर्यजनक भविष्यवाणियां। इस किताब के कवर पर लिखा गया है 'हिन्दोस्तान पर बहुत जल्द मुसलमानों का गलबा (कब्जा) हो जायेगा।' इस पुस्तक के प्रकाशक हैं फज़ल उर रहमान बुक डिपो, सी-१४, दोजानह हाउस, बाजार मटियामहल, दिल्ली ११०००६। इस पुस्तक के लेखक है अब्दुल अनवर राग़िब सल्फी। पुस्तक में लेखक, भारत से हिन्दू धर्म के सफाये तथा सभी हिन्दुओं के मारे जाने और भारत पर फिर से मुसलमानों का कब्जा हो जाने की शाहन्यामतउल्लाह वली रहमतउल्लाह अली की भविष्यवाणी पढ़कर बहुत प्रसन्नता दिखाता है और लिखता है कि ''हिन्दू संस्कृति और हिन्दुओं के समाप्त हो जाने से हिन्दुस्तान पवित्र और साफ हो जायेगा और ऐसा करके अल्लाह मुसलमानों के ऊपर बड़ी कृपा करेगा।'' लेखक की बात मुसलमानों को इतनी पसंद आई कि यह किताब खूब बिकी, क्योंकि इसमें तो लेखक ने मुसलमानों के मन की बात लिख दी थी। तो अब किताब के कुछ अंश

देखें। कठिन उर्दू के शब्दों का अर्थ मैंने हिन्दी में दे दिया है। लेखक ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है-

''....अब इसके बाद की चार शेरों (अर्थात दोहों) की पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) के पूरे होने का वक्त और इन्तज़ार है कि अफ़ग़ानी, ईरानी और बिलोचिस्तानी (अर्थात् पाकिस्तानी) एक साथ होकर ग़ाज़ियानह शान (ग़ाज़ियानह शान का अर्थ है मूर्तियों और मूर्तिपूजकों का सफाया करते हुए) के साथ हिन्दुस्तान को फतेह करेंगे। पंजाब, दिल्ली, कश्मीर, जम्मू और दकिनी इलाके भी फतेह कर लिये जायेंगे। तमाम दुश्मनाने इस्लाम (अर्थात् इस्लाम के दुश्मन सभी काफिर हिन्दू) मारे जायेंगे और पूरा हिन्दोस्तान हिन्दुआनह तहजीब से पाक साफ हो जायेगा। (अर्थात् हिन्दू धर्म और हिन्दुओं को पूरे भारत से समाप्त कर दिये जाने से यह देश पवित्र और साफ हो जायेगा।) और इस तरह अल्लाहताला मुसलमानों पर अपना बड़ा फजल फरमायेगा (अर्थात बड़ी कृपा करेगा)....''आगे इस किताब में लिखा है कि-

''दूसरी तरफ इस पेशीनगोई (भविष्यवाणी) का हम एक और तरह से जायजा लेते हैं, तो कुछ इस तरह की सूरते हाल हमारे सामने आती है कि इब्तदाए इस्लाम (इस्लाम की शुरूआत) के वक्त तक हमारा खाना काबा (मक्का स्थित काबा जहाँ हज होता है) इन बुतपरस्तों (मूर्तिपूजकों) का बहुत बड़ा मन्दिर बना हुआ था। जिनमें यह ३६० बुत (मूर्तियाँ) रखकर पूज रहे थे। लेकिन फतेह मक्का के दिन इसको इन बुतों से पाक कर दिया गया। (अर्थात् मुहम्मद साहब द्वारा मक्का पर विजय पाने के दिन इस खानाकाबा से यह मूर्तियाँ निकाल बाहर कर नष्ट कर दी गयीं।) और यही नहीं आइस्ता-आइस्ता (धीरे-धीरे) पूरा मुल्के अरब, मिश्र, शाम, यमन, बहरीन, ईराक, ईरान और एशिया व अफ्रीका के बड़े हिस्से को हर किस्म की बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) से पाक कर दिया गया। फिर हालात और बदलते गये और अफगानिस्तान और पाकिस्तान से भी बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) व बुतपरस्तों (मूर्तिपूजक हिन्दुओं) का सफाया हो गया और मशरिक (पूरब) में बंगलादेश से भी और आजकल तो कश्मीर से भी समझ लीजिये। नीज पंजाब में भी ऐसी ही कोशिशें जारी हैं।

बस अब एक थोड़े से ख़त्ते (अर्थात् टुकड़े) में बुतपरस्तों की तहज़ीब (अर्थात संस्कृति) बाकी है। जिसके लिए सिर्फ एक झटके की देर है और आलम (अर्थात् संसार) में रोज़ाना ऐसे इनक़लाबात (अर्थात परिवर्तन) बरपा हो रहे हैं, पता नहीं कब वह झटका आ जाये, जिससे कि मुल्के हिन्द (अर्थात भारत) रस्में हिन्दुआनह से पाक हो जाये (अर्थात् हिन्दू तथा हिन्दू धर्म को नष्ट कर दिये जाने से भारत पवित्र हो जाये) और यहाँ का चप्पा चप्पा, दरो दीवार, 'अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर' और 'ला इलाह इल्लल्लाह....' के नारों से गूँज उठे।

अब्दुल अनवर राग़िब सल्फ़ी

२२, सितम्बर, १९९१''

अब आगे पढ़ें कि इस पुस्तक में भारत के बारे में क्या भविष्यवाणियाँ लिखी

हैं। किताब में लिखी यह भविष्यवाणियाँ सन् ७३० में ईरान में जन्मे शाह न्यामतउल्लाह वली रहमतउल्लाह अली द्वारा की गयी थीं, जो फारसी की शेरों (दोहों) में है, जिनका अर्थ पुस्तक में लेखक ने उर्दू में जैसा दिया है वैसा ही देकर, मैंने कठिन वाक्यों का अर्थ हिन्दी में दे दिया है। ध्यान रहे कि शाह न्यामतउल्लाह वली रहमतउल्लाह अली ने हिन्दुस्तान तथा शेष विश्व के बारे में जो भविष्यवाणियाँ आज से १२७० वर्ष पूर्व की थीं, उनमें अधिकांश सही साबित हो चुकी हैं। आगे आने वाले दिनों में निम्नलिखित भविष्यवाणियों के पूरे होने की संभावना है।

नागाह मोमना रासूरे पदीद आयद
बाकाफ़राँ नोमाइन्द जन्गे चोर सतमानह

तर्जुमा (अर्थ) : अचानक मुसलमानों को खुशखबरी मिलेगी और काफ़िरों से एक बहादुराना जंग (अर्थात् वीरतापूर्ण युद्ध) शुरू हो जायेगी।

ग़लबाए कुनन्द हमचूँ मोरो मल्ख़ शबाशब
हत्ता के क़ौम अफ़ग़ाँ बासद फातहानह

तर्जुमा (अर्थ) : रातों रात चीटियों की तरह और टिड्डियों की तरह हमला करेंगे, यहाँ तक कि अफगानी कौम फतेह (विजय) हासिल करेगी।

नोट : चीटियों से मुराद (मतलब) पैदल फौज और टिड्डियों से मुराद (मतलब) हवाई फौज हो सकती है।

यकजा शोन्द अफ़ग़ाँ हम दकनियाँ व ईरान
फ़तेह कन्द एशियाँ कुल हिन्द ग़ाज़ियानह

तर्जुमा (अर्थ) : अफ़गानी, ईरानी और दकनी याने कि बिलोचिस्तानी (अर्थात् पाकिस्तानी) एक हो जायेंगे और यह लोग पूरे हिन्दुस्तान को ग़ाज़ियानह शान से (अर्थात् काफिरों और उनके धर्म जैसे सिख, जैन, बौद्ध, सनातन और पारसी धर्मों को नष्ट करते हुए) फतेह करेंगे (जीत लेंगे)।

पंजाब, शहर दिल्ली, कश्मीर, मुल्के दकन
बाज़ोर शहर जम्मू गैरअन्द ग़ायबानह

तर्जुमा (अर्थ) : पंजाब, दिल्ली, कश्मीर, दकन और जम्मू के शहर को अल्लाह की ग़ैबी (छिपी हुई) मदत से फतेह कर (जीत) लिये जायेंगे।

कुश्ता ए शोंद हम्बलह बदखोआह दीन व इमाँ
ख़ालिक़े नोमाइन्द अकरम अज़ लुत्फ़े ख़ालिक़ानह

तर्जुमा (अर्थ) : दीन और ईमान के तमाम बदखोआह मारे जायेंगे और पूरा हिन्दुस्तान रस्मे हिन्दुआनह से पाक हो जायेगा। अर्थात् मुसलमानों के धर्म इस्लाम के सभी दुश्मन काफिर मारे जायेंगे और इस तरह हिन्दुओं की संस्कृति को नष्ट कर पूरा हिन्दुस्तान पवित्र कर दिया जायेगा।

जानकारी के लिये यह बता दें कि शाह न्यामतउल्लाह वली रहमतउल्लाह अली ने भारत में मोहम्मद गोरी से लेकर इब्राहीम लोदी तक के राज तथा बाद में लगभग तीन सौ वर्ष मुगलों के राज इसके बाद उनके स्थान पर अंग्रेजों का राज स्थापित होने की भारत के बँटवारे के साथ आजादी की भविष्यवाणी आज से १२७०

साल पूर्व ही कर दी थी। यहाँ तक कि महात्मा गाँधी के बारे में भी भविष्यवाणी इस प्रकार की थी कि झंडा लिये हुए एक आदमी जनेऊ पहनने वाली कौम में पैदा होगा, जिसका जिस्म दुबला होगा और बातें बहादुरी की करेगा। अंग्रेजों से बदला लेने वाले इस बनिये का नाम गाफ (ग) से शुरू होगा, उसके नाम ६ हरफ (अक्षर) होंगे। महात्मा गाँधी का प्रचलित नाम, गाँधी जी था।

नोट : गाँधी को उर्दू लिपि में लिखने पर उसमें छः अक्षर आते हैं।

लेकिन इन भविष्यवाणियों से डरने की जरूरत नहीं है। जातिवाद, भाषावाद और उत्तर-दक्षिणवाद छोड़कर, हरिजनों को हरिजन नहीं केवल अपना हिन्दू भाई समझकर, आपस में एकता करके और ईश्वर के चमत्कारों की आशा छोड़कर, ईश्वर का सदैव ध्यान करते हुये साहस, एकता और वीरता से कर्म करके, तुम आने वाले सभी खतरों और कठिनाइयों को दूर कर सकते हो और यह भविष्यवाणियाँ झूठी कर सकते हो।

वैसे विश्व प्रसिद्ध सर्वश्रेष्ठ फ्रांसीसी भविष्यवक्ता नोस्टरडमस ने आज से लगभग ५५० वर्ष पूर्व अपनी पुस्तक 'सेन्चुरीज' में भविष्यवाणी की है कि महासागर के नाम वाले धर्म का सारे संसार में वर्चस्व स्थापित होगा। (महासागर के नाम पर संसार में केवल एक ही धर्म, हिन्दू धर्म है जो हिन्द महासागर के नाम वाला है) लेकिन सावधान ! यह अपनेआप किसी चमत्कार से नहीं होगा इसके लिये हिन्दुओं को कर्म करना पड़ेगा।

बड़े से बड़े भविष्यवक्ता की सभी भविष्यवाणियाँ सही नहीं होतीं, उनमें से फ्रांसीसी नोस्टरडमस जैसा सर्वश्रेष्ठ भविष्यवक्ता भी शामिल है। कुछ लोग अपने कर्मों द्वारा उनकी भविष्यवाणियाँ बदल देते हैं। याद रखो कर्म के सामने ईश्वर भी झुक जाते हैं, भविष्य की तो बात ही छोड़िये। इस संसार में ईश्वर के बाद कर्म ही सबसे बड़ा शक्ति का स्रोत है। प्रकृति का सारा खेल इसी कर्म पर आधारित है। इस अनन्त ब्रह्माण्ड में अनन्त सूर्य, ग्रह, उपग्रह आदि अपनी गति (कर्म) के कारण ही टिके हैं। परमाणु से लेकर ब्रह्माण्ड तक कर्मशील है। परमपिता परमेश्वर अपनी इस महान अनन्त रचना को कर्मशील करने के लिये खुद भी कर्म करते हैं। गीता में भगवान् कहते हैं कि यदि मैं कर्म न करूँ, तो सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो जाये-

उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।

यही श्रीमद्भगवद्गीता का कर्मयोग है।

अल्लाह के भरोसे बैठने और चमत्कार देखने के बजाय अल्लाह के लिये कर्म करके ही मुट्ठी भर मुसलमान इस देश में करोड़ों हिन्दुओं पर सैकड़ों साल तक शासन करते रहे। लेकिन वह हिन्दू कर्म को भूलकर भाग्य और भगवान् के सहारे बैठकर मरते-कटते तथा लुटते-पिटते रहे।

उदाहरण के लिये बाबर जब राँणा साँगा के विरुद्ध जिहाद के लिये सीकरी के मैदान में आ डटा, तो उस समय भारतीय ज्योतिष के नामी विद्वान मोहम्मद शरीफ ने भविष्यवाणी की कि बाबर युद्ध हार जायेगा और वास्तव में बाबर सीकरी में युद्ध हार गया। जब उसे इस भविष्यवाणी के बारे में बताया गया, तब वह बोला

इंशाअल्लाह मैं फिर दूने जोश से हमला करूँगा और जीतूँगा। यह युद्ध अल्लाह के लिये है, इस्लाम के लिये जिहाद है। इस जिहाद में तुम सब जीतोगे और ऐश करोगे। लेकिन अगर मारे गये तो, फिरदौस (जन्नत से भी अच्छे स्वर्ग) में जाओगे। इसलिये पूरे जोश के साथ अल्लाह के लिये इन काफिरों को कुचल डालो, अल्लाह तुम्हारे साथ है। इस प्रकार बाबर ने अल्लाह (ईश्वर) का नाम लेते हुए कर्म करके मोहम्मद शरीफ की भविष्यवाणी को उलट दिया। अपनी हार के एक माह बाद १६ मार्च सन् १५२७ को खानवाँ के मैदान में बाबर ने राँणा साँगा को बुरी तरह पराजित किया। बाबर ने राजपूतों के कटे सिरों का स्तूप (गुम्बद) बनवाकर विजय का जश्न मनाया और गाजी की उपाधि धारण की।

जिहाद करने वाले मुजाहिद को अल्लाह का इनाम

मुसलमानों के धर्म के अनुसार उनको मरने के बाद स्वर्ग में जाने के लिये कब्र में पड़ा रह कर कयामत (प्रलय) का इन्तजार करना पड़ेगा। वह मुसलमान जो काफिर हिन्दुओं के विरुद्ध जिहाद अर्थात् धर्मयुद्ध करेगा, मुजाहिद कहलायेगा। यह मुजाहिद मुसलमान कम से कम एक काफिर हिन्दू को मार कर गाजी बनेगा अथवा उनसे लड़ते हुए मारा जाकर शहीद बन जायेगा। जिसे मरने के बाद कब्र में रहकर कयामत का इन्तजार नहीं करना पड़ेगा वह मरते ही तुरन्त जन्नत से भी बड़े स्वर्ग, जिसका नाम फिरदौस है, में भेजा जायेगा, जहाँ उसे बड़ी-बड़ी आँखों वाली अत्यन्त सुंदर और पवित्र बीवियाँ बड़ी संख्या में प्राप्त होंगी। रहने के लिये बागों और नहरों वाले अत्यन्त सुन्दर बड़े बड़े महल होंगे, जहाँ मनचाहा भोजन सोने के बरतनों में पेश किया जायेगा। इस तरह काफिर हिन्दुओं को मारकर गाजी अथवा शहीद बनकर तुरन्त स्वर्ग जाने की इच्छा लेकर पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सूडान, अलजीरिया व कुछ अरब देशों के मुजाहिद मुसलमान कश्मीर में कारगिल की पहाड़ियों में घुस आये। ये भाड़े के सैनिक नहीं, बल्कि गाजी अथवा शहीद बनने के लिये स्वेक्षा से आये धार्मिक लड़ाके मुसलमान थे। जो कश्मीर में काफिर हिन्दुओं का शिकार करने आज भी दौड़े चले आ रहे हैं। लेकिन इससे बड़ा खतरा भारत में ही पाकिस्तान द्वारा भ्रमित किये जा रहे करोड़ों मुसलमान हैं। जिनके हाथों में लोकतंत्र का सबसे बड़ा हथियार वोट है। जिसके बल पर भविष्य में जब वह चुनाव जीत कर दिल्ली में मुल्लाओं की सरकार बना देंगे, तब क्या होगा ? उस समय यह भारतीय फौज भी उनकी हो जायेगी, तब उनसे कौन मुकाबला करेगा ? कौन बचायेगा तुम सबको, क्या अमेरिका? तो दूसरों के भरोसे अपना बचाव सोंच कर बैठे रहने वाले लोग जरूर पिटते हैं।

अमेरिका, भारत के साथ कब तक ?

पाकिस्तान अथवा अफगानिस्तान अगर ओसामा बिन लादेन को अमेरिका के हाथ सौंप दें अथवा ओसामा बिन लादेन की स्वाभाविक मृत्यु हो जाये तथा इस्लामी आतंकवादी अमेरिका के विरुद्ध कुछ न करें, तो अमेरिका मुस्लिम आतंकवाद की ओर से अपनी आँखें बन्द कर बैठ जायेगा। अमेरिका का भारत प्रेम तभी तक है, जब तक वह मुस्लिम आतंकवादियों की लपेट में है। इसलिये अमेरिका के भरोसे

बैठे रहना ठीक नहीं है।

हिन्दुओं का मूर्खतापूर्ण पलायनवाद

आजकल कुछ पलायनवादी हिन्दू कहते हैं कि हिंसावादी लोग आपस में ही लड़कर मर जायेंगे। कुछ कहते हैं कि उनसे अमेरिका निपट लेगा और कुछ कहते हैं कि लागे सम्बद बीसा, न रहे ईसा न मूसा। इसी तरह गुजरात में सोमनाथ मन्दिर के पुजारियों ने अंधविश्वास फैला रखा था कि मंदिर में मुसलमान सैनिकों के पैर रखते ही, भगवान शिव क्रोध से अपना तीसरा नेत्र खोल देंगे और सारे मुसलमान जलकर भस्म हो जायेंगे। लेकिन सोमनाथ मंदिर पर जब वास्तव में महमूद गजनवी का हमला हुआ, तो मंदिर की सुरक्षा के लिये लगाये गये हजारों हिन्दू सैनिक, इसी अंधविश्वास के कारण मंदिर की रक्षा के लिये लड़ने के स्थान पर अपने-अपने हथियार मंदिर में ही रखकर दीवारों और छतों पर यह देखने के लिये चढ़ गये कि भगवान शिव जब क्रोध से अपना तीसरा नेत्र खोलेंगे, तब मुसलमान सैनिक कैसे तड़प-तड़प कर मरेंगे। इतिहास गवाह है कि विरोध न होने के कारण महमूद गजनवी के आतंकवादी सैनिक तो सुरक्षित रहे। किन्तु अंधविश्वास के नाम पर अकर्मण्यता फैलाने वाले सैकड़ों पुजारियों व तमाशा देखने वाले हजारों हिन्दू सैनिकों को मार-काट कर, संसार के सबसे वैभवशाली मंदिर सोमनाथ को महमूद गजनवी ने मिट्टी में मिला दिया और लगभग ५००००० हिन्दुओं को मार-काटकर सारा शहर सोमनाथ वीरान कर दिया। भाग्य और भगवान् के सहारे बैठे रहने के कारण हिन्दू सदैव इसी तरह खतरों में पड़ते रहे।

जातिवादी हिन्दू आत्महत्या की ओर

इस देश के जातिवादी नेता हिन्दू नौजवानों को जाति के नाम पर लड़ाकर हिन्दू समाज को तोड़ते और कमजोर करते हैं। लेकिन मुसलमानों को धर्म के नाम पर एक जुट रहने को कहकर उन्हें मजबूत करते हैं। यह नेता मुसलमानों को कट्टरता सिखाते हैं, लेकिन हिन्दुओं को धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढ़ाते हैं। यह नेता राष्ट्रवादी और शांतिप्रिय मुसलमानों की उपेक्षा कर कट्टर मुल्लावादियों को आगे बढ़ाते हैं। ऐसा करके यह नेता इस देश को तबाह व बरबाद कर देंगे। ऐसा करने वाले हिन्दू अगर सोंचते हों कि वह मुसलमानों के नेता बन गये हैं और मुसलमान उनके कहने पर चलते रहेंगे, तो ऐसे हिन्दू बहुत बड़े धोखे में हैं। क्योंकि कुरआन मज़ीद में पारः १९, सूरः २५ की ५२वीं आयत में मुसलमानों के लिए अल्लाह का आदेश है कि तो तुम काफिरों का कहा न मानो और उनसे इस कुरआन के आदेशानुसार बड़े जोर से लड़ो। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-५७७)

कुरआन के अनुसार अल्लाह काफिर हिन्दुओं को मुसलमानों पर शासन करने की इजाजत नहीं देता। मुसलमानों के धर्म इस्लाम का प्रथम उद्‌देश्य भारत जो अभी दारूलहरब अर्थात् काफिर हिन्दुओं के शासन वाला देश है, को दारूलइस्लाम अर्थात् मुसलमानों के शासन वाला देश बनाना है। अपने इस उद्‌देश्य को पूरा करने के लिये वह योजना बनाकर आगे बढ़ रहे हैं। इसलिये नकली धर्मनिरपेक्षतावादी

और मुसलमानो के हमदर्द यह नेता किसी गलतफहमी में न रहें, झूठे सपने न देखें। क्योंकि जिस दिन मुसलमान खुद चुनाव जीतने की स्थिति में आयेंगे, उस दिन उनका नेता कोई हिन्दू नहीं, मुसलमान ही होगा। चुनाव जीतने तथा देश में राज पाने के बाद मुसलमान संविधान में ऐसा बदलाव करेंगे कि भविष्य में हिन्दू राजसत्ता के नजदीक भी न फटक सकेंगे। इसके लिये चाहे अमरीका विरोध करे या यूरोप उन पर कोई असर नहीं पड़ेगा, यही है कल का सत्य।

दूसरी तरफ जातिवादी हिन्दू नेता और जातिवाद, ऊँचनीच तथा छुआछूत को मानने वाले मूर्ख हिन्दू, आपस में सामाजिक घृणा फैलाकर मुल्लावादी मुसलमानों का यह उद्‌देश्य जल्दी ही पूरा करा देंगे। हिन्दुओं की इस जातिवादी लड़ाई, ऊँचनीच और छुआछूत से पैदा हुई आपसी फूट का फायदा उठाकर मुसलमान उम्मीदवार भविष्य में आसानी से चुनाव जीतेगें और भारत को मुसलमानी राज्य दारूलइस्लाम में बदलकर अपना धार्मिक उद्‌देश्य पूरा करेंगे।

ऊँच-नीच और छुआ-छूत, वेद और गीता के विरुद्ध है

हिन्दुओं की यह छुआछूत वेद और गीता के विरुद्ध है। क्योंकि चारो वर्णों की रचना जन्म के आधार पर न होकर, गुण और कर्मों के आधार पर की गई है। गीता में भगवान् कहते हैं कि-

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।

लेकिन इन कर्मों का सम्बन्ध जाति से नहीं है। गीता में यह कर्म स्वभाव से उत्पन्न हुये गुणों के अनुसार बाँटे गये हैं।

कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।।

अतः छुआछूत जाति से नहीं, व्यक्ति के गन्दे स्वभाव से की जानी चाहिये। इस सत्यता के विरोध में यदि कोई छुआछूतवादी कुतर्क करता है, तो उसकी मूर्खता की तुलना करते हुये मैं एक कहानी दे रहा हूँ। काशी में अपनी पढ़ाई पूरा करने के बाद चार युवक अपने घरों को वापस लौट रहे थे। इन युवकों में तीन विद्वान तो थे पर बुद्धिमान और व्यवहारिक नहीं थे। लेकिन चौथा विद्वान के साथ-साथ बुद्धिमान और व्यवहारिक भी था। चारों युवकों को रास्ते के जंगल में एक जगह शेर की हड्डियों का एक ढाँचा दिखा। जिसे देखकर एक युवक बोला इस शेर को जिन्दा करके हमें अपनी विद्या का प्रयोग करना चाहिये। उसके इस सुझाव पर दूसरे और तीसरे युवक ने हामी भरी। लेकिन चौथे ने जो विद्वान के साथ-साथ बुद्धिमान और व्यवहारिक भी था। कहा कि भैया आप सब यह जानते हुए भी कि यह शेर का ढाँचा है, इसे जिन्दा कर रहे हो। यह जिन्दा होने के बाद हम सबको खा जायेगा। इस पर शेष युवकों ने उसको डाँटकर चुप करा दिया। फिर उनमें से पहला बोला कि मैं अपनी विद्या से इस ढाँचे में इसके आंतरिक अंग, मांस मज्जा आदि को डालूँगा। दूसरे ने कहा मैं उसके ऊपर उसका ऊपरी आवरण खाल, बाल आदि चढ़ा दूँगा। तीसरे ने कहा मैं उसमें रक्त संचार कर प्राण डाल दूँगा। यह सब सुनकर चौथे ने कहा कि ठहर जाओ ! मैं पेड़ पर चढ़ जाऊँ, तब तुम सब अपनी विद्या का प्रयोग करना। ऐसा कहकर वह एक ऊँचे पेड़ पर चढ़

गया। शेष तीनों ने अपने-अपने कहने के अनुसार बारी-बारी से शेर के ढाँचे पर अपनी विद्या का प्रयोग कर उसे जिन्दा कर दिया। शेर जिन्दा होते ही दहाड़ते हुए उन तीनों पर झपट पड़ा और देखते ही देखते तीनों को चीर फाड़ डाला।

इस प्रकार अपनी विद्या का मूर्खतापूर्ण प्रयोग विनाश की ओर भी ले जा सकता है। इसलिये छुआछूत को सही ठहराने वाले लोग सावधान हो जायें। अपने कुतर्कों को बुद्धि और व्यवहारिकता पर हावी न होने दें। ऐसे हिन्दू देखें कि वह किस तरह चारो तरफ से हिंसावादियों द्वारा घेरे जा रहे हैं। ऐसे में आपसी फूट बहुत ही खतरनाक साबित हो सकती है। इसलिये सत्य को मानकर समय के अनुसार अपने में परिवर्तन लायें। आपस में किसी भी प्रकार की फूट हिंसावादियों को हिंसा करने में मदद देकर हिन्दुओं को विनाश की ओर ले जायेगी।

इस्लाम में भाई-चारा केवल मुसलमानों के लिये

मुसलमान खुद तो धर्म के नाम पर एक हैं, लेकिन यदि हिन्दू एकता की कोशिशें करते हैं, तो वे हल्ला मचाते हैं। आखिर ऐसा क्यों ? वास्तव में मुल्लावादी मुसलमान नहीं चाहते कि हिन्दू जाति-पाँति, ऊँच-नीच और छुआछूत छोड़कर एक हों। क्योंकि अगर हिन्दू एक हो जाते हैं, तो मुसलमानों के लिये भारत को मुसलमानी राज्य दारूलइस्लाम बनाना बहुत मुश्किल हो जायेगा। इसीलिये वह हिन्दू एकता व हिन्दू जागरण के किसी भी प्रयास का हर स्तर पर जोरदार विरोध करते हैं और हर उस संगठन का भी विरोध करते हैं, जो हिन्दुओं मे एकता लाना चाहता है। उनके इस विरोध में अधिकांश नकली धर्मनिरपेक्षतावादी (सेक्युलर) नेता भी साथ देते हैं। यह मुल्लावादी मुसलमान हिन्दुओं में फूट डालने के लिये जातिवादी नेताओं का चुनाव में समर्थन करते हैं तथा मनुवाद पर भाषण करते हैं। खतरा देखकर हिन्दू कहीं सतर्क न हो जायें, इसलिये उनको धोखे में रखने के लिये बड़ी चतुराई से कहते हैं कि इस्लाम प्रेम और भाई चारे का धर्म है। लेकिन याद रखो ! इस्लाम में प्रेम और भाई चारा तो है, लेकिन वह केवल मुसलमानों के लिये है, काफिर हिन्दुओं के लिये नहीं।

क्योंकि कुरआन मज़ीद में पारः ६, सूरः ५ की ५४वीं आयत में है कि- तो खुदा ऐसे लोग पैदा कर देगा, जिन को वह दोस्त रखे और जिसे वे दोस्त रखें। और जो मोमिनो के हक़ में नर्मी करें और काफ़िरों से सख़्ती से पेश आयें, खुदा की राह में जिहाद करें, (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज १८३) अर्थात् ऐ मुसलमानो। अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा कर देगा, जो मुसलमानो से दया और प्रेम दिखायेंगे। लेकिन काफिरों से कठोरता से पेश आयेंगे और यह लोग इस्लाम धर्म के प्रचार व प्रसार तथा काफिरों को समाप्त करने के लिये जिहाद करेंगे।

पारः २६, सूरः ४८ की २९वीं आयत में है कि मुहम्मद खुदा के पैगम्बर हैं, और जो लोग उनके साथ हैं, वे काफिरों के हक़ में तो सख़्त हैं और आपस में रहम दिल। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-८१९) अर्थात् ऐ मुसलमानों ! मुहम्मद, अल्लाह के पैगम्बर (सन्देश देने वाले) हैं और जो लोग उनके साथ हैं (जो मुसलमान हैं) वे आपस में तो एक-दूसरे से दयालुता दिखाते हैं, प्रेम करते हैं,

लेकिन काफिरों से कठोरता का व्यवहार करते हैं। कुरआन में अल्लाह के इन्हीं आदेशों से प्रेरणा पाकर अरब, अफगानिस्तान, तुर्की आदि देशों से मुसलमान आकर इस देश के काफिर हिन्दुओं से कठोरता का व्यवहार करते रहे। कुरआन में अल्लाह ने मोमिनों (मुसलमानों) के साथ शान्ति तथा काफिरों के साथ युद्ध का आदेश दिया है। कुरआन में पारः २६, सूरः ४९ की १०वीं आयत में है कि मोमिन तो आपस में भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाईयों में सुलह करा दिया करो। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-८२१)

इसी से समझ लीजिये कि जाति की लड़ाई लड़ने वाले, ऊँच-नीच और छुआछूत को मानने वाले तथा जाति के नाम पर खुश होकर जातिवादी नेताओं का झंडा उठाकर उनकी जय जयकार करने वाले हिन्दू नौजवान, ऐसा करके अपने ही हिन्दू समाज को तोड़कर अपने हाथों अपनी चिता सजा रहे हैं। हिन्दुओं की इस जातिवादी लड़ाई से जातिवादी नेताओं को कुछ समय के लिये जरूर फायदा मिल जायेगा। लेकिन जातिवादी हिन्दू नौजवानों को कुछ नहीं मिलना। हाँ जैसे दो बिल्लियों की लड़ाई में बन्दर रोटी खा गया, उसी तरह हिन्दू नौजवानों की इस जातिवादी लड़ाई का फायदा उठाकर भविष्य में केवल मुसलमान उम्मीदवार ही चुनाव जीतेंगे। फिर भारत को मुसलमानी राष्ट्र दारूलइस्लाम बनाकर, इस संविधान को खतम कर, कुरआन का कानून लागू करेंगे। तब न बचेंगे काफिर हिन्दू, न रहेगी जाति और न रहेंगे जातिवादी नेता।

इसलिये इस देश के सभी हिन्दू नौजवान अपने भविष्य की रक्षा के लिये हमारे साथ मिलकर प्रान्तवाद, भाषावाद, जातिवाद, ऊँच-नीच और छुआछूत छोड़कर, अपने दलित भाइयों को अपना हिन्दू भाई समझकर, उन्हें प्रेम और सम्मान देकर हिन्दू एकता के लिये कार्य करें। बचने का केवल यही एकमात्र रास्ता है।

ध्यान रखो ! भविष्य में मेरे खिलाफ अनेक नेता, लेखक तथा अपने को प्रगतिशील कहने वाले पत्रकार तरह-तरह के तर्क, तरह-तरह के साक्षात्कार, उदाहरण और झूठे तथा अपने खुद के गढ़े जनमत सर्वेक्षण लेकर आगे आ जायेंगे, जो तुमको बहकायेंगे, तुम सबका ध्यान इस खतरे से हटाकर असावधान करेंगे। ऐसे लोग सदैव सच्चाई से आँखें बन्द किये रहते हैं और दूसरों को भी बन्द कर लेने के लिये प्रेरित करते हैं, ऐसे लोगों से होशियार रहना, नहीं तो तबाही और बर्बादी की ओर चले जाओगे।

जब हिन्दुओं के बचने के सभी रास्ते बन्द होंगे

मैंने यह पुस्तक इसलिये नहीं लिखी कि इसे कहानी की तरह पढ़ कर रख दो। खबरदार ! इसको पढ़ने के बाद अगर तुमने जातिवाद और छुआछूत के विरोध में लड़ना शुरू नहीं किया। अगर तुमने आपस में एकता नहीं रखी तथा हरिजनों अर्थात महान हिन्दुओं से प्यार करना, उनको सम्मान देना नहीं सीखा, तो याद रखो ! जब मुल्लावादी मुसलमान, 'नारे तकबीर, अल्लाहु अकबर' के नारे के साथ तुम सब पर टूट पड़ेंगे, उस समय सभी जाति के हिन्दुओं को सर छुपाकर रोने

की जगह भी न मिलेगी। फिर तुम सब यह सोंच कर पछताओगे कि अगर हम सब एकता कर लिये होते, जाति के नाम पर न लड़े होते, तो यह दिन देखने को न मिलता। लेकिन तब इस तरह पछताने से भी तुमको कोई लाभ न मिलेगा, क्योंकि उस समय तुम्हारे बचने के सभी रास्ते बन्द हो चुके होंगे।

आज जहाँ मुसलमान कम हैं, वहाँ रहने वाले हिन्दू यह न सोचें कि खतरा उनके पास नहीं है। आज की लोकसभा में मुसलमानों की संख्या अभी कम है, इससे हिन्दू यह समझने की भूल न कर बैठें कि मुसलमान कुछ नहीं कर सकते। पच्चीस साल बाद जब यह मुसलमान अपनी बढ़ी हुई व चुनाव जीतने लायक आबादी के बल पर अधिकांश जगह आंधी की तरह आगे बढ़ेंगे, तब हम चाहते हुए भी अपना बचाव न कर पायेंगे। इस देश में जैसे ही मुसलमानों का राज होगा, तुम्हारे गाँव या मोहल्ले में यह खतरा आकाश की बिजली की तरह टूट पड़ेगा। इसलिये अभी इसी समय बचने का रास्ता समझ लो तथा मेरी बात मान लो और वही करो जो मैंने इस पुस्तक में लिखा है।

खतरे की जानकारी ही बचाव का प्रथम प्रयास है

मैं किसी समुदाय का विरोध नहीं कर रहा। मैं तो केवल अपने हिन्दू समाज की कमजोरियां व गल्तियां बता रहा हूँ, तर्कयुक्त सच्चाइयाँ बता रहा हूँ। मैं इन्हें बताऊँ अथवा न बताऊँ, तुम इसे जानो अथवा न जानो। भविष्य का यह खतरा हर हालत में तुम सबके सामने आने वाला है। फर्क यह रहेगा कि इसे जान लेने से तुम सब सावधान होकर, अपनी कमजोरियों को दूर कर बच सकते हो। लेकिन न जानने से धोखे में रहकर इस खतरे की लपेट में आसानी से आ जाओगे। मुसलमानो की कुरआन में तो सब लिखा है, जिसे पढ़ कर वह समझ लेंगे कि काफिर हिन्दुओं के साथ कैसा व्यवहार करना है। लेकिन हिन्दू इस खतरे को कैसे जाने ? और जानेंगे नहीं तो उससे बचने का उपाय नहीं करेंगे। इसलिये इस खतरे की जानकारी होना ही बचाव का प्रथम प्रयास है। याद रखो मेरा उद्देश्य इतना है कि किसी भी धर्म के निर्दोष लोग, सताये न जायँ। इस देश में शान्ति रहे। लेकिन शान्ति वहीं रहती है, जहाँ अत्याचारों और अन्यायों के विरुद्ध एकता होती है। क्योंकि एकता से ताकत आती है और ताकतवर को कोई नहीं सताता।

हिन्दू भ्रम में न पड़ें

आजकल पत्र-पत्रिकाओं और नेताओं के लिये हिन्दू एकता का विरोध करना फैशन बन गया है। यह लोग सोचते हैं कि हिन्दू एकता का विरोध प्रगतिशीलता है, सफलता की कुंजी है, आने वाला इतिहास ही इनसे निपटेगा। यह नेता जनता को बहकाने के लिये कुछ उदाहरण नमक मिर्च लगाकर सुना दिया करते हैं, उन्हीं में से एक है रानी कर्णवती का दिल्ली के बादशाह हुमायूँ को राखी भेजना। यह नेता सुनाते हैं कि चित्तौड़ की रानी कर्णवती ने दिल्ली के बादशाह हुमायूँ को राखी भेजकर अपनी रक्षा की गुहार लगाई और हुमायूँ ने मुसलमान होते हुए अपनी राखी बहन कर्णवती की रक्षा के लिये दौड़ लगा दी। इस कहानी से मुसलमानों में कोई असर नहीं पड़ना, क्योंकि उनको कुरआन बताती है कि हिन्दू से कैसा व्यवहार

करो। वह केवल कुरआन की बात मानते हैं, किस्सा कहानियों की नहीं। हाँ हिन्दू जरूर भ्रम में पड़ जायेंगे, क्योंकि वह किस्सा कहानी सुनने और सुनकर उनको सच मान लेने के आदी हो चुके हैं। तो सुनिये इस राखी का सच्चा पहलू क्या था? इन नेताओं को राखी शब्द क्या मिला मानो धर्मनिरपेक्षता बजाने का नगाड़ा मिल गया। हुआ यह था कि मालवा और गुजरात में राज्य कर रहा बहादुरशाह, दिल्ली के बादशाह हुमायूँ का जानी दुश्मन था। क्योंकि बहादुरशाह ने हुमायूँ के जानी दुश्मनों को अपने राज्य में शरण दे रखी थी। जिनमें प्रमुख थे इब्राहीम लोदी के चाचा आलम खाँ, हुमायूँ की सौतेली बहन मासूमा सुल्तान के पति मोहम्मद जमाँ मिर्जा और हुमायूँ के खून का प्यासा बाबर का बहनोई मीर मोहम्मद मेंहदी ख़्वाजा। बहादुरशाह ने यह सारे के सारे हुमायूँ के दुश्मन अपने पास बैठा रखे थे। इसीलिये बहादुरशाह, हुमायूँ का नम्बर एक का दुश्मन था, जिससे हुमायूँ की जान और राज के जाने का खतरा था। इसीलिये हुमायूँ, बहादुरशाह को समाप्त करना चाहता था, जिसके लिये मौके की तलाश में था। इसी बीच उसे मौका मिल गया। जब बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर हमला कर दिया और चित्तौड़ के किले को घेर लिया। रानी कर्णवती ने हुमायूँ को राखी भेजकर सहायता करने की गुहार लगायी। हुमायूँ ने जो पहले से ही बहादुरशाह के लिये घात लगाये था, मौका अच्छा समझा कि बहादुरशाह राजपूतों से उलझा है। ऐसे में अचानक हमला कर दो और दुश्मन को खतम कर दो। इसी इरादे से हुमायूँ चला, न कि कर्णवती की रक्षा के लिये। यही कारण था कि हुमायूँ चल तो दिया था, लेकिन रानी कर्णवती की राखी की लाज बचाने के स्थान पर वह रास्ते में डेरा डाल कर बैठ गया। चित्तौड़ के राँणा ने सन्देश पर सन्देश भेजा, लेकिन हुमायूँ टस से मस नहीं हुआ, मौजमस्ती मनाता रहा। क्योंकि हुमायूँ क्या जाने राखी को, उसे तो मतलब था केवल अपने दुश्मन बहादुरशाह से ? बहादुरशाह ने रानी कर्णवती के चित्तौड़ किले को जीत कर, उसे जी भर कर लूटा। रानी कर्णवती की राखी की लाज मुसलमान घुड़सवारों की टापों के नीचे कुचल गयी। बाद में हुमायूँ ने बहादुरशाह का गुजरात तक पीछा किया।

एक दूसरी राखी भोपाल की रानी कमलावती ने दोस्त मोहम्मद को बाँधी थी कि वह उसकी राखी की लाज रखें और उसके पति के हत्यारे बाड़ी बरेली के राजा का बध करे। दोस्त मोहम्मद ने बाड़ी बरेली के राजा का क़त्ल कर दिया, बदले में रानी ने अपने इस राखी भाई को जागीर और बहुत सा धन दिया। धन और जागीर पाने के बाद और शक्तिशाली हो गये दोस्त मोहम्मद ने भोपाल की रानी और अपनी राखी बहन कमलावती का सफाया कर दिया और पूरे भोपाल राज्य को ही हड़प लिया।

हिन्दू बुद्धिजीवियों और नेताओं को हिन्दू-मुस्लिम एकता, साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता देखने की बीमारी हो गयी है। ५ अक्टूबर, २००० को टी०वी० के राष्ट्रीय चैनल में साढ़े आठ बजे रात्रि को प्रसारित होने वाले हिन्दी समाचार में बताया गया कि ''दुर्गा जी की मूर्तियाँ बनाने में कुछ मुस्लिम कलाकार भी हैं, जो हिन्दू-मुस्लिम एकता का जीता जागता उदाहरण है।'' लेकिन यह उस कलाकार का

पेशा है, जिसके बदले वह पैसा लेता है। वह यह कार्य हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये नहीं, बल्कि पैसे के लिये करता है। दुर्गा जी की मूर्ति बनाने का मतलब यह तो नहीं है कि वह उस मूर्ति को पूजता है या उनके प्रति भक्तिभाव रखता है। आखिर इन लोगों को बात की बात पर हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा धर्मनिरपेक्षता क्यों दिखाई देती है ? इससे मुसलमानों में तो कोई असर नहीं पड़ता। हाँ, सीधा-साधा हिन्दू जरूर भ्रमित होता है।

इसी तरह पूर्व प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को वैदिक गणित इसलिये साम्प्रदायिक लगती है, क्योंकि उसमें वेद शब्द जुड़ा है। कल को उन्हें अपना नाम भी साम्प्रदायिक लगने लगेगा, क्योंकि उसमें विश्वनाथ (शंकर जी) का शब्द जुड़ा है।

कब्र या मजार या दरगाह पूजा धर्म विरुद्ध है

यह नेता मजारों (कब्रों) को भी खूब भुनाते हैं। मुसलमानों की कब्र जिसे मजार अथवा दरगाह कहते हैं, में मुसलमानो से अधिक हिन्दू जाते हैं। जिसके लिये यह नेता प्रचार करते हैं कि यह हिन्दू-मुस्लिम एकता का महान उदाहरण है ? इन मजारों को हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रतीक कहकर हिन्दुओं को उनमें चादर चढ़ाते दिखाया जाता है। लेकिन यह नेता हिन्दू मन्दिरों में मुसलमानों से पूजाकराकर हिन्दू-मुस्लिम एकता का उदाहरण क्यों नहीं पेश कराते ? क्या यह ऐसा कर सकते हैं ? उत्तर केवल एक है कि हरगिज नहीं। फिर यह एकतरफा हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात क्यों की जाती है ?

श्री जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गाँधी, इन्दिरा गाँधी, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद आदि की समाधि पर उनकी पुण्यतिथि को गीता, कुरआन आदि सभी धर्मों की पुस्तकों का पाठ होता है। लेकिन जाकिर हुसैन, मौलाना आजाद, फखरूद्दीन अली अहमद आदि मुसलिम नेताओं की मजार पर केवल कुरआन का पाठ होता है। वहाँ यह नेता गीता का पाठ क्यों नहीं करवाते, गुरूग्रन्थ साहब का पाठ क्यों नहीं करवाते, क्या धर्मनिरपेक्षता और दूसरे धर्मों की इज्ज़त करने का ठेका केवल हिन्दुओं ने ही ले रखा है ?

अजमेर सहित भारत की अन्य दरगाहों व मज़ारों में हिन्दू दौड़े चले जाते हैं। अपने बच्चों को मस्जिदों में ले जा कर फूँक मरवाते हैं। ऐसे हिन्दू, दरगाहों मजारों और पीर फकीरों और बाबाओं के नाम से थरथर काँपते हैं। हिन्दू जिस धर्म को मानते हैं, वह अपरिभाषित है। इसीलिये संकट के समय ईश्वर हिन्दुओं का साथ नहीं देता, इतिहास गवाह है। हिन्दुओं की यह मज़ारपरस्ती (मज़ार पूजना) हिन्दू-मुस्लिम एकता का नमूना न होकर, उनकी अज्ञानता और मूर्खता है। हिन्दू धर्माचार्यों को उन्हें ऐसा करने से रोकना चाहिये।

खबरदार ! यह मज़ार और बाबा पूजा बन्द करो। उस परमपिता परमेश्वर की पूजा करो, जो सबको देता है। जिसकी मज़ार में तुम जाते हो अथवा अवतार के नाम पर जिस बाबा की तुम पूजा करते हो, उसको परमेश्वर ने ही पैदा किया और परमेश्वर ने ही जब चाहा उसे मार दिया। उसको अपने जिन्दा रहते जो कुछ

भी मिला (वह चाहे सिद्धियाँ ही क्यों न हों) परमेश्वर से ही मिला। अनन्त सूर्यों, अनन्त अनन्त ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने वाला, उन्हें प्रकृति के नियमों में बाँधकर निश्चित गति देने वाला तथा उनका विनाश करने वाला, प्रकाश की गति से अनन्त गुणा गति दे सकने वाला वही परमपिता परमेश्वर ही है। उसकी इस महान अनन्त रचना के सामने, हम क्या ? हमारी पृथ्वी ही लगभग शून्य के समान है। इसलिये जो भी माँगना है उस परमपिता परमेश्वर से ही माँगो। देना अथवा न देना तुम्हारे कर्म और उसकी इच्छा पर निर्भर है। गीता में भगवान् कहते हैं कि भूत प्रेत, मुर्दा (खुला या दफनाया हुआ अर्थात् कब्र अथवा समाधि) को सकामभाव से पूजने वाले स्वयं मरने के बाद भूत प्रेत ही बनते हैं।

यान्ति देवव्रता देवान् पितृन्यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपिमाम्।।

हिन्दुओं की मूर्खता

बहराइच, उ० प्र० में ग़ॉजी मियाँ की मजार (कब्र) है, जिसको पूजने देश के कोने-कोने से हिन्दू आते हैं। यह गाजी मियाँ महमूद गजनवी के पुत्र सालार मसूद गॉज़ी थे। महमूद ग़जनवी द्वारा सोमनाथ मन्दिर में भयानक मार काट के बाद मन्दिर से लूटा गया धन इसी सालार मसूद गॉजी की निगरानी में गजनी ले जाया गया था। सन् १०३० में जब महमूद गजनवी की मृत्यु हो गयी, तो सालार मसूद ग़ाजी ग़जनी का बादशाह हुआ। बाद में सन् १०४० में तुर्कों ने ग़जनी को जीत लिया और सालार मसूद गाजी भारत की ओर भागा। उसे अपने इस चरागाह की याद आयी, जिसमें उसने अपने पिता के साथ बिना किसी खास रोक-टोक के लूटपाट, मारकाट की थी। यह याद आते ही सालार मसूद गाजी ने भारत में मारकाट और लूटपाट के साथ प्रवेश किया और बहराइच उ० प्र० तक जा पहुँचा, जहाँ राजा सुहेल देव पासी के हाथों मारा गया। उसके सैनिकों ने उसे यहीं दफन कर दिया। जिसकी कब्र गाजी मियाँ के नाम से मशहूर है। आज उसी ग़ाजी मियाँ को हिन्दू अपना कुल देवता बना कर पूज रहे हैं, जो उन्हीं को काटने चला था। अगर वह जिन्दा होकर उठ सकता, तो अपनी कब्र पूजने वाले काफ़िर हिन्दुओं का सिर धड़ से अलग कर देता। आज ग़ाजीमियाँ की तो हिन्दू धूमधाम से पूजा कर रहा है, जो उन्हें काटनें आया था। लेकिन सालार मसूद ग़ाजी को मारकर हिन्दुओं को कटने से बचाने वाले सुहेलदेव पासी का कोई नाम तक नहीं जानता। तैंतीस करोड़ देवताओं में क्या एक भी ऐसा काबिल देवता नहीं था, जिसे ऐसे मूर्ख हिन्दू अपना कुल देवता बना सकते ? संसार में इससे बड़ी धार्मिक अनुशासनहीनता और मूर्खता का उदाहरण आपको नहीं मिलेगा। इस गाजी पूजा को हिन्दू-मुस्लिम एकता का बेजोड़ उदाहरण बताया जाता है।

आज अगर किसी मन्दिर के पास में कोई मजार है, तो हिन्दू मन्दिर में कम, मजार में अधिक जायेंगे, इसके पीछे आज के हिन्दुओं के धर्म में सच्चाई, त्याग, वीरता, उत्साह और साहस के स्थान पर, स्वार्थ तथा लालच पैदा करने वाली, झूठे चमत्कारों वाली कथाएँ हैं। हिन्दू बचपन से लेकर बूढ़े होने तक

चमत्कारों की झूठी कहानियाँ सुनता रहता है। इसीलिये वह ऐसे ही चमत्कारों को देखने की इच्छा लेकर बाबाओं, कब्रों, मजारों या दरगाहों में भटकता रहता है। जहाँ हाथ की सफाई या चेलों द्वारा किये जा रहे नाटक से प्रभावित होकर ठगा जाता है।

हिन्दुओं की धार्मिक अनुशासनहीनता

आज जब हिन्दू की परिभाषा की बात आती है, तो हिन्दू संगठनों के अगुआ दार्शनिक की सी मुद्राएँ बनाकर कहते हैं कि हिन्दू का अर्थ बड़ा व्यापक है। यह रहन सहन का एक तरीका है, जीवन पद्धति है। यह अनेकों मतों क़ी खिचड़ी है। ऐसे लोग यह कहकर समाज की जिम्मेदारी से भाग लेते हैं। अगर आपने हिन्दू को खिचड़ी बना रखा है, तो उस खिचड़ी की भी एक निश्चित आचार संहिता होनी चाहिये। आज आप श्रीराम अथवा श्रीकृष्ण को मानो तो हिन्दू अथवा उनको पेरियार की तरह झाडू से पीटो तो भी हिन्दू। ईश्वर का अस्तित्व मानो तो हिन्दू, नास्तिक रहो तो भी हिन्दू। देवताओं को मानो तो हिन्दू, न मानो अथवा कोई अपना नया देवता गढ़ लो तो भी हिन्दू। हम तैतीस करोड़ देवता पूज कर नहीं छके, तो नये नये देवता और अवतार गढ़ते जा रहे हैं। धर्म के नाम पर ऐसी अनुशासनहीनता और मनमानी संसार के किसी धर्म में नहीं हैं, जैसी आज के हिन्दू धर्म में है। धर्म लोगों को एक निश्चित सीमा में बाँधता है। लेकिन आज के हिन्दू धर्म में कोई सीमा है ही नहीं। धर्म को तो हमने मनोरंजन का साधन बना लिया है। जिसमें समय-समय पर अपनी पसन्द के अनुसार नमक मिर्च मिलाकर अपना जायका बदलते रहते हैं। कुछ लोग इसे धार्मिक उदारता भी कहते हैं। ऐसी उदारता हमारे वैदिक धर्म में नहीं है, यह तो केवल हमारी मनमानी है। आज हिन्दू का मतलब है बेलगाम। लेकिन कुछ हिन्दुओं को इसी पर गर्व है।

जब तक किसी समाज की एक निश्चित आचार संहिता न होगी, उसे एक निश्चित सीमा में नहीं बाँधा जायेगा, तब तक वह समाज संगठित और अनुशासित नहीं हो सकता। इसीलिये जहाँ हिन्दू की बात है, वहाँ अनुशासन नाम की कोई चीज नहीं है। यही है हिन्दू समाज की कमजोर नस। इसी कमजोर नस को दबाकर मुट्ठीभर मुसलमान इस देश में एक हजार साल तक राज करते रहे।

हिन्दू कायरता

आज हमारा हिन्दू समाज इतना कायर हो चुका है कि जब हम हिन्दुओं को लगता है कि हमारे साथ अन्याय हो रहा है, तो हम मुकाबला करने के स्थान पर आत्महत्या करते हैं। मंडल कमीशन के विरोध के नाम पर क्या हुआ? हिन्दू नौजवानों ने महान् कायरता और नपुंसकता का प्रदर्शन करते हुये खुद को आग में जलाना (आत्मदाह) शुरू कर दिया। फिर तो आत्मदाह कर अपने को जिंदा जला डालने की हिन्दू नौजवानों में होड़ लग गई। यह सब करके इन हिन्दू नौजवानों ने इतिहास को दोहरा दिया कि इनसे बड़ा नपुंसक, इनसे बड़ा जनाना इस दुनिया में कोई माई का लाल नहीं है। यह कोई पहला मौका नहीं है, जब हिन्दुओं ने मुकाबला करने के स्थान पर आत्महत्या की हो। झूठी किस्सा कहानी रूपी कायरता

वाली बातें अपनाने के बाद से वह ऐसा ही करते आये। सन् १००० में जब हिन्दू राजा जयपाल महमूद गज़नवी से परास्त हुआ, तो पुनः महमूद से बदला लेने के स्थान पर वह चिता में जिन्दा ही जलकर मर गया। सन् १००३ में जब भेरा के राय को महमूद गजनवी ने हराया, तो पुनः मुकाबला करके बदला लेने के स्थान पर वह भी आत्महत्या करके मर गया। सन् १५२७ में बाबर ने जब चन्देरी पर हमला किया, तो चन्देरी के राजा मेदिनीराय तथा उसके अन्य सहयोगी राजपूतों ने अपनी स्त्रियों व बच्चों को जिन्दा जला दिया और खुद निहत्थे तथा नंगे होकर किले के बाहर दौड़ पड़े, जिससे वह रणक्षेत्र में मरकर स्वर्ग जा सकें। वीरता से युद्ध करने के स्थान पर यह नरक में ले जाने वाली नपुंसकतापूर्ण सामूहिक आत्महत्या ही थी। बाबर को केवल तमाशा देखते-देखते चन्देरी का किला मिल गया। बाबर ने निहत्थे और लड़ने के स्थान पर, दुश्मन के हाथों केवल मर कर स्वर्ग जाने ? की इच्छा रखने वाले उन राजपूतों के सिर धड़ से अलग करवा दिये। काटे गये सिरों को चन्देरी की पहाड़ी पर एक के ऊपर एक रखवाकर इन सिरों का विशाल स्तूप (गुम्बद) बनवाया। इस तरह अपनी विजय का जश्न मनाकर, उनको सड़ने और चील कौवों के खाने के लिये छोड़कर दिल्ली वापस लौट गया। मोहम्मद शहाबुद्दीन गोरी ने सन् ११९२ में पृथ्वीराज चौहान को हराकर बाद में उसकी हत्या कर दी। पृथ्वीराज की मौत का बदला लेने के लिये पृथ्वीराज के छोटे भाई हरिराज ने सेना इकट्ठी की और सन् ११९५ में दिल्ली में हमला कर दिया। मोहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने इस सेना को मार भगाया तथा उसका पीछा करते हुए अजमेर आ गया और अजमेर के किले को घेर लिया। इस किले के अन्दर बैठे हरिराज ने कुतुबुद्दीन का मुकाबला करने के स्थान पर आग लगाकर आत्महत्या कर ली।

आखिर क्या कारण था कि मुट्ठी भर मुसलमानों ने इस देश में आकर प्रलय मचा दी, जब चाहा और जितना चाहा उन्होंने हिन्दुओं को मारा, काटा और लूटा। क्या कारण था कि मुसलमान इस देश में एक हजार साल तक अल्लाहु अकबर के नारे के साथ इस्लामी घोड़े दौड़ाते रहे और इस बीच दो-चार को छोड़कर कोई हिन्दू राजा उनके घोड़ों की लगाम नहीं पकड़ सका। सभी राजा या तो परास्त होकर उनके आधीन हो गये अथवा मारे गये। इसके कारण थे खुद असावधान हिन्दू राजा व हिन्दू प्रजा। जो जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छुआछूत में बँटे रहकर झूठे चमत्कारों वाली धार्मिक किस्सा-कहानियाँ सुन-सुनाकर मजा लेते हुए अपने मुँह से अपनी ही प्रशंसा करने और गाल बजाने में मस्त थे। जाति के कारण मैं बड़ा या तू बड़ा की झूठी शान दिखाने के लिये एक दूसरे से सदैव जलते रहे, एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिये मुसलमान हमलावरों को मदद देते रहे और उनकी मुखबिरी करते रहे। खतरा आने पर मुकाबला करने के स्थान पर भगवान से बचाने की प्रार्थना करते रहे और चमत्कार होने का इंतजार करते रहे अथवा आत्महत्या करते रहे। जिसका परिणाम हुआ कि एक-एक करके बारी-बारी से सभी हिन्दू राजा पिटते गये।

हिन्दुओं ने अपने को सुधारने के स्थान पर मुसलमानों के लात जूते खाना, सिर उठाने के स्थान पर सिर कटवाना और अपनी बहन-बेटी छिनवाना पसन्द किया। यह सारी कमजोरियाँ हिन्दुओं के बीच आज भी वैसे ही मौजूद हैं, जिन्हें दूर करना प्रत्येक हिन्दू नौजवान का धार्मिक कर्त्तव्य है। क्योंकि भविष्य में यह खतरा उसे ही झेलना पड़ेगा।

कुछ हिन्दू मेरे इस सुधार अभियान से नाक-भौं सिकोड़ेंगे, कहेंगे यह तो मनोबल गिराते हैं, डरवाते हैं और भी तरह-तरह के आरोप हमारे खिलाफ लगाये जायेंगे। लेकिन तुम खुद इस सच्चाई को जो मैंने लिखी है, पढ़ो और समझो कि सही कौन है ? क्या यह डरवाना है या कमजोरियाँ भगाकर वीर, साहसी और संगठित बनाना। अगर यह कमजोरियाँ हिन्दुओं में बनी रहीं, तो वे आने वाले खतरों का मुकाबला कभी भी न कर सकेंगे।

हिन्दू समाज में कायरता की जड़ कहाँ है ?

हिन्दू समाज की कायरता की जड़, आज के हिन्दू समाज में प्रचलित कुछ कुरीतियाँ और मान्यताएँ हैं। आर्यो का वैदिक धर्म, जो विज्ञान व तर्क से पूर्ण है। जो केवल सत्य को लेकर चलने के कारण मनुष्य के जीवन में वीरता, साहस, कर्म करके ही सब कुछ पाने का संकल्प और प्रकृति में सत्य की खोज के प्रति जिज्ञासा पैदा करता था, वह श्रेष्ठ वैदिक धर्म आज हिन्दुओं से दूर हो गया है। धर्म की कसौटी पर केवल वैदिक धर्म ही खरा उतरता है। लेकिन हिन्दू, आज अपने उस श्रेष्ठ वैदिक धर्म से भटक गया है। आज हिन्दुओं का धर्म किस्सा कहानियाँ, ऊँच-नीच और छुआ-छूत हो जाने के कारण हिन्दू कायर हो गया है, जो चमत्कारों की प्रतीक्षा में बैठा रहता है। व्रत आदि तो आत्मशुद्धि के लिये ठीक हैं। लेकिन व्रत के नाम पर गढ़ ली गयी झूठी कहानियाँ कायर और अकर्मण्य बनाती हैं। आज हिन्दुओं को अव्यवहारिक अहिंसा, अतिसहिष्णुता या अतिसहनशीलता, ऊँच-नीच, छुआ-छूत, स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष आदि कमजोरियों ने जकड़ रखा है। इन्हीं कमजोरियों के कारण हिन्दू समाज उत्साहहीन, डरपोक और असंगठित है। जबकि हमारे पुरखे वैदिक आर्य इस प्रकार की सभी कमजोरियों से अपने को बहुत दूर रखते थे। इसीलिये वह उत्साही, वीर, साहसी और पूर्णसंगठित थे। अपने ऐतिहासिक गौरव को वापस पाने के लिये हिन्दुओं को अपनी यह कमजोरियाँ छोड़नी होंगी।

आज हिन्दू कितने अव्यवहारिक हो चुके हैं, इसका उदाहरण दे रहा हूँ। जब मैं उन्हें कट्टर मुल्लावादी मुसलमानों द्वारा किये गये भीषण अत्याचारों की सच्ची कहानियाँ सुनाता हूँ। भविष्य में इन अत्याचारों से बचाव का रास्ता बताता हूँ। जिससे आने वाले खतरे से धर्म की रक्षा होनी है, हिन्दुओं की रक्षा होनी है, उनकी सन्तानों की रक्षा होनी है, तो सुनने वाले हिन्दुओं को ऐसा लगता है कि जैसे मैं हिंसा की बातें कर रहा हूँ, धर्म की बात नहीं कर रहा। लेकिन अगर मैं चमत्कारों वाली झूठी कहानियाँ सुनाऊँ, तो वह हाथ जोड़कर बड़ी ही श्रद्धा से सुनते हैं। वास्तव में हिन्दू (विशेषकर ६० वर्ष के ऊपर के हिन्दू) सत्य को नहीं, असत्य को सुनना चाहते हैं। जो धर्म न होकर अधर्म है। इस साधारण से तर्क को हिन्दू क्यों

नहीं समझते ? धर्म का उद्देश्य है सत्य को बताना, न कि झूठी कहानियाँ सुनाना।

राक्षसों के बध वाली देवी-देवताओं की कहानियाँ इसलिये बनायी गयी थीं कि उनसे प्रेरणा पाकर लोग अन्यायियों, अत्याचारियों और राक्षसी प्रवृत्ति के लोगों के विरुद्ध स्वयं उठ खड़े होना अपना धर्म समझें और देवी-देवताओं द्वारा धारण किये गये हथियारों से प्रेरणा पाकर लोग खुद शक्तिशाली बने। लेकिन कुछ कायरों ने इसका अर्थ यह दे दिया कि जब भी अत्याचारी अत्याचार करेंगे, तो तुम्हारी रक्षा के लिये इसी तरह देवी-देवता अपने हथियारों सहित आयेंगे। आज के अधिकांश हिन्दू इसी मान्यता पर विश्वास करते हैं।

इसीलिये कठिनाइयों और खतरों का सामना करने के स्थान पर चमत्कार की प्रतीक्षा में देवी-देवताओं के सहारे बैठे रहते हैं। अतः वे खतरों की तरफ नहीं देखते। खतरा न देखने के कारण वह उससे बचने के लिये संगठन व एकता की जरूरत नहीं समझते। जिस कारण वह अपने शत्रुओं द्वारा आसानी से घेर लिये जाते हैं। हिन्दू लोग धार्मिक कट्टरता का मुकाबला, धर्मनिरपेक्षता से करना चाहते हैं। छल और कपट का मुकाबला, नैतिकता से करना चाहते हैं। हिंसा का मुकाबला अहिंसा से और घृणा का मुकाबला प्रेम से करना चाहते हैं। यह सुनने में जितना ही अच्छा है, इसका परिणाम उतना ही बुरा है। इस प्रकार के मुकाबले से हिंसा, घृणा, छल-कपट और धार्मिक कट्टरता फैलाने वालों को मदत ही मिलती है। इससे उनका काम आसान हो जाता है। यह मुकाबला गीता के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। हिन्दुओं की यह आदतें उनके श्रेष्ठ वैदिक धर्म के बिल्कुल विपरीत हैं। अतः हिन्दुओं को अपनी इन आदतों से छुटकारा पा लेना चाहिये।

संसार में हिन्दू, वीरता और साहस के सभी कीर्तिमान तोड़ सकते हैं

प्राचीन काल में सभी वैदिक आर्य हिन्दू संसार के श्रेष्ठ साहसी योद्धा थे। वीरता और साहस उनका स्वाभाविक गुण था। यह स्वाभाविक गुण उनको अपने श्रेष्ठ वैदिक धर्म से मिला था। ऋग्वेद और श्रीमद्भगवद्गीता से प्रेरणा व आदेश प्राप्त कर, वह कर्म से अपना भाग्य बनाते थे। उनमें जाति प्रथा नहीं थी। वर्ण व्यवस्था कर्म के अनुसार थी, कर्म के अनुसार वर्ण बदला भी जा सकता था। लेकिन उनमें छुआछूत नहीं थी, केवल मन और शरीर की शुद्धता पर ध्यान दिया जाता था। आपस में पूजा-पाठ और सामूहिक भोज में बिना किसी भेदभाव के सभी वर्ण के लोग सम्मिलित होते थे। इसीलिये उनमें ईर्ष्या, द्वेष आदि नहीं था। आपस में वे पूरी तरह संगठित थे। अन्यायियों, अत्याचारियों और खतरों के विरुद्ध वे संगठित और सतर्क थे तथा उनको क्रूरता से कुचल देते थे। भय, अकर्मण्यता और कायरता को वह पास नहीं फटकने देते थे। उन्हीं श्रेष्ठ आर्यों का रक्त (खून) आज के सभी हिन्दुओं में बह रहा है। जिसका स्पष्ट प्रभाव हमारी अनुशासित सेना के सिपाहियों में वीरता और साहस के रूप में देखा जा सकता है। संसार में आज हिन्दुओं के एक संगठन द्वारा (मैं उसका नाम नहीं लिखना चाहता) वीरता और साहस के सभी कीर्तिमान ध्वस्त कर दिये गये हैं। इस देश के ८० करोड़ हिन्दू यदि चेत जायँ, तो वे दुनियाँ हिला कर रख सकते हैं तथा सारे संसार में अपनी बुद्धि,

वीरता और साहस के झंडे गाड़ सकते हैं। लेकिन दुःख है कि ऐसे गौरवशाली इतिहास वाले भारत के हिन्दू समाज ने आज कायरता के सभी कीर्तिमान ध्वस्त कर रखे हैं।

हिन्दुओं की अदूरदर्शिता

हिन्दू सबसे पहले पाण्डेय, शुक्ला, पटेल, यादव, जाट, जाटव, रेड्डी, बनर्जी, चटर्जी आदि है और बाद में हिन्दू। पहले अगड़ा, पिछड़ा, दलित हैं, बाद में हिन्दू। पहले उत्तर भारतीय, दक्षिण भारतीय, बंगाली, बिहारी आदि हैं, बाद में हिन्दू, अर्थात दुनियाँ भर के मतभेद पहले हैं, बाद में हिन्दू। लेकिन मुसलमान पहले मुसलमान हैं, बाद में शेख, सैय्यद, पठान, जुलाहा। पहले मुसलमान हैं फिर भारतीय, पाकिस्तानी, ईरानी, ईराकी, सूडानी, अरबी आदि। इसीलिये मुसलमानो पर जब खतरा आता है, तो तुरन्त सारी दुनिया के मुसलमान एक होकर एक स्वर में चिल्लाने लगते हैं। वह आपस में मुसलमान-मुसलमान चाहे कहीं भले लड़ रहे हैं, लेकिन इस्लाम खतरे में है का नारा लगते ही सभी तुरन्त एक हो जाते हैं।

कुछ हिन्दू यह सोचकर ही प्रसन्न हो जाते हैं कि दुनियाँ में मुसलमान आपस में लड़ मर रहा है। कराँची (पाकिस्तान) में मुहाजिर (शरणार्थी) मुसलमानों की लड़ाई में रोज दस-बीस मुसलमान मरते हैं। उनको मेरा जवाब हैं कि कराँची पाकिस्तान का केवल एक शहर है और दुनियाँ में ५३ मुसलमानी देश हैं। दुनियाँ की दूसरे नम्बर की मुसलमानों की आबादी (ईसाइयों का पहला नम्बर है) में प्रतिदिन सौ-पचास लोगों का लड़कर मरना कोई माने नहीं रखता। फिर दुनियाँ की बात छोड़िये कि वहाँ क्या हो रहा है ? भारत से पाकिस्तान गये मुहाजिर मुसलमानों को वहाँ भले ही दबाया जा रहा हो, पर आपके देश में मुसलमान, हिन्दुओं के खिलाफ एक जुट हैं। वह आपस में चाहे जैसें हैं, शिया हैं या सुन्नी, लेकिन तुम्हारे खिलाफ एक हैं। चाहे युद्ध का मैदान हो या क्रिकेट और हाकी का, पाकिस्तानवादी भारतीय मुसलमान पाकिस्तान का ही पक्ष लेते हैं। कारगिल युद्ध के समय विश्व कप क्रिकेट में भारत ने पाकिस्तान को हरा दिया। भारत की इस जीत से उत्साहित व कारगिल में शहीद हो रहे भारतीय सैनिकों को देखकर क्रोधित हिन्दू नौजवानों ने अलीगढ़ (उ० प्र०) में जब पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाये, तो पाकिस्तानी टीम की हार से बौखलाये पाकिस्तानवादी मुसलमानो ने हिन्दुओं के ऊपर ईंट पत्थर व गोलियाँ चलाकर दंगा करने की कोशिश की।

कुछ हिन्दू यह कह देंगे कि इतिहास की बात छोड़िये, अब तो हमने पाकिस्तान को पटकनी लगा दी, युद्ध में हरा दिया। ऐसा कहने वाले तब क्या करेंगे जब मुसलमान अपनी एकता और तेजी से बढ़ रही आबादी के बल पर चुनाव जीत कर भारत का राज पा जायेंगे, तब यह भारतीय सेना मुसलमानो के अधीन होगी। उस समय सत्ता में बैठे मुसलमान पूरा प्रयत्न करेंगे कि हिन्दू हथियार विहीन हो जायें। इसके लिये फौज और पुलिस से हिन्दू निकाल बाहर किये जायेंगे। जो लोग इसके बाद भी कहेंगे कि मुसलमान राज पायेंगे ही नहीं, वे महामूर्ख हैं, उन्हें समझाया नहीं जा सकता।

मैं इतने तर्क और उदाहरणों को देकर इसलिये समझा रहा हूँ कि कहीं तुम भी इन सोने वालों के साथ सो न जाओ। याद रखो और सदैव याद रखो, जो व्यक्ति हर समय अपनी कमजोरियों को ढूँढ़ता रहता है और उन्हें दूर करता है, वह कभी असफल नहीं होता। लेकिन हिन्दुओं ने यही नहीं किया। वह अपनी कमजोरियों को न देखना चाहते हैं और न ही सुनना चाहते हैं। इसीलिये वह लगातार सैकड़ों साल तक मुसलमान हमलावरों से हारते रहे, पिटते रहे और अपमानित होते रहे।

हिन्दुओं की आरक्षण की लड़ाई से कट्टर मुसलमान खुश

आज आरक्षण के नाम पर हिन्दुओं की आपसी लड़ाई से या तो इस देश के जातिवादी नेता खुश हैं अथवा मुसलमान खुश है, जो चाहते ही हैं कि हिन्दुओं में अधिक से अधिक फूट पड़ जाये, जिससे मुसलमान अपनी एकता के बल पर जल्दी से जल्दी भारत का राज हथिया सकें। जरा देखिये दलित हिन्दुओं (हरिजनों) को आरक्षण मिले इतने साल हो गये, फिर भी देहातों तथा शहरों के हिन्दू अपने अगल बगल देखें, तो पता चलेगा कि अधिकांश दलित वही झाड़ू लगाते, मजदूरी करते अथवा जूता चप्पल गाँठते ही नजर आयेंगे। इन नेताओं के पास नौकरी है ही नहीं, इसीलिये इन्होंने चालाकी से कुछ जातियों को दलित तथा कुछ को पिछड़ा के नाम पर आरक्षण का झुनझुना पकड़ा दिया।

आरक्षण पाने वाले नौजवानो ! तुमको आरक्षण ही मिला है, नौकरी पाने की गारण्टी नहीं मिल गयी। फिर भी तुम मतवाले होकर, आरक्षण देने वाले नेताओं की जय-जयकार करके, आरक्षण न पाने वालों से लड़ने और मरने-मारने पर उतारू हो। इन नेताओं ने इसीलिये आरक्षण का टुकड़ा फेंका था कि तुम आपस में लड़ो और यह तुमको भड़का कर, तुम्हारा उपयोग कर अपनी कुर्सी को पक्की रखें। याद रखो ! जाति अथवा आरक्षण के नाम पर हिन्दुओं की इस फूट से फायदा उठा कर जब भविष्य में मुसलमान उम्मीदवार चुनाव जीतकर इस देश का राज हथियायेंगे, तो यह आरक्षण मिलना तो दूर, हिन्दुओं के पास जो नौकरियाँ हैं, वह भी उनसे छीन ली जायेंगी। वे गुलामों की तरह केवल चपरासी, झाड़ू लगाने, सफाई करने आदि की नौकरी करते ही दिखाई देंगे। इसलिये बन्द करो, आरक्षण पर प्रसन्न होने या दुःखी होने का यह मूर्खतापूर्ण नाटक।

दूसरी तरफ मुसलमानों ने नौकरी के पीछे भागने के स्थान पर कारीगरी का काम अपना लिया है। वह उन चीजों को सुधारते व बनाते हैं, जिनके बिना आपका काम नहीं चल सकता। इसीलिये चाहे वह १० बच्चे पैदा करें या १५, उन्हें कोई चिन्ता नहीं रहती। बच्चा पाँच साल का हुआ कि हथौड़ी पकड़ा दी, काम सीखने लगा। इस तरह उनका रोजगार ऐसा है कि काम करवाने के लिये या सामान के लिये आप उनको पैसा लेकर ढूढ़ते फिरेंगे। इससे एक बात और है, नौकरी पेशा हिन्दू झगड़ा-लड़ाई से डरते हैं कि पुलिस के लफड़े से उसकी नौकरी न चली जाये। लेकिन मुसलमान दंगा करने या झगड़ा करने में पकड़ा गया, तो छूटते ही

फिर हथौड़ी लेकर बैठा नहीं कि आप उसके पास काम के लिये दौड़े चले आयेंगे।

आरक्षण के नाम पर खुश होने या आरक्षण का विरोध करने वालो! तथा आज के इन जातिवादी और अवसरवादी नेताओं का साथ देकर अपने को मुल्लावादी मुसलमानों की गुलामी में जकड़ देने के लिये कमर कस चुके, ऐ नादान हिन्दू नौजवानों ! ठहरो ! कहाँ जा रहे हो ? तुम्हारी इस स्वार्थ की लड़ाई से व इन जातिवादी नेताओं का साथ देने से तुम्हारा ही नहीं, पूरे हिन्दू समाज का सर्वनाश हो जायेगा।

जब हिन्दू कलेक्टर, एस०पी० निकाल बाहर किये जायेंगे

पहले मैं अधिकतर मुस्लिमों के बीचे विभिन्न विषयों पर चर्चा किया करता था। क्योंकि इससे बड़े काम की बाँतें मालूम होती थीं। ऐसी ही एक चर्चा में उन्होंने एक बार मुझसे कहा कि ''हम लोग १०-१५ बच्चे पैदा करके उनको कारीगर बनायेंगे और आप हिन्दू, दो बच्चे पैदा कर कलक्टर, एस० पी बनाओ। फिर जब हम अपनी आबादी बढ़ाकर चुनाव जीत कर राज पायेंगे, तो तुम्हारे कलक्टर, एस० पी० को कान पकड़कर निकाल बाहर करेंगे और उनकी कमाई गयी दौलत व मकान पर भी कब्जा करेंगे। अगर आप सोंचते हों कि आप कानून का सहारा लोगे, तो मुसलमानो के राज में हिन्दुओं का बनाया कानून नहीं चलेगा। इस्लाम स्वयं में एक कानून है, संविधान है।''

इस देश में सारी खुराफात की जड़ नेहरू और उनकी कांग्रेस

नकली धर्मनिरपेक्षतावादी पार्टी कांग्रेस के नेता कहते हैं कि यदि हिन्दू ने एकता की, तो मुसलमान इस देश के टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। लेकिन इसकी नौबत लाने का जिम्मेदार कौन है ? सन् १९४७ में भारत का बँटवारा धर्म के आधार पर हुआ और मुसलमानों के लिए अलग देश पाकिस्तान बना। इसीलिए सरदार पटेल और डा० भीमराव अम्बेडकर चाहते थे कि आबादी का भी बँटवारा हो अर्थात् सभी मुसलमान पाकिस्तान जायें और हिन्दू भारत आयें। पाकिस्तान बनाने वाले मोहम्मद अली जिन्ना भी इसके लिए तैयार थे। इस तरह सन् ११९२ में मोहम्मद शहाबुद्दीन गोरी द्वारा पृथ्वीराज चौहान से इस देश की राजसत्ता हथियाए जाने के पूरे ७५५ वर्षों बाद इस देश को मुस्लिम आतंकवाद से सदा के लिए छुटकारा पाने का सुनहरा अवसर मिला। लेकिन इस सुनहरे अवसर को श्री जवाहरलाल नेहरू ने अपनी धर्मनिरपेक्षता की गलत नीति के कारण खो दिया। मुसलमानों ने अपने लिए अलग देश पाकिस्तान ले लिया, तो फिर मुसलमानों को यहाँ क्यों रहने दिया गया। 'हँसकर लिया है पाकिस्तान, लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान' का नारा लगाने वाले मुसलमानों को भारत में रहने देकर, श्री जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दू और मुसलमानों के बीच झगड़े का बीज सदैव के लिये बो दिया। भारत में रह गये इन मुसलमानों ने दर्जन-दर्जन भर बच्चे पैदा करके अपनी आबादी इतनी बढ़ायी कि आज भारत, दुनियाँ में मुसलमानों की सबसे अधिक आबादी वाला देश बन चुका है।

भारत के बँटवारे के बाद शेष भारत के भी इस्लामीकरण की एक निश्चित योजना के तहत कट्टरतम मुसलमान पाकिस्तान न जाकर नेहरू और उनकी

कांग्रेस के सहयोग से भारत में ही रुक गये। कितनी बेतुकी बात है कि मुसलमानों ने भारत का बँटवारा करवाकर अपने लिये पाकिस्तान के रूप में अलग देश बना लिया। फिर भी भारत आज दुनियाँ में मुसलमानों की सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया। जिसका परिणाम आज नहीं तो कल इस देश को भुगतना पड़ेगा। कांग्रेस और इस देश के तमाम नकली धर्मनिरपेक्षतावादी नेताओं को इसका जवाब देना पड़ेगा।

सन् १९४७ में पाकिस्तानी कबायली मुसलमानों के द्वारा कब्जा कर लिये गये कश्मीर को भारतीय सैनिक अपनी जान पर खेलकर तेजी से वापस लेते जा रहे थे कि अचानक श्री जवाहरलाल नेहरू को शान्ति की सनक सवार हुई और उन्होंने एकतरफा युद्ध बन्द करवा कर तेजी से आगे बढ़ रही भारतीय सेना के पाँव रोक दिये। इस तरह कश्मीर की ८३२९४ वर्ग किलोमीटर भूमि पाकिस्तान ने हड़प ली। श्री नेहरू तथा उनकी कांग्रेस ने धारा ३७० में कश्मीर के लिये शेष भारत से अलग कानून बनवाकर कश्मीरी मुसलमानों के मन में अलगाववाद की भावना बढ़ाकर, उनके हौसले बुलन्द कर दिये। इसी कानून के कारण शेष भारत के हिन्दू, कश्मीर में जमीन खरीद कर बस नहीं सकते। जो वहाँ पहले से थे, वह भी मार भगाये जा रहे हैं। आज कश्मीर में मुस्लिम आतंकवाद कांग्रेस की देन है।

पाकिस्तान बना लेने और वहाँ हिन्दुओं का कत्लेआम करने के बाद भी भारत में रह गये मुसलमानों के हौसले श्री नेहरू ने इतने बढ़ाये कि जिस बन्देमातरम् का घोष करते हुये शहीद भगतसिंह और चन्द्रशेखर आजाद जैसे सभी क्रान्तिकारियों ने मातृभूमि के लिये मौत को गले लगाया। मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे अत्यन्त कट्टर किन्तु बेहद चालाक मुसलमान नेता के नेतृत्व में मुसलमानों ने उसी बन्देमातरम् को राष्ट्रगान बनाने का जोरदार विरोध इस आधार पर किया कि बन्देमातरम् इस्लाम के विरुद्ध है। इन कट्टर मुसलमानों को खुश करने के लिये बन्देमातरम् को नेहरू की कांग्रेसी सरकार ने उठाकर कूड़ेदान में फेंक दिया और ब्रिटेन के सम्राट जार्ज पंचम के भारत आगमन पर उनके स्वागत में बनाये गये स्वागतगान जन गण मन.... को ही राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार कर लिया।

पाकिस्तानवादी पार्टी मुस्लिम लीग के गढ़ अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के ९० प्रतिशत से अधिक मुस्लिम छात्र भारत के बँटवारे के बाद पाकिस्तान चले गये थे। इसके बाद यह विश्वविद्यालय, मुस्लिम विश्वविद्यालय बने रहने का हकदार नहीं था। लेकिन श्री नेहरू के शिक्षा मंत्री अबुल कलाम आजाद ने विशेष रूचि दिखाकर उसको मुस्लिम विश्वविद्यालय बना रहने दिया। जो आज मुल्लावादी मुसलमानों और स्टूडेन्ट्स इस्लामिक मूवमेन्ट ऑफ इंडिया (भारतीय तालिबानों) का गढ़ बना हुआ है। इन्हीं मौलाना आजाद ने भारत के बँटवारे का विरोध किया था। इस कारण श्री नेहरू ने उन्हें महान् राष्ट्रवादी घोषित कर रखा था। जबकि मौलाना आजाद ने भारत के बँटवारे का विरोध अपने कट्टर मुल्लावाद के कारण किया था। मौलाना आजाद ने स्वयं अपनी पुस्तक 'इंडिया विन्स फ्रीडम' में इसकी

चर्चा की है। मौलाना आजाद पाकिस्तान के बनने का विरोध इस आधार पर कर रहे थे कि इससे मुस्लिम आबादी पाकिस्तान और भारत में बँट जायेगी। बड़े हिस्से भारत में मुस्लिम बहुत कम रह जायेंगे, इस तरह भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनाने में समय लगेगा। लेकिन अगर बँटवारा न होता, तो कुछ दिनों बाद ही मुसलमानों की आबादी इतनी बढ़ जाती कि मुसलमान चुनाव जीत कर अखण्ड भारत को ही मुस्लिम राष्ट्र बना देते। ऐसे विचारों वाले अरब में पढ़े लिखे कट्टर मुल्लावादी मौलाना अबुल कलाम आजाद को श्री नेहरू ने भारत का शिक्षा मंत्री बना रखा था।

श्री जवाहरलाल नेहरू के अव्यवहारिक शान्तिवादी ढोंग के कारण ही चीन ने सन् १९६२ में भारत की ३७५५५ वर्ग किलोमीटर जमीन पर कब्जा कर लिया। सन् १९६५ व सन् १९७१ के भारत पाकिस्तान युद्ध में हजारों भारतीय सैनिकों ने अपनी जान देकर पाकिस्तान की जमीन कब्जा की, लेकिन पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर को वापस लिये बिना ही ताशकंद और शिमला समझौता करके यह जमीन और बंगलादेश में बन्दी बनाये गये ९३ हजार पाकिस्तानी सैनिक पाकिस्तान को लौटा कर मातृ-भूमि पर मर मिट जाने वाले हजारों भारतीय सैनिकों के साथ विश्वासघात करने का काला कारनामा इसी कांग्रेस सरकार ने किया। गुरु तेगबहादुर व गुरु गोविन्दसिंह को हिन्दुओं की रक्षा के लिये अपने बच्चों सहित बलिदान होना पड़ा। लेकिन इसी कांग्रेस ने पूरे भारत में सिख विरोधी दंगे करवा डाले और पंजाब को जलने के लिये छोड़ दिया। आरक्षण के नाम पर दलितों का शोषण किया। आज इस देश में जो भी समस्या है अथवा खुराफात हो रही है, उसका बीज श्री जवाहरलाल नेहरू, उनके परिवार और उनकी कांग्रेस ने ही बोया था। फिर भी कांग्रेसी पाक और साफ बन रहे हैं।

कांग्रेस आज भी पाकिस्तानपरस्त मुल्लावादी मुसलमानों और स्टूडेन्ट्स इस्लामिक मूवमेन्ट ऑफ इंडिया (सिमी) आदि हिन्दू विरोधियों को खुला समर्थन देती है। लेकिन कश्मीर में हिन्दुओं की हत्याओं पर चुप्पी साधे रहती है।

इस देश के साथ खिलवाड़ करने वाली ऐसी कांग्रेस वा श्री जवाहरलाल नेहरू के परिवार को हिन्दुओं ने अपना भाग्य विधाता मान रखा है। नेताओं द्वारा देश का फिर से बँटवारा की बात करना, हिन्दुओं को ही नहीं खुद अपने को भी धोखा देना है। मुसलमान अब इस देश का बँटवारा नहीं करेंगे, बल्कि अपनी आबादी बढ़ा कर अपनी एकता से चुनाव जीत कर इस पूरे देश को ही मुसलमानी राज्य दारूलइस्लाम में बदलने का जोरदार किन्तु सुनियोजित प्रयास कर रहें हैं।

यदि डा० भीमराव अम्बेडकर अथवा सरदार पटेल प्रधानमंत्री होते

अगर डा० भीमराव अम्बेडकर अथवा सरदार पटेल इस देश के प्रधानमंत्री बने होते, तो आज हमें इस पुस्तक को लिखने की अथवा 'भारत बचाओ मंच' बनाने की आवश्यकता न पड़ती। क्योंकि वे दोनों बहुत ही दूरदर्शी नेता थे। कट्टरवादी मुसलमानों की मानसिकता व इस्लाम के उद्देश्यों को वे बहुत अच्छी तरह जानते थे। इस बारे में उन्हें जरा भी भ्रम नहीं था। ये दोनों नेता चाहते थे

कि भारत के बँटवारे के साथ आबादी का भी बँटवारा हो। अर्थात् सभी मुसलमान पाकिस्तान जायें और सभी हिन्दू भारत आयें। क्योंकि उनका स्पष्ट मानना था कि मुस्लिम देश पाकिस्तान में हिन्दू सुरक्षित नहीं रह सकते। लेकिन श्रीजवाहरलाल नेहरू ने उनकी बात नहीं मानी। बाद में डॉ० अम्बेडकर और सरदार पटेल की बात सही साबित हुई, जब पाकिस्तान में हिन्दू बूरी तरह लूटे-मारे-काटे गये। ये दोनों नेता जानते थे कि हिन्दू और मुसलमानों का एक साथ रहना सम्भव नहीं है। क्योंकि मुसलमानों के आचार-विचार हिन्दुओं के ठीक विपरीत हैं।

यदि अखण्ड भारत होता, तो भारत आज मुस्लिम राष्ट्र होता

एक बार मैं इलाहाबाद के नूरउल्ला रोड पर कुछ मुसलमान युवकों के साथ बैठा था। उन्होंने बाबरी मस्जिद का प्रसंग उठाया और उसी प्रसंग में कहा कि ''मोहम्मद अली जिन्ना ने हमारे हाथ पैर काट दिये, नहीं तो आज इस देश का नक्शा ही दूसरा होता।'' यह बात सुनकर मैं चौंका। मैंने पूँछा कायदे आजम मोहम्मद अली जिन्ना ने ऐसा क्या किया था ? वह बोले ''मोहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान बनवा कर अखण्ड भारत के मुसलमान बाँट दिये। आप जोड़िये बीस करोड़ मुसलमान यहाँ हैं, चौदह करोड़ पाकिस्तान में, तेरह करोड़ बँगला देश में, जोड़िये कितने हुये ? कुल ४७ करोड़ और इस अखण्ड भारत की आबादी होती लगभग १२७ करोड़, जिसमें हम होते ४७ करोड़, अर्थात् लगभग ३७ प्रतिशत (१०० में ३७) २ करोड़ ईसाई और ७८ करोड़ हिन्दू। इस तरह चुनाव में ४७ करोड़ मुसलमानों का मुकाबला ७८ करोड़ हिन्दुओं से होता, तो हम एक होते। लेकिन हिन्दुओं का वोट जाति के नाम पर हर हालत में बँटता और इस मुल्क में आज हमारा राज होता। भारत के बँटवारे की जो गल्ती हम लोगों से एक बार हो गयी, वह अब हम दोबारा नहीं करने वाले। आज जो नेता कह रहें हैं कि मुसलमान देश का बँटवारा करेंगे, देश के टुकड़े कर देंगे, यह केवल हिन्दू ही कह रहे हैं। मुसलमानों ने कभी नहीं कहा कि हम देश का बँटवारा कर देंगे। क्योंकि हम मोहम्मद अली जिन्ना की तरह यह गल्ती नहीं करेंगे। यह देश हमारा है, किसी समय हम सब इसमें राज करते थे। हम तो इसी देश में रहकर, चुनाव जीतकर, इन्शाअल्लाह पूरे देश में फिर से हुकूमत (राज) करेंगे।'' इस पर मैंने कहा कि जब सारे मुसलमान एक हो जायेंगे, तो जवाब में हिन्दू भी एक हो जायेंगे, तब ४७ करोड़ मुसलमान, ७८ करोड़ हिन्दुओं से चुनाव कैसे जीतेंगे ? इस पर वह हँसने लगे और कहा कि ''इतिहास में एक हजार साल तक लात-जूता खाने के बाद भी हिन्दू, मुट्ठी भर मुसलमानों के विरुद्ध एक न होकर, आपस में ही एक दूसरे को नीचा दिखाते रहे। मानसिंह जैसे लोग उल्टा मुसलमानों का ही साथ देते रहे, तो तुम हिन्दू लोग अब कैसे एक हो जाओगे ? अल्लाह का शुक्र है कि उसने तुम हिन्दुओं को न तब एक होने दिया था और न अब एक होने देगा। अल्लाह की यही मर्जी है।'' फिर हमने उनसे पूछा कि तुम्हारी आबादी यहाँ बीस करोड़ कहाँ है ?

वह ज्यादा से ज्यादा १५ करोड़ होगी, तो उन्होंने तुरन्त उत्तर दिया कि ''तुम लोग हमारी आबादी १५ करोड़ की जगह ८ करोड़ समझे रहो, तो ज्यादा अच्छा है।'' मैंने कहा बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। इस पर उन्होंने कहा ''नहीं समझो तो अच्छा है।'' यह बात कि तुम १५ करोड़ की जगह ८ करोड़ ही समझो, तो ज्यादा अच्छा है। मेरे दिमाग में घूमती रही। अचानक इसकी पहेली मेरी समझ में आ गयी। मुझे याद आया कि एक बार एक मुसलमान ने बताया था कि ''जब मर्दुम शुमारी (जनगणना) होती है, तब हम लोग मर्दुम शुमारी करने वालों को अपने सभी बच्चे नहीं बताते। अगर ८ होंगे तो ४ लिखायेंगे। क्योंकि जम्हूरियत (लोकतंत्र) का हथियार हमारी आबादी है। जम्हूरियत में हमारे पास जितने वोटर होंगे, हम उतने ही कामयाब (सफल) होंगे। हमारी यह आबादी ही हमारा हथियार है और हथियार छुपा हुआ अच्छा होता है, जो मौके पर निकाला जाता है। इसलिये जब हमारा लड़का वोट डालने लायक होगा, तो हम उसे वोटरलिस्ट में जरूर लिखायेंगे। लेकिन मर्दुम शुमारी में हम अपने बच्चों को कम बतायेंगे, ताकि सरकार और हिन्दू चौंक न पड़े कि हम इतने अधिक हो गये।'' नूरउल्ला रोड में ये सब बातें सुन कर मैं दंग रह गया और मुझे हिन्दू संगठनों की वह मूर्खता याद आयी कि यदि अखण्ड भारत होता, तो कितने गर्व की बात होती। जबकि वास्तव में वह गर्व के स्थान पर हमें आज ही फिर से गुलामी की ओर ले जाने वाली बात होती। आपही देखिये मुसलमानो के आंकड़े कितने तर्कसंगत हैं। वह कितने प्रेक्टिकल (व्यवहारिक) हैं।

सितम्बर माह, सन् २००० को मैं कालका मेल से इलाहाबाद आ रहा था। अलीगढ़ में जालीदार गोल टोपी लगाये लगभग ८-१० मुस्लिम युवक आकर मेरे पास बैठ गये। जो आपस में बातें करते-करते चंदन तस्कर वीरप्पन द्वारा कन्नड़ अभिनेता राजकुमार के अपहरण और कर्नाटक तथा तमिलनाडु सरकारों द्वारा वीरप्पन के सामने आत्मसमर्पण करने आदि पर बोलने लगे। शायद मेरे कपड़ों को देखकर ही उन्होंने बात-चीत को व्यंग (लेकिन कड़वे सच) का रूप दे दिया था। वह कहने लगे कि अगर एक बहादुर मुसलमान बुर्जुग सुप्रीम कोर्ट में वीरप्पन के विरोध के लिये आगे न आते तो दोनों सरकारें नंगी होकर वीरप्पन से.....(न लिखने लायक)....को तैयार खड़ी थीं। अरे ! हिन्दू सदैव से डरपोक, समझौतापरस्त, असंगठित और दब्बू रहे हैं। उनकी बुजदिली का यह आलम रहा है कि खतरा देखकर वे धोती खोलकर भागते रहे हैं। (ऐसा कहकर सभी ठहाका लगाते हैं)। अधिकांश मुसलमानों की आदत है कि वह हिन्दुओं के बीच उनके विरुद्ध स्पष्ट बोल देंगे। उन्हें इसकी परवाह नहीं रहती कि हिन्दू बुरा मानेंगे।

हिन्दुओं को जाति के नाम पर अल्लाह लड़ा रहा है

हिन्दुओं में जाति के नाम पर जो आपसी फूट व जलन है। इस पर मुसलमान कहते हैं कि ये तुम नहीं लड़ रहे, बल्कि तुमको अल्लाह लड़ा रहा है। जिससे आने वाले दिनों में तुम सब हिन्दू आपस में इतना लड़ो कि मुसलमान

चुनाव जीत कर हिन्दुस्तान में फिर से राज करने लगें। क्योंकि काफिर हिन्दुओं का काम है गुलामी करना और मोमिनो (मुसलमानों) का काम है उन पर राज करना। अल्लाह को यह पसन्द नहीं कि काफिर हिन्दू, मोमिनों (मुसलमानो) पर राज करें। वास्तव में तुम हिन्दुओं को र ाज करना नहीं आता। तुम लोग शुक्रिया करो अंग्रेजों का, जिन्होंने यह राज, हम मुसलमानों से छीन कर, तुम हिन्दुओं को दे दिया। लेकिन अल्लाह ने चाहा, तो य ह तुम्हारे पास टिकने वाला नहीं हैं। अल्लाह की ग़ैबी ताकत (अदृश्य ताकत) से हम ा भारत में फिर से राज पाने की ओर बढ़ रहे हैं। इन्शाअल्लाह बहुत जल्द वह दिन आयेगा, जब इस्लाम का झंडा पूरे हिन्दुस्तान पर लहरायेगा।'' मैं यहाँ पर ि हेन्दुओं को पुनः सावधान कर रहा हूँ कि यह सोंच कुछ मुसलमानों का नहीं, बल्कि ा आम मुसलमानों का है।

एक बार इलाहाबाद के शाहगंज मोहल्ले में कुछ मुसलमानों ने जो हमारे साथ एंग्लो बंगाली इण्टर कालेज में पढ़े भी थे, भगवान् श्रीराम के विरुद्ध कहना शुरू किया। मेरे विरोध करने वा उठ कर चल पड़ने पर वह व्यंग से बोले, ''त्रिपाठी जी आप नाराज क्यों ह ोते हो, राम तो ठाकुर थे, आप ब्राह्मण हो।'' मुसलमानों का यह व्यंग जातिवाद ी हिन्दुओं व जाति की राजनीति करने वाले नेताओं के लिये खतरनाक चेतावनी है। ऐसे बेशर्म हिन्दुओं व नेताओं को चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये।

दलित, महान् हिन्दू हैं

हिन्दुओं के बीच भंगी, मेहतर, चूहड़, हेला, बाल्मीकि और हलालखोर आदि कहे जाने वाले हिन्दुओं के पुरखे क्षत्रिय थे जो मुसलमान बादशाहों द्वारा मैला उठाने वाले बना दिये गये। (देखें अ मृतलाल नागर की पुस्तक 'नाच्यो बहुत गोपाल') मुसलमान धर्म स्वीकार न कर ने के कारण मुसलमान बादशाहों ने उन्हें रोज-रोज अपमानित करने के लिये उ नसे अपना तथा अपनी हजारों बेगमों, रिस्तेदारों, दरबारियों, सेनापतियों और अ न्य प्रभावशाली मुसलमानों के घरों का मैला उठवाना शुरू कर दिया। जिससे कि वह टूटकर हिन्दू धर्म को छोड़कर, मुस्लिम धर्म स्वीकार कर लें। धन्य हैं वे जिन्होंने इसके बाद भी अपना धर्म नहीं छोड़ा। उन पर इससे भी बड़ा अन्याय यह हुआ कि अपने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये यह सब करने के बाद भी, वे अपने ही धर्म में अछूत बना दिये गये।

सभी हिन्दुओं के सामने चुनौती भरा प्रश्न है कि इस देश में मुसलमानों के शासन काल में जब सभी हिन्दुओं पर भयानक अत्याचार हो रहे थे, तब आज के हरिजनों के पुरखों ने ऐसा जुल्म क्यों सहा और किसके लिये सहा ? क्या उस धर्म के लिये जिसमें उन्हें कोई स्थान प्राप्त नहीं था, उन्हें छू लेना तक पाप था। वेदों को वह पढ़ नहीं सकते थे, सुन नहीं सकते थे, मंदिरों में घुस नहीं सकते थे। इसके बाद भी हिन्दू बने रहने के लिये मुसलमानों के अत्याचार सहते रहे, साथ ही अपने धर्म के हिन्दुओं का अन्याय भी।

धर्म के लिये इससे बड़ी तपस्या और क्या हो सकती है ? अपने धर्म की रक्षा के लिये इतनी बड़ी तपस्या करने वाले ऐसे महान तपस्वी लोग निश्चित रूप से स्वर्ग की शोभा बढ़ा रहे होंगे।

हिन्दू धर्म के लिये इतना कष्ट सहने वालो ! मैं आपको तथा आपकी सन्तानों को करोड़ो बार प्रणाम करता हूँ। मैं उनको व उनकी आज की सन्तानों के लिये हरिजन या दलित शब्द के स्थान पर महान् हिन्दू शब्द का प्रयोग करूँगा, क्योंकि वह इसी सम्मान के अधिकारी हैं। कितना बड़ा त्याग और तपस्या की थी, इन महान् हिन्दुओं ने अपने धर्म को बचाने के लिये। लेकिन मैं ऊँचा हूँ, ऐसी झूँठी शान में जीने वाले कुछ हिन्दुओं ने उन्हें अपमानित ही किया जिनका इतिहास सूर्य की तरह चमक रहा है, वह अछूत बना दिये गये। जिस धर्म की उन्होंने रक्षा की, उसी धर्म से उन्हें दूर रखने की मूर्खतापूर्ण कोशिश की गयी।

इसलिये इन महान् हिन्दुओं को छोटी जाति का नहीं, अपना प्रिय हिन्दू भाई समझो। जो त्याग और तपस्या उनके पुरखों ने हिन्दू धर्म के लिये की, उस कारण उनकी महानता को सच्चे ह्रदय से मानो। आज प्रत्येक हिन्दू नौजवान के लिये यह सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक एवं धार्मिक कर्त्तव्य है, जो दूसरे शब्दों में अपने भविष्य की रक्षा का प्रयास है। अब हर जाति के हिन्दू, अपनी जाति केवल शादी ब्याह तक ही सीमित रखें। उसके बाद जाति को भूलकर केवल हिन्दू रहें। आपस में किसी भी प्रकार के मतभेद से दूर रहें। इस कार्य की शुरुआत सबसे पहले ब्राह्मण जाति के नवयुवक ही करें।

हिन्दुओं की मूर्खता का मुसलमानों के राज में कट्टर मुसलमानों ने खूब फायदा उठाया। जो हिन्दू, मुसलमान बनने के बजाय अपनी गर्दन कटवाने के लिये तैयार थे, उनको सामाजिक प्रताड़ना देकर मुसलमान बनने को मजबूर करने के लिये उनके हाथ-पैर बाँधकर, मुसलमान सैनिक उनके मुँह में जबरजस्ती गाय का खून लगा देते थे। इस प्रकार के बेबस व निर्दोष हिन्दुओं को धर्म के कुछ स्वयंभू ठेकेदारों के कहने पर हिन्दू समाज से बाहर कर शेष हिन्दू समाज उनसे बेटी रोटी का सम्बन्ध तोड़ लेता था। इस तरह उन्हें मजबूरन मुसलमान बनना पड़ता था। इस तरह बने मुसलमान बहुत कट्टर, हिन्दू विरोधी होते थे।

मूल वैदिक धर्म में डपोरशंख घुस जाने के बाद से हिन्दू अव्यवहारिक और विवेकहीन होकर मूर्खतापूर्ण ढंग से विचित्र व्यवहार करते रहे। जो आज भी उससे अधिक विकृत रूप में जारी है। केवल हिन्दू धर्माचार्य ही इसे दूर कर सकते हैं।

कुछ लोग कहेंगे कि यदि ये सब बातें हिन्दू धर्म से हट जायेंगी, तो धर्म खतम हो जायेगा। जबकि सच्चाई यह है कि ऐसे लोग खुद ही भटके हुये हैं और इन लोगों ने मूल वैदिक धर्म का भोजन कर लिया है। मैं कहता हूँ कि अगर हिन्दुओं के बीच यह सब बुराइयाँ रहेंगी, तो धर्म खत्म हो जायेगा। आज हिन्दू धर्म और समाज की रक्षा के लिये हमें जातिवाद की बलि चाहिये, ऊँच-नीच और

छुआछूत की बलि चाहिये, झूठे चमत्कारों वाली धार्मिक किस्सा-कहानी व चमत्कार देखने की इच्छा की बलि चाहिये। मुसलमान तो चाहते ही हैं कि ऊँची जाति वाले? हिन्दू जितना अधिक से अधिक इन महान् हिन्दुओं (हरिजनों) को दुत्कारें उतना ही अच्छा है। क्योंकि इससे हिन्दू समाज में फूट पैदा होगी। इस फूट का फायदा उठाकर उनके लिये भारत को मुसलमानी देश बनाना आसान हो जायेगा। इसलिये जाति की लड़ाई लड़ने वाले या जाति के नाम खुश होने वाले हिन्दू अपने हाथों अपनी चिता सजा रहे हैं जिसमें मुखाग्नि हिंसावादी मुसलमान देंगे।

हिन्दू एकता ही एकमात्र विकल्प

इसलिये अब भेद और फूट पैदा करने वाली बातों को छोड़ कर केवल हिन्दू के नाम पर एक होकर एक शक्तिशाली समाज बनायें। क्योंकि एकता ही जीवन है और फूट मृत्यु है। जब हिन्दू एक होकर शक्तिशाली होगा, तभी देश ऊपर उठेगा और सच्ची धर्मनिरपेक्षता स्थापित होगी। इसलिये बन्द करो यह जाट, जाटव जैसी लड़ाइयाँ या ब्राह्मण महासभा, क्षत्रिय महासभा, वैश्य महासभा, जाट महासभा, यादव महासभा, पटेल महासभा, रविदास महासभा या पासी महासभा जैसे जाति के नाम पर बने संगठन। ये तुम्हारे द्वारा, अपने लिये खोदे गये मौत के कुएँ हैं, जिसमें तुम आज नहीं तो कल जरूर गिर पड़ोगे।

हम, हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक हैं, लेकिन

कुछ लोग कह सकते हैं कि आप, हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात कर देश को शक्तिशाली बनाने की बात क्यों नहीं करते ? इसका जवाब है कि हम, हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक हैं। लेकिन मुस्लिम धर्म इस्लाम का मूल सिद्धान्त ही हिन्दू-मुस्लिम एकता के विरुद्ध है। (कुरआन के अनुसार) मुसलमानों के खुले दुश्मन काफिर हिन्दुओं के विरोध पर ही इस्लाम की नींव है। इसलिये सच्ची हिन्दू-मुस्लिम एकता, मुसलमानों की तरफ से तब तक नहीं हो सकती, जब तक कि सभी काफिर हिन्दू, हिन्दू धर्म (कुफ्र) को छोड़कर, मुसलमान नहीं बन जाते। इसलिये आज की यह दिखावटी, हिन्दू-मुस्लिम एकता कभी भी सच्चाई में नहीं बदल सकती।

क्या दलित आर्य नहीं हैं ?

इस झूठे प्रचार से बचो कि भारत में आर्य बाहर से आये या दलित आर्य नहीं, अनार्य हैं। (अत्यन्त ठोस तर्कों के लिये देखें श्री रमेश दत्त मिश्र द्वारा लिखित एवं हरिओम पब्लिकेशन ४/१, बाई का बाग, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'मैं कौन हूँ ?' तथा डा० सम्पूर्णानन्द की पुस्तक 'आर्यों का आदि देश') यह प्रचार हिन्दू समाज को तोड़ने का भयानक षड़यन्त्र है। आर्य इसी देश के मूल निवासी थे। यहीं से वह फारस आदि देशों को गये, न कि वहाँ से यहाँ आये तथा सभी दलित श्रेष्ठ आर्यों की सन्तान हैं।

राष्ट्रवादी मुसलमान क्या करें ?

इस देश के राष्ट्रवादी मुसलमानों को चाहिये कि वे हिंसावादी मुसलमानों

को हिंसा का रास्ता छोड़ने के लिये प्रेरित करें, जिससे उनका तथा इस देश का विकास हो सके। हम चाहते हैं कि इस देश के मुसलमान राष्ट्रवादी बने, कट्टरवादी और पाकिस्तानवादी मुसलमानों के बहकावे में न आवें। हिन्दुओं के साथ मिलकर प्रेम से रहें। इसी में हिन्दू और मुसलमानों दोनों की भलाई है। परन्तु दुर्भाग्य है कि पाकिस्तान द्वारा भ्रमित किये जा रहे मुसलमान, राष्ट्रवादी मुसलमानों की बातें सुनने को तैयार नहीं हैं।

हिन्दू अपना बचाव क्यों न कर सके ?

जाति, भाषा, प्रान्त और अनेक धार्मिक मतों के आधार पर मूर्खतापूर्ण ढंग से बँटे, असंगठित और बिखरे हुए करोड़ों हिन्दू, पूरी तरह से संगठित व धर्म के लिये मरने मिटने वाले अतिउत्साही ४०-५० हजार मुसलमान सैनिकों का मुकाबला न कर सके। हिन्दू इसी प्रतीक्षा में बैठे रहे कि ईश्वर का अवतार होगा, जो इन अत्याचारियों का विनाश करेगा। लेकिन न तो ईश्वर का अवतार हुआ, न ही अत्याचारियों का विनाश। अत्याचारों का मुकाबला करने के स्थान पर हिन्दू उन्हें एक हजार साल तक सहन करते रहे। क्योंकि उन्हें सर्वधर्म समभाव, वसुधैवकुटम्बकम्, क्षमा वीरस्य भूषणम् और अव्यवहारिक अहिंसा तथा सहिष्णुता जैसे सतयुगी उपदेश दिये जाते रहे। इसी सहनशीलता या सहिष्णुता और क्षमा के कारण उन पर और अधिक क्रूरता से अत्याचार किये जा रहे हैं। उनके लोकतांत्रिक और मानवाधिकार नष्ट किये जा रहे हैं। संसार की किसी भी कौम ने एक हजार साल लम्बी गुलामी और इतने भयानक अत्याचारों को नहीं झेला, जितना अभागे हिन्दुओं ने झेला।

फिर भी उनमें से कुछ बेशर्मी से कहते हैं कि सहिष्णुता और अहिंसा हमारी परंपरा रही है। अरे मूर्खो ! सहिष्णुता और अहिंसा का अर्थ यह नहीं है कि अपने हाथों अपनी बहन बेटियों और पत्नियों की इज्जत लुटवाने का इंतजाम किया जाये। अपनी गरदने कटवाने की रूपरेखा खुद तैयार की जाये और प्रेमपूर्वक गुलाम बन जाया जाये तथा इस अहिंसा और सहिष्णुता के नाम पर अत्याचारियों को अपने ऊपर अत्याचार करने की खुली छूट दे दी जाये। अत्याचारों और अत्याचारियों की अनदेखी करना हिंसा को बढ़ावा देना है, जो अहिंसा न होकर, सबसे बड़ी हिंसा है, पाप है।

कुछ हिन्दू तर्क देंगे कि हमारा धर्म विश्व कल्याण की बात करता है। इन लोगों को मेरा जवाब है कि पहले अपने देश और हिन्दू समाज का कल्याण करो, नहीं तो जैसे इतिहास में अपनी रक्षा नहीं कर पाये, तो विश्व का कल्याण क्या करोगे। विश्व का कल्याण केवल सबसे शक्तिशाली, ताक़तवर समाज ही कर सकता है, उदाहरण के लिये जैसे आज अमेरिका है। लेकिन भारत वर्तमान परिस्थितियों में अमेरिका जैसा शक्तिशाली नहीं बन सकता। क्योंकि इस देश का राजनीति रूप से सबसे शक्तिशाली और संगठित मुस्लिम समुदाय, देश को

शक्तिशाली बनाने के स्थान पर, अपने धर्म इस्लाम को शक्तिशाली बनाने में तन, मन और धन से जुटा है।

कुछ हिन्दू कहेंगे कि सर्वे भवन्तु सुखिनः हमारा नारा है। ऐसे हिन्दुओं को मेरा जवाब है कि पहले अपने वैदिक धर्म को जानो, अपने ऋग्वेद को पढ़ो, सर्वे भवन्तु सुखिनः का अर्थ यह नहीं है कि अन्यायियों और अत्याचारियों को भी सुखी बनाया जाये। कुछ हिन्दू कहेंगे कि दयालुता ही हमारा धर्म है। यह कहानी सुनाएँगे कि एक महात्मा जी नदी के किनारे जा रहे थे। उन्होंने देखा कि एक बिच्छू पानी में बहा जा रहा है। महात्मा जी उस बिच्छू को निकालने के लिये पानी में कूद गये। महात्मा जी ने बिच्छू को बचाने के लिये जैसे ही उसे पानी से निकालना चाहा, बिच्छू ने डंक मार दिया। डंक मारने से हुये दर्द को सहन करते हुये किसी तरह फिर बिच्छू को निकाला। लेकिन उसने फिर डंक मार दिया, और महात्मा जी दर्द से व्याकुल होते रहे। यह सब घटना एक व्यक्ति देख रहा था। उसने महात्मा जी से पूछा कि इस बिच्छू ने आपको कई बार डंक मारा, फिर भी आप इसे बचा रहे हैं। महात्मा जी ने कहा बिच्छू का धर्म है डंक मारना और मेरा धर्म है, उसकी जान बचाना। बहुत-से हिन्दू यह कहानी सुनकर प्रभावित हो जाते हैं। लेकिन इस तरह की अव्यवहारिक कहानियाँ मानवता को हानि पहुँचाती हैं तथा अत्याचारियों का साथ देती हैं। जो पाखण्डी और झूठे लोगों के द्वारा लिखे गये साहित्य में हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने आदेश दिया है कि अपने ऊपर अत्याचार करने वालों को कुचल डालो।

क्या सभी धर्मों का उद्‌देश्य एक ही है ?

आजकल हमारे कुछ माननीय धर्माचार्य सर्वधर्म समभाव कि बात करते हुए बतातें हैं कि सभी धर्मों का उद्‌देश्य मनुष्यों को सत्य के रास्ते पर लाना ही है। उनके मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं। लेकिन उनका लक्ष्य एक ही है। सारे धर्म एक ही सत्य को बताते हैं। एक ही लक्ष्य की ओर ले जाते हैं। सभी धर्म सिखाते हैं कि सभी मनुष्य आपस में प्रेम करें और किसी भी प्रकार की हिंसा से दूर रहें। लेकिन वास्तव में सच्चाई इसके विपरीत है। जैसे कि ईसाई धर्म का कहना है कि केवल ईसाई धर्म ही सच्चा धर्म है। केवल ईसा मसीह को मानने वाले ही स्वर्ग में जायेंगे, देवी-देवता रूपी शैतानों को पूजने वाले नहीं। इस देश में हिन्दू समाज में ही चल रहे अनकों मत भी इसी प्रकार कहते हैं। जैसे-प्रजापति ब्रह्माकुमारी मत को मानने वाले कहते हैं कि केवल दादा लेखराज जो कि साक्षात ब्रह्मा हैं, को मानने वाले ही स्वर्ग में प्रवेश पा सकेंगे। मुसलमानों के धर्म इस्लाम के अनुसार केवल इस्लाम ही सच्चा दीन (धर्म) है। जिसमें ईमान (विश्वास) लाने वाले मुसलमान ही जन्नत (स्वर्ग) में प्रवेश पायेंगे। देवी-देवता आदि की पूजा करने वाले काफिर अपने देवी-देवताओं सहित नरक में झोंक दिये जायेंगे। देखिये-

कुरआन मजीद में पारः ३, सूरः ३ की ८५वीं आयत में है कि और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन (धर्म) का तालिब होगा, वह उस से हरगिज कूबूल नहीं किया जायेगा और ऐसा शख्स आखिरत में नुक्सान उठाने वालों में होगा। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-९३) अर्थात् जो व्यक्ति इस्लाम के सिवा किसी अन्य धर्म को मानने वाला होगा। इसे अल्लाह स्वीकार नहीं करेगा और ऐसा व्यक्ति कयामत (प्रलय) के समय दण्ड पाने के लिये नरक में सदैव के लिये झोंक दिया जायेगा। कुरआन मजीद के पारः २६, सूरः ४८ की २८वीं आयत में है कि वही तो है, जिसने अपने पैगम्बर (मुहम्मद) को हिदायत (की किताब) और सच्चा दीन (धर्म) देकर भेजा, ताकि उसको तमाम दीनों (सभी धर्मों) पर गालिब करे (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-८१९) अर्थात् वही (अल्लाह) तो है जिसने अपने पैगम्बर मुहम्मद को अपने आदेशों की किताब कुरआन और सच्चा धर्म इस्लाम देकर भेजा। जिससे कि इस्लाम धर्म को दुनियाँ के सभी धर्मों पर श्रेष्ठ या विजयी करे।

कुरआन के अनुसार जो लोग कुरआन की आयतों पर ईमान (विश्वास) लाकर, इस्लाम नहीं स्वीकार करते, वे संसार के सबसे बड़े अन्यायी, दोषी और जालिम (अत्याचारी) हैं। अल्लाह इन पापियों को जरूर मजा चखाने वाला है। पारः २१, सूरः ३२ की २२वीं आयत में है कि और उस शख्स से बढ़कर जालिम कौन, जिसको उसके परवरदिगार (अल्लाह) की आयतों से नसीहत दी जाये, तो वह उनसे मुँह फेर ले। हम गुनहगारों से जरूर बदला लेने वाले हैं। (अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-६६३) पारः २१, सूरः २९ की ४९वीं आयत में है कि हमारी आयतों से वही लोग इन्कार करते हैं, जो बे-इन्साफ हैं।(अनुवादक-मौ० फ० मो० खाँ सा० जा०, पेज-६३९) अर्थात् अल्लाह का आदेश है कि हमारी आयतों से वही लोग इन्कार करते हैं (अर्थात् मुसलमान बनने से वही लोग इन्कार करते हैं) जो बे-इन्साफ (अन्यायी) हैं। पारः ३०, सूरः ९० के १९वीं और २०वीं आयत में है कि और जो हमारी आयतों के इन्कारी हैं वह उल्टी राह वाले बदबख्त (दुर्भागी) हुए। (१९) उनको आग में मूँद दिया जायेगा। (२०) (अनुवादक-ह० मौ० अ० क० पा० सा०, पेज-६०१) अर्थात् जो लोग मुसलमान बनने से इन्कार करते हैं। वह उल्टे रास्ते वाले (काफिर) दुर्भागी हुए। उनको आग में मूँद दिया जायेगा।

इस्लाम के अनुसार काफिर लोग फसाद (झगड़े) की जड़ हैं। क्योंकि इस्लाम स्वीकार करने से इन्कार करने वाले इन इन्कारियों (मुन्किरों) को सजा देने के लिये मुसलमानों को उनसे युद्ध करना पड़ता है। इस्लाम में मुसलमानों के साथ शान्ति और काफिरों के साथ युद्ध करने का अल्लाह का आदेश है।

सर्वधर्मसमभाव मानने वाले हिन्दुओं ने इतिहास में मुसलमानों द्वारा किये गये भयानक अत्याचारों को क्षमा कर दिया और आजादी के बाद उन्हें राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री के पद दिये। पर इन सब उदारताओं के बदले हिन्दुओं पर

पाकिस्तान, बंगला देश और कश्मीर में भयंकर अत्याचार किये गये। ऐसे अति सभ्य हिन्दुओं के लिये मुसलमानों के मौलाना बुखारी जैसे बड़े मौलाना कहते हैं कि हिन्दू जाहिल (असभ्य) थे। मुसलमानों ने ही इस देश में आकर उन्हें सभ्यता सिखायी। उन्हें बोलने का तरीका सिखाया। सच्चाई के विपरीत सोचने और करने वाले, ऐसे मुल्लावादी मुसलमानों से उदारता व प्रेम दिखाकर, उनके मन को जीतना, बालू से तेल निकालने की तरह असम्भव है।

खुद हिन्दुओं की ही गल्ती व उनके दुर्भाग्य से आजादी के बाद से ही यह देश हिन्दू विरोधी ताकतों के प्रभाव में रहा। इस देश में जिसने हिन्दुओं के साथ जितना अधिक अन्याय और विश्वासघात किया, हिन्दुओं ने मूर्खता से उसे उतना ही अधिक सम्मान व पद दिया। नकली धर्मनिरपेक्षता और जातिवाद की आड़ में जो नेता हिन्दुओं को कुचल कर रख देना चाहते हैं, हिन्दू लोग उन्हीं नेताओं को चुनाव में जिता कर अपनी बर्बादी बुला रहे हैं। हिन्दुओं को कुचल देने का सपना देखने वाले मुल्लावादी मुसलमान और ईसाई, हिन्दुओं की नाक के ठीक नीचे अपनी ताकत बढ़ा रहे हैं। लेकिन हिन्दू निश्चिन्त होकर आपस में ही जाति और स्वार्थ के नाम पर लड़कर कमजोर हो रहे हैं। ऐसा करके हिन्दू अपना तथा अपनी संतानों का भविष्य बहुत बड़े खतरे में डाल रहे हैं।

अधिकांश हिन्दू बुद्धिजीवी कायर और चापलूस हैं, इसीलिये पलायनवादी, विश्वासघाती और आत्मघाती हैं। वे अपने समाज को नकली धर्मनिरपेक्षता, अव्यवहारिक अहिंसा और अतिसहिष्णुता की बातें कह कर सुला देते हैं। वे हिन्दू एकता को साम्प्रदायिकता बता कर हिन्दू समाज को तोड़ते रहते हैं। यही लोग हिन्दुओं में आर्य-अनार्य, उत्तर-दक्षिण, पिछड़ा-दलित आदि का जहर भरते रहते हैं। अपनी सारी विद्वता इसी प्रकार के तोड़फोड़ के कामों में लगाते हैं और इसी में आत्ममुग्ध रहते हैं। कुछ लोग हिन्दू-मुस्लिम सद्भावना के लिये पद यात्रायें करते रहते हैं, जिनका परिणाम कुछ नहीं निकलता। पहले भी भारत में हिन्दू लुटता रहा, कटता रहा, मंदिर टूटते रहे, हिन्दू नारियों की लाज लुटती रही। पर अधिकांश हिन्दू विद्वान केवल आत्मा-परमात्मा की ही बातें करते रहे। विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार श्री. एर्नाल्डटायनबी कहते हैं कि जब कोई समाज अति सभ्य हो जाता है, तो कोई बर्बर समाज आकर उसे निगल जाता है। हिन्दू समाज के साथ यही हुआ और होने वाला है। अधिकांश हिन्दू शासक (नेता), प्रशासन और पुलिस के अधिकारी, बुद्धिजीवी, साहित्यकार, फिल्म निर्माता, निर्देशक व कलाकार और बड़े उद्योगपति तथा व्यापारी अपने कुछ न कुछ स्वार्थ के कारण हिन्दू विरोधी हैं। यह लोग हिन्दू समर्थन को पिछड़ापन और हिन्दू विरोध तथा मुस्लिम व ईसाई समर्थन को प्रगतिशीलता मानते हैं। ऐसे लोग आत्म-मंथन करें कि वह आत्महत्या के समान कितना खतरनाक खेल, खेल रहें हैं।

इस देश के नकली धर्मनिरपेक्षतावादी बुद्धिजीवी और मीडिया के लोग अपने इस धर्मनिरपेक्षतावाद की सनक तभी तक पूरी कर पायेंगे। जब तक इस देश का शासन हिन्दुओं के हाथों में है। भारत के मुस्लिम राष्ट्र बनते ही शरियत के नाम पर कोड़ों की मार इनकी धर्मनिरपेक्षता गायब कर देगी।

इस देश के नेताओं ने १० नवम्बर, १९९७ ईसाई धर्म प्रचारिका टेरेसा का अन्तिम संस्कार राष्ट्रीय सम्मान के साथ कराया। किसी धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में किसी धर्म विशेष की धार्मिक प्रचारिका के शव को तिरंगे में लपेट कर सेना के जनरलों की मौजूदगी में सेना के तीनों अंगों द्वारा कन्धा देना और टी०वी० से उसका सजीव प्रसारण क्या उचित था ? जब आजतक ऐसी परम्परा नहीं रही, तो केवल टेरेसा के लिये ही ऐसा क्यों किया गया ? यह तो गोरी चमड़ी के प्रति गुलामी की मानसिकता है, जिस पर हमें शर्म आनी चाहिये।

हिन्दुओं की विचित्र मानसिकता

हिन्दुओं पर जो मुसीबते इतिहास में आई हैं, उसके निम्नलिखित कारण हैं- संसार के सर्वश्रेष्ठ वैदिक धर्म को मानने वाले आर्यों की सन्तानें हिन्दू, आज प्रचलित कुछ धार्मिक विकृतियों के कारण ही संसार के सबसे अव्यवहारिक और विचित्र मानसिकता वाले लोग बन चुके हैं।

हिन्दू मानसिकता	मुस्लिम मानसिकता
● सर्वधर्म समभाव और "वसुधैव कुटुम्बकम्" मानने के कारण हिन्दू सारे विश्व को अपना भाई मानता है।	● मुसलमान, मुसलमानो को अपना भाई तथा काफिर हिन्दुओं को अपना शत्रु मानता है।
● हिन्दू शत्रु को भी मित्र मानता है (जो मूर्खता है)	● मुसलमान शत्रु को केवल शत्रु मानता है। शत्रु के साथ किसी प्रकार का समझौता उन्हें स्वीकार नहीं।
● हिन्दुओं के धर्म और हिन्दू समाज की रक्षा के लिये जो लोग आगे आते हैं, हिन्दू उनकी धन से मदद नहीं करते। उनका उत्साह बढ़ाने के स्थान पर उन्हें साम्प्रदायिक कहते हैं।	● मुस्लिम समाज के लिये जो लोग काम करते हैं, मुसलमान उन्हें अपने सिर और आखों में बैठाकर उनकी धन से खूब मदद करते हैं, साथ ही उनका उत्साह भी बढ़ाते हैं।
● हिन्दुओं में वोट डालने के लिये	● मुसलमान वोट डालने के लिये और

और अपने सच्चे हितैषी नेता का चुनाव करने के लिये उत्साह नहीं होता।

- एक हिन्दू दूसरे हिन्दू का सहयोग नही करता।

- हिन्दू मन्दिर तो जगह जगह बनाते हैं, लेकिन विधर्मियों से उनकी रक्षा नहीं करते।

- त्योहारों में धनी हिन्दू लोग गरीब हिन्दुओं की मदद नहीं करते।

- हिन्दू अपने यहाँ होने वाले धार्मिक कार्यों में अपने ही दलित हिन्दू भाइयों को नहीं आने देते। दलित जब तक हिन्दू रहेगा तब तक उसे बराबर नहीं बैठने देंगे। लेकिन धर्म परिवर्तन कर यदि वह मुसलमान या ईसाई बन जाये, तो उसे बराबर बैठने देंगे (यह हिन्दुओं की धर्म के प्रति गद्दारी है।)

- कोई ईसाई या मुसलमान यदि हिन्दू बन जाये तो हिन्दू समाज उसे स्वीकार नहीं करता। उससे अछूत का व्यवहार करता हैं, रोटी बेटी का सम्बन्ध स्थापित नहीं करता। इसीलिये दूसरे धर्म वाले लोग हिन्दुओं के धर्म को स्वीकार करने में हिचकिचाते हैं। यहाँ तक कि हिन्दू से मुसलमान बना व्यक्ति भी यदि वापस हिन्दू बनना चाहे, तो हिन्दू उसे अपनी जाति में वापस नहीं लेते। इसी कारण बहुत से

अपने हितैषी नेताओं का चुनाव करने के लिये सदैव बहुत सतर्क और उत्साहित रहते हैं।

- एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का सदैव सहयोग करने को तैयार रहता है।

- मस्जिदों की रक्षा के लिये मरने मिटने को तैयार रहते हैं।

- त्योहारों में धनी मुसलमान खाने पीने की चीजें, कपड़े आदि से गरीब मुसलमानो की मदद करते हैं।

- शादी ब्याह को छोड़कर खानपान और धार्मिक कार्यों में एक मुसलमान दूसरे मुसलमान से कोई भेदभाव नहीं करते।

- किसी भी धर्म को मानने वाला व्यक्ति यदि मुसलमान धर्म स्वीकार करे, तो मुसलमानों के समाज में उसका बड़े उत्साह के साथ स्वागत किया जाता है। मुसलमान बने हिन्दू की जाति के स्तर के मुसलमान उसे अपनी बेटी देने में प्राथमिकता देते हैं, इसे बड़ा ही सबाब (पुण्य) का काम समझते हैं। इसीलिये वह पूरे संसार में बड़ी तेजी से बढ़े।

मुसलमान अपने पुरखों के धर्म में वापस आना चाहते हुए भी बेटी रोटी का सम्बन्ध न बन पाने के कारण नहीं आ पाते।

- एक हिन्दू पिटता है, तो दूसरे हिन्दू तमाशा देखते हैं या दरवाजे बन्द कर लेते हैं।

- आपस में लड़ते हैं और दूसरे धर्म वालों के हिन्दू विरोधी कार्यों पर ध्यान नहीं देते, उदासीन रहते हैं।

- पूजापाठ, कथा, भागवत कराके, मंदिर, धर्मशाला, स्कूल और अस्पताल बनवाकर हिन्दू सोचते हैं कि धर्म का काम पूरा कर लिया, खूब पुण्य कमा लिया, इसी को वह धर्म समझते हैं। धर्म और समाज की रक्षा को धर्म का कार्य नहीं समझते और न ही इसके लिये धन देते हैं, जबकि यह सबसे बड़ा पुण्य का काम है।

- गाँधी जी के तीन बंदरो की तरह हिन्दू न तो खतरों को देखना चाहता है, न सुनना चाहता है और न मुकाबला करना चाहता है। खतरा आने पर वह देवी-देवता या दूसरों का सहारा देखने लगता है। जैसे कि आज कल सोंचता है कि अमेरिका बचा लेगा। दूसरों के सहारे रहने वाले लोग सदैव पिट जाते हैं।

- हिन्दू नौजवान फिल्म और क्रिकेट

- मुसलमान दूसरे मुसलमान की मदद के लिये तुरंत दौड़ पड़ते हैं। किसी भी देश के मुसलमानो पर संकट आने पर सारी दुनिया का मुसलमान गुर्राने लगता है।

- आपस में तो लड़ते हैं, लेकिन दूसरे धर्मवालों विशेषकर काफिर हिन्दुओं के विरुद्ध तुरंत एक हो जाते हैं।

- अपने धन को अपने समाज की मजबूती व रक्षा के लिये दिल खोलकर खर्च करते हैं, इस योजना के साथ कि हम मजबूत होकर इस देश का राज फिर पा सकते हैं।

- मुसलमान खतरों को सावधान होकर देखते हैं, बड़े ध्यान से सुनते हैं और जब खतरा आ जाता है, तो मधुमक्खियों की तरह तुरन्त सतर्क होकर आक्रामक हो जाते हैं।

- अपने धर्म और समाज की बातों में

की बात करते हैं, लेकिन अपने धर्म और समाज की बातों में रूचि नहीं लेते।	अन्य विषयों की अपेक्षा बहुत अधिक रूचि रखते हैं।
• हिन्दू वसुधैवकुटुम्बकम् (विश्वबन्धुत्व) की बात करते हैं, जो भारत की वर्तमान परिस्थितियों में अव्यवहारिक है और हिन्दू एकता को कमजोर करती है।	• मुसलमान धर्म बन्धुत्व की बात करते हैं, जो उनको मजबूत करती है।
• हिन्दू पढ़ लिखकर धर्मनिरपेक्ष हो जाता है और कुछ लोगों की वाहवाही लूटने के लिये धर्मनिरपेक्षता का खुला प्रदर्शन करता है।	• मुसलमान पढ़लिखकर और कट्टर हो जाता है। लेकिन पढ़ा लिखा मुसलमान कट्टरता का प्रदर्शन नहीं करता, इस चालाकी के कारण कि हिन्दू असावधान रहें।
• हिन्दू भाग्य और भविष्यवाणियों पर विश्वास करने के कारण अकर्मण्य हो जाते हैं।	• भाग्य और भविष्यवाणियों पर विश्वास करने के बजाय, वह कर्म से भाग्य को बनाते है तथा कुरआन की भविष्यवाणियों को खुद अपने कर्मों से सत्य करते हैं।
• नये नये देवता रोज बनाते रहते हैं, कब्रों की पूजा करते हैं, धर्म को मनोरंजन के रूप में लेते हैं।	• ऐसा सपने में भी नहीं करते, केवल अपने धर्म पर विश्वास करते हैं। अपने धर्म और अल्लाह के डर से काँपते हैं। धर्म के प्रति समर्पित हैं।

कुछ लोग कह सकते हैं कि हमें इससे क्या मतलब कि कोई क्या कर रहा है ? हम दूसरे की नकल क्यों करें ? इनको जवाब है कि यदि उनको आपसे कोई मतलब न होता, तो आपको भी उन्हें देखने की जरूरत नहीं थी। लेकिन जब किसी का धर्म आपको, अपना सबसे बड़ा धार्मिक दुश्मन मान रहा हो, आपको नष्ट करना ही उनका लक्ष्य हो, तब आपको देखना पड़ेगा कि वह क्या कर रहे हैं ? उनकी मजबूती का राज क्या है ? उनकी आक्रामकता कैसी है और क्यों है ? तथा उनकी योजना क्या है ? उनकी अपेक्षा हममें कौन-कौन सी कमजोरियाँ हैं ? और इस सबकी जानकारी के लिये हमें अपनी तुलना उनसे करनी पड़ेगी। ऐसा किये बिना, हम भविष्य में सुरक्षित नहीं रह सकते।

हजार वर्ष की गुलामी के कारण हिन्दुओं में सामंतशाही, दलितदमन,

कायरता, आत्महीनता, स्वार्थ व ईर्ष्या उत्पन्न हो गई है। आजादी के बाद धर्मनिरपेक्षता के नाम पर हिन्दुओं का गला घोटा गया, उन्हें भयंकर मानसिक यातना दी गई। इससे वे और अधिक कायर हो गये हैं तथा अन्याय के सामने घुटने टेक देते हैं। उन्होंने हजार वर्ष की गुलामी से कोई सबक नहीं सीखा। शादी विवाह में हिन्दू करोड़ों खर्च करता है पर समाज की रक्षा के लिये कुछ भी नहीं देता। इन सब कारणों से हिन्दू इतिहास में बारबार गुलाम हुए और भविष्य में भी होंगे।

६० वर्ष का हिन्दू, असहाय बूढ़ा ?

आज हिन्दू ६० वर्ष के होते ही अपने को बूढ़ा असहाय मान लेते हैं। वह सोचते हैं कि अब हमारी उम्र पूरी होने को है। दुनियाँ में क्या हो रहा है। अथवा क्या होने वाला है ? इसे वह केवल सुन लेते हैं, लेकिन उससे मतलब नहीं रखते। यह अकर्मण्यता धर्म संगत नहीं है। यह पृथ्वी कर्म-भूमि है, यहाँ रहने रहने वाले मनुष्य को अन्तिम समय तक धर्म और समाज के प्रति संवेदनशील और कर्मशील रहना चाहिए। यही श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण का आदेश है। यही ऋषियों-मुनियों की शिक्षा है। गीता सार के नाम से कुछ कलेण्डर मैंने देखे हैं, जो गीता में भगवान् के आदेशों के विपरीत हैं। गीता में भगवान् के आदेश संसार के प्रति उत्साह और सक्रियता पैदा करते हैं तथा साहस को बढ़ाते हैं। व्यक्ति को आशावादी और कर्मशील बनाते हैं। लेकिन उपरोक्त गीता सार संसार के प्रति उदासीनता उत्पन्न करने वाला, निरुत्साहित करने वाला और व्यक्ति को निराशावादी तथा अकर्मण्य बनाने वाला है। हिन्दुओं को ऐसे ज्ञान से बचना चाहिये।

हिन्दू क्या करें ?

अब प्रश्न यह उठता है कि हम सब को अपने बचाव के लिये क्या करना चाहिये ? इसके लिए श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं कि केवल ईश्वर अथवा भाग्य के सहारे बैठ कर अकर्मण्यता न कर। अत्याचारियों से मुकाबला किये बिना तू अत्याचारों से बच नहीं सकता। इसलिये तू सदैव ईश्वर का स्मरण करते हुये युद्ध भी कर। (कर्म भी कर)

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्यच।

लेकिन हम हिन्दुओं ने भगवान् के इस आदेश को नहीं माना और अत्याचारों का मुकाबला करने के स्थान पर अत्याचारों को सहना ही अपना धर्म बना लिया। इसी अव्यवहारिक अहिंसा और अतिसहनशीलता या अतिसहिष्णुता को हमारी कमजोरी व डरपोकपन समझकर हम पर और अत्याचार किये गये। गीता में भगवान् ऐसी अहिंसा व सहिष्णुता को नपुंसकता कहकर उससे दूर रहने को कहते हैं। जब अर्जुन कहता है-

यदि माम प्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः।
धार्तराष्ट्राः रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरंभवेत्।।

हे कृष्ण ! मुझ निहत्थे और युद्ध न चाहने वाले अहिंसक को अगर हथियार

लिये हुये धृतराष्ट्र के पुत्र मार भी डाले, तो वह मरना भी मेरे लिये कल्याणकारी होगा। इस पर भगवान् कहते हैं-

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।

ऐ अर्जुन ! नपुंसक मत बन, यह तेरे लिये शोभा नहीं देता। अत्याचारियों का मुकाबला किये बिना, उनके द्वारा मर जाना, स्वर्ग का रास्ता न होकर, नरक का रास्ता है, स्वर्ग तो वीरता से मुकाबला करने वाले वीरों के लिये है।

यदृच्छया चोपमन्नं स्वर्गद्वारम् पावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्।।

भगवान् कहते हैं कि-

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग्यं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।

ऐ अर्जुन ! अन्याय के विरुद्ध इन अत्याचारियों से युद्ध करते हुए तू यदि मारा जायेगा, तो स्वर्ग को प्राप्त करेगा अथवा विजयी होकर इस पृथ्वी का भोग करने के उपरान्त स्वर्ग को प्राप्त होगा।

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि।।

किन्तु यदि तू इस धर्मयुक्त युद्ध को नहीं करेगा तो अपने धर्म और यश को खोकर पाप को प्राप्त होगा।

तस्मात् त्वं उत्तिष्ठ, यशो लभस्व जित्वा शत्रून् भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।

इसलिये तू उठ ! शत्रुओं का विनाश कर, यश को प्राप्त कर धन-धान्य से पूर्ण राज्य का भोग कर।

लेकिन दुःख है कि हिन्दुओं ने श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण के इन आदेशों पर ध्यान नहीं दिया, नहीं तो इस देश का इतिहास कुछ और होता। कुरआन काफिरों का कत्ल करने का आदेश देती है। जबकि गीता निर्दोषों की रक्षा के लिये, अत्याचारियों और अन्यायियों को समाप्त करने के लिये, उनसे मुकाबला करने का आदेश देती है। लेकिन आज के समय में हम यह मुकाबला कैसे करें ? इसके लिये हमें बन्दूक उठाने की जरूरत नहीं है। लोकतंत्र का हथियार वोट है। हम सभी शान्तिप्रिय भारतीयों को एक होकर खूब उत्साह से इसी वोट रूपी हथियार का प्रयोग हिंसावादियों व उनके समर्थक नेताओं और जातिवादियों के विरुद्ध एक जुट होकर करना है। आलस्य को छोड़कर, हर काम को छोड़कर अपने वोट को जरूर डालना है। जिससे ऐसे लोग चुनाव में हार कर सत्ता की ताकत से दूर रहें और वे लोग चुनाव जीतें, जो बिना किसी भेदभाव के सब पर बराबर न्याय करते हुए, देश में शान्ति स्थापित कर सकें। देश को ताकतवर और समृद्धिशाली बना सकें। लेकिन ऐसे लोग कौन हो सकते हैं ? इसका निर्णय बहुत सूझ-बूझ से, नाप तौल कर सामूहिक रूप से लेना होगा।

धर्म की परिभाषा है कि जो धारण करने योग्य हो, वह धर्म है। इस प्रकार

अगर किसी जगह अकाल पड़ा हो और वहाँ का कोई धनी व्यक्ति लाखों रूपये की लागत से मन्दिर बनवाना शुरू करे, तो उसका वह मन्दिर बनवाना उस समय धारण करने योग्य नहीं है अर्थात् धर्म नहीं है। इसी प्रकार शत्रु का हमला होने वाला हो, तब उससे मुकाबला करने की तैयारी करने या अपनी रक्षा की तैयारी करने के स्थान पर यदि कोई बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ शुरू कर दे, तो वह धारण करने योग्य कर्म नहीं कर रहा अर्थात् धर्म नहीं कर रहा।

यदि आपके घर में आग लग जाये, तो आप भोजन या पूजा पाठ छोड़ कर पहले अपने को बचाने के लिये आग बुझायेंगे। वैसे ही आज हिन्दू धर्म व समाज पर खतरा आ गया है। अतः अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये पहले इस खतरे से निपटना है। पूजा पाठ मन्दिर व धर्मशाला बनाना जैसे कार्य बाद में करना चाहिये।

याद करो कि इतिहास में हम सोमनाथ जैसे बड़े-बड़े भव्य मन्दिर बनवाकर उनमें सोना चाँदी भरते रहे और मुसलमान आकर उन्हें तोड़ कर सब लूट ले जाते रहे। सोमनाथ के मन्दिर में इतना धन था कि उस समय के किसी राजा के पास इतना धन नहीं था। महमूद गजनवी यह सब लूट कर मन्दिर तोड़कर चलता बना। इसी धन से व मन्दिर में लगे हजारों गाँवों की नियमित आय से उत्तम अरबी नस्ल के घोड़ों से युक्त एक विशाल सेना तैयार हो सकती थी। जो मन्दिर की ही नहीं देश, धर्म और हिन्दू महिलाओं की भी रक्षा करती। लेकिन यह धन महमूद को लूटने के लिये इकट्ठा कर रखा गया। उसने इस धन को तो लूटा ही साथ ही इस लूट ने दूसरे मन्दिरों और हिन्दू राज्यों की महिलाओं को भी लुटवाया। क्योंकि लूट के इस धन से महमूद अपने सैनिकों को मालामाल कर देता था, जिससे वह दुगने उत्साह से अगले साल पुनः भारत में लूटमार करने आ धमकते। अतः मन्दिर वहाँ बनाओ जहाँ नहीं हैं, लेकिन मन्दिर बनवाकर यह मत सोंचो कि तुम स्वर्ग चले जाओगे ? स्वर्ग मिलेगा गरीब, बीमार, भूखे की सहायता करने से और अपने धर्म की रक्षा के लिये सहयोग करने से।

निर्दोष लोगों के प्राणों की रक्षा करने से बड़ा धर्म व पुण्य का काम कोई नहीं है। उन स्वार्थी हिन्दुओं को धिक्कार है जो अपने धर्म और समाज की रक्षा के लिये कुछ नहीं करते। गीता के अनुसार ऐसे लोग नरक में जाने वाले हैं। आम ईसाई और मुसलमानो के धनिक वर्ग अपने धर्म और समाज की रक्षा तथा उसे दान देने का कार्य पहले करते हैं। इसी कारण उनके पास हजारों करोड़ रुपये का फंड इकट्ठा है। याद रखो और सदैव याद रखो कि उन लोगों को ईश्वर भी नहीं बचाता, जो स्वयं अपने को बचाने का पूरा प्रयास नहीं करते। हिन्दुओं के साथ यही होता रहा, इतिहास को देखो।

अमेरिका तथा विश्व के सभी शक्तिशाली देश एक ही विश्व प्रसिद्ध सिद्धान्त पर चल रहे हैं कि ''निरन्तर सावधानी ही आजादी की कीमत है।'' दुर्भाग्य से हिन्दू हमेशा इस ओर लापरवाह रहे। पर यदि अब उन्होंने लापरवाही की, तो उनका

अस्तित्व हमेशा के लिये समाप्त हो जायेगा। यह मत सोंचों कि जैसे पहले बचते रहे, अब भी बच जायेंगे। तब के खतरे से अब का खतरा ज्यादा बड़ा और योजना बनाकर आने वाला है।

इसलिये ऐ हिन्दुओं अगर अपना जीवन, अपना धन, अपना धर्म और अपनी नारियों को बचाना है, अपनी सन्तानों का भविष्य सुरक्षित रखना है तो आज और अभी ईश्वर की सौगन्ध खाकर प्रतिज्ञा करो कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, कच्छ से लेकर आसाम तक हम एक हैं। न हम ब्राह्मण हैं, न क्षत्रिय हैं, न वैश्य हैं, न शूद्र हैं, न हम ऊँच हैं, न नींच हैं, न सवर्ण हैं, न दलित हैं, अब हम केवल हिन्दू हैं। आऽऽवाऽऽज दो,हम एक हैं। हम एक हैं। हम एक हैं। इस तरह एक विशाल हिन्दू वोट बैंक बनावें। आज का सबसे बड़ा पुण्य का कार्य यही है। यह आत्मरक्षा का धर्म है जो सर्वोपरि है। इसी उद्देश्य के लिये निकाल दो हिन्दू समाज से शूद्र या दलित जैसे शब्द, भूल जाओ अव्यवहारिक अहिंसा को, मिटा दो अतिसहिष्णुता रूपी नपुंसकता को और आओ हमारे साथ, 'भारत बचाओ मंच' के साथ, हमें आवश्यकता है आपकी। और याद रखो-

यह गाल पिटे वह गाल बढ़ाओ, यह तो आर्यों की रीति नहीं
अन्यायी से प्रेम अहिंसा, यह तो गीता की नीति नहीं
हे राम बचाओ जो कहता, वह कायर है, खुद अपना हत्यारा है
जो करे वीरता अति साहस, वही राम का प्यारा है
अब अगर गजनवी पैदा हो, या गोरी बनने का सपना हो
निज देश धर्म पर हमला हो, या हिन्दू नारी पर खतरा हो
तो इस देश का हर बच्चा अर्जुन हो, अब अगर गजनवी पैदा हो।

हिन्दुओ ! उस खतरे से डरो, जिससे सब कुछ चला जायेगा

मेरे द्वारा स्थापित किये गये संगठन 'भारत बचाओ मंच', का काम तेजी से पूरे देश में फैलाना है। अगर यह काम जल्दी-से-जल्दी पूरा नहीं कर पाये, तो इस देश के हिन्दुओं को बचाने का काम बहुत ही कठिन हो जायेगा। धन न होने के कारण इतने महत्वपूर्ण कार्य को हम आगे नहीं बढ़ा पा रहे हैं। लेकिन जिस खतरे से हिन्दुओं का सबकुछ चला जाने वाला है, उससे बचने के लिये वह कुछ करना ही नहीं चाहते। आखिर कैसे बचेंगे हिन्दू, क्या उसी चमत्कार से? जिसकी प्रतीक्षा में वह सैकड़ों साल से पिटते चले आये हैं।

अधिकतर हिन्दू यह सोचते हैं कि गीता के अनुसार हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये भगवान अवतार लेंगे। पर कलियुग में अवतार नहीं होते। अपनी तथा अपनी सन्तानों के भविष्य और अपने धर्म की रक्षा स्वयं हिन्दुओं को ही करनी होगी। भगवान उसी की रक्षा करते हैं, जो खुद अपनी रक्षा का पूरा प्रयास करते हैं।

माननीय धर्माचार्यों को चाहिये कि अपने उपदेशों में धार्मिक कर्मकाण्ड के साथ ही धर्म रक्षा पर विशेष जोर दें। माननीय धर्माचार्य ही अब इस देश को बचा

सकते हैं। हिन्दू व्यापारी और धनवान लोग आतंकवाद के विरुद्ध जनता को जागृत करने वाले लोगों को बुला बुला कर आर्थिक सहायता करें। यह कार्य प्रत्येक समर्थ हिन्दू का है। समय बहुत तेजी से बीत रहा है कुछ दिनों में बाजी आपके हाथ से निकल जायेगी।

इस कार्य को सुनियोजित तथा संगठित तरीके से चलाने के लिये उत्साही, वीर हिन्दू नौजवान तथा विद्यार्थी अपने-अपने क्षेत्रों में भारत बचाओ मंच का गठन कर रजिस्टर्ड पत्र से उसकी सूचना नीचे लिखे पते पर भेजें, अपना व कार्यसमिति के सदस्यों का पूरा पता भी लिखें।

विदेशों में बसे हिन्दुओं से मेरी अपील !

प्रिय प्रवासी हिन्दू भाइयो,

आपके अपने देश भारत में आने वाले जिस संकट की बात मैंने लिखी है उस पर आप सब गम्भीरता से विचार करो। यह न समझो कि हम भारत में नहीं रहते, इसलिये हमें इससे कोई मतलब नहीं है। क्या पता आज नहीं कल आपको वापस अपनी इस मिट्टी से जुड़ना पड़े ? इसलिये अपनी मातृभूमि के लिये भी सोचना तुम्हारा कर्त्तव्य है। इस देश को टूटने, बिखरने और हिंसा से बचा कर शान्ति स्थापित करने के लिये हम सब मिल कर सोचें और करें। ऐसा करने में हम तभी सफल हो सकते हैं, जब हम सभी हिन्दू जो जहाँ भी हैं एक रहें, सतर्क रहें और परस्पर हर प्रकार के सहयोग के लिये सहर्ष तैयार रहें। अपने धर्म और समाज की रक्षा के लिये निरंतर सहयोग करें। गीता के अनुसार यह बहुत पुण्य का कार्य है। विदेशों में रहकर यही सबसे बड़ा धार्मिक कर्त्तव्य है, धर्म सेवा है। मेरी इच्छा है कि विश्व के हिन्दुओं को वह शक्तिशाली, निर्भीक और समृद्धिशाली भारत देखने को मिले, जिस पर वह गर्व कर सकें, जो उन्हें संसार में सम्मान दिला सके।

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

प्रयागराज (इलाहाबाद)

गुरुवार

९ नवम्बर, सन् २०००

उत्प्रेरक

स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य

संस्थापक

भारत बचाओ मंच

स्वामी लक्ष्मीशंकराचार्य, ३९०/२९८, चौखण्डी कीटगंज, इलाहाबाद फोन नं० 0532-557142 द्वारा प्रकाशित और अशोक प्रिंटिग केन्द्र, इलाहाबाद में मुद्रित।

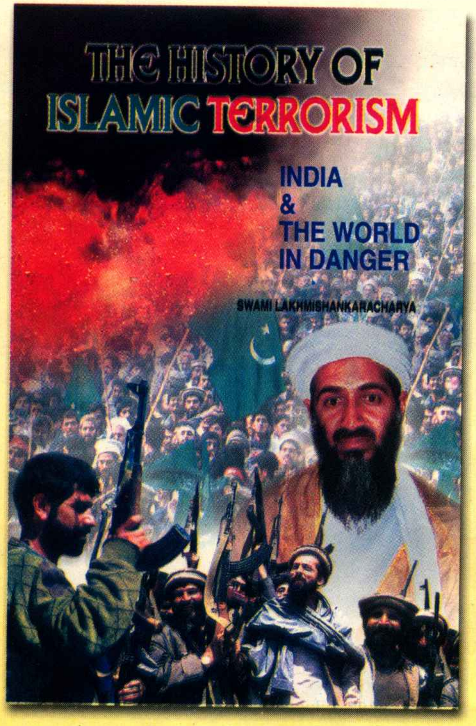

ALSO AVAILABLE IN ENGLISH